अमरत्व की तलाश

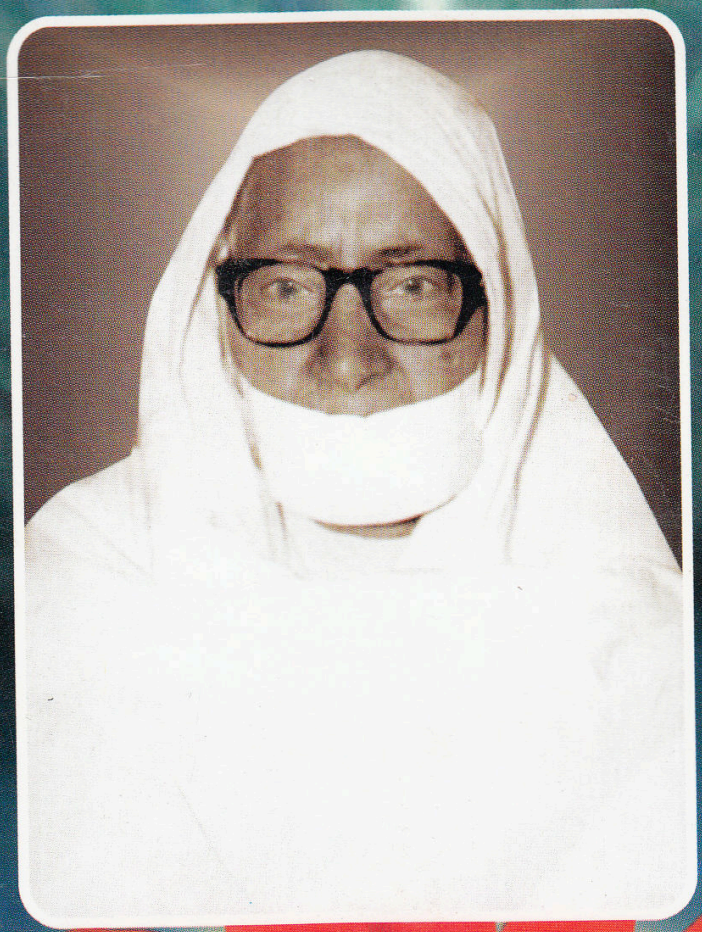

साध्वी संघप्रभा

अमरत्व की तलाश

(स्व. साध्वी सुजाणांजी की प्रेरक जीवन गाथा)

साध्वी संघप्रभा

जैन विश्व भारती प्रकाशन

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं-३४१ ३०६ (राज.)

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

सौजन्य : बिरधीचंद संजयकुमार दुगड़
(सरदारशहर-हैदराबाद)

प्रथम संस्करण : २००६

मूल्य : ३०/- (तीस रुपया मात्र)

मुद्रक : श्री वर्द्धमान प्रेस, नवीन शहादरा, नई दिल्ली

आशीर्वचन

साध्वी सुजाणांजी संघनिष्ठ साध्वी थी। वे मोमासर के नाहटा एवं राजलदेसर के बैद परिवार से संबद्ध थी। उन्होंने अपनी पुत्री साध्वी आनंदकुमारीजी के साथ पूज्य कालूगणी से दीक्षा ग्रहण की। दीर्घकाल तक संयम पर्याय का पालन किया। अनेक क्षेत्रों में यात्राएं की। अंतिम समय में अनशनपूर्वक संयम-यात्रा संपन्न की। साध्वी संघप्रभा ने उनके जीवन-वृत्त का शब्दांकन किया है। इससे पाठक की प्रेरणा मिलेगी, यह विश्वास किया जा सकता है।

११ जनवरी २००९
बीदासर

आचार्य महाप्रज्ञ

सादर

समर्पण

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी

एवं

श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी

के

पावन

चरणों

में

विनयावनत

साध्वी संघप्रभा

आत्मकथ्य

जन्म और मृत्यु इन दो तटों के मध्य सृष्टि का प्रवाह निरन्तर गतिशील है। संसार का प्रत्येक प्राणी इस महाप्रवाह में आता है और चला जाता है। आवागमन के इस अविच्छिन्न क्रम को न रोका जा सकता है, न तोड़ा जा सकता है। सृष्टि के इस शाश्वत नियम को जानते हुए भी मनुष्य जन्म के समय उत्सव और मृत्यु के समय शोक मनाता है क्योंकि मनुष्य की जिजीविषा इतनी प्रबल है कि वह मौत का नाम भी सुनना नहीं चाहता। विश्व विजेता सिकन्दर जैसा महान् सम्राट भी अपनी मौत की कल्पना मात्र से सिहर उठा। उसने अपने सलाहकारों के समक्ष अमर होने की इच्छा प्रगट की। सभी ने एक-स्वर में कहाह्न'महाराज! जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु निश्चित है। कोई भी प्राणी आज तक न अमर हुआ है न होगा।' यह सुन सिकन्दर उदास हो गया। अनगिन लोगों को मृत्यु की गोद में सुलाने वाले सिकन्दर को जीवन में की गई सारी भाग दौड़ निरर्थक प्रतीत होने लगी फिर भी अमरता की चाह ने उसे चैन से नहीं बैठने दिया।

अमरत्व की तलाश में घूमते सिकन्दर ने एक दिन एक भारतीय संन्यासी को देखा। उसने संन्यासी से अमर होने का नुस्खा जानना चाहा। संन्यासी ने मुस्कुराते हुए कहाह्नयह तो मनुष्य के अपने वश की बात है। सिकन्दर ने गर्वीले लहजे में कहाह्न'ऐसा कोई काम नहीं जो मैं न कर सकूं। आप जो कहें वही करने को मैं तैयार हूं।' संन्यासी ने उसे अमरताल की जानकारी देते हुए कहाह्नवहां का पानी पीकर तूं अमर हो सकता है।

निर्दिष्ट स्थल पर पहुंचकर अमरताल का पानी पीने के लिए सिकन्दर ने ज्योंही अपने दोनों हाथ पानी में डुबोए कि एक भयंकर आवाज आई। पानी न पीने का संकेत सुन वह स्तब्ध रह गया। उसके हाथ रुक गए। वह चारों तरफ चौकन्ना सा देखने लगा। उसे कराहते हुए कई अति वृद्ध व्यक्ति, क्रन्दन करते

हुए अनेक प्रकार के पशु-पक्षी तथा पानी से दूर धीरे-धीरे खिसकते हुए विशालकाय मगरमच्छ नजर आए। इनमें से एक ने अपनी दयनीय दशा का बयान करते हुए कहाह्न'सिकन्दर! इस अमरताल का पानी पीकर क्या तूं हमारे जैसी अशक्तता की स्थिति में जीना चाहता है? हमने भी इसका पानी पीया है किन्तु अब हम न कुछ कर सकते हैं और न मर सकते हैं।' सिकन्दर वहां की हालत देख हतप्रभ रह गया। वह क्षण भर रुकने की भूल किए बिना उल्टे पांवों दौड़ा। राजमहल के बाहर उसे फिर वही संन्यासी दिखाई दिया।

सिकन्दर ने अमरताल की घटना सुनाते हुए कहाह्न'महात्मन्! मैं शारीरिक अशक्तता की स्थिति में जीता हुआ अमर होना नहीं चाहता। मैं जवान रहता हुआ अमर होना चाहता हूं।' सिकन्दर की निराश आंखों में आशा की रोशनी भरते हुए संन्यासी ने अमर फल खाने की सलाह दी। एक पल की देर किए बिना सिकन्दर भयंकर रास्तों को पारकर उस स्थान पर पहुंचा, जहां दिव्य फल यत्र-तत्र दिखाई दे रहे थे। तभी उसके कानों में कुछ कोलाहल की आवाज आई। उसने ज्योंही पीछे मुड़कर देखा, वह अवाक् रह गया। अनेक जवान आपस में लड़ रहे थे। मारकाट का यह भयानक दृश्य देख वह कांप उठा। कुछ देर बाद शांति होने पर एक जवान ने उसे बतायाह्न'हम सभी यहां का अमर फल खाए हुए हैं। हमारी सारी इच्छाएं पूरी हो चुकी हैं। जीने की कोई तमन्ना शेष नहीं पर अब हम मर भी नहीं सकते। लड़ने के सिवाय दिन गुजारने का हमारे पास कोई चारा नहीं है।' यह सुन सिकन्दर का दिमाग चकरा गया। वह पुनः उसी भारतीय संन्यासी के पहुंचा, अमर फल खाने वाले जवानों की दुर्दशा का चित्रण करते हुए उसने कहाह्नयोगि-प्रवर! मैं ऐसी अमरता नहीं चाहता। संन्यासी ने मुस्कुराते हुए कहाह्न'सिकन्दर! यह सारा नाटक तो तुम्हें समझाने के लिए किया गया था। वस्तुतः इस ब्रह्मांड में जो कुछ दिखाई दे रहा है वह सब कुछ नाशवान् है। अमर वही है जिसने अच्छे कार्य किए हैं। जब तक धरती और आकाश रहेंगे तब तक महापुरुषों के सत्कार्य ही उन्हें अमर रखेंगे। तुम भी अपनी कर्मजा शक्ति को श्रेष्ठ कार्यों में नियोजित करो, यही अमरता का वास्तविक सोपान है।' यह सुन सिकन्दर महान् भारतीय संन्यासी के चरणों में गिर गया। उसे अजर अमर होने का नुस्खा मिल गया।

इस घटना के संदर्भ में मनुष्य की मनोवृत्ति का विश्लेषण किया जाए तो ऐसा लगता है अमर होने की चाह केवल एक सिकन्दर की नहीं बल्कि प्रत्येक

व्यक्ति की है किन्तु शान-शौकत और ऐश्वर्य की चकाचौंध में मनुष्य इस बात को भूल जाता है कि मुझे भी एक दिन मरना है। जो व्यक्ति मौत को प्रतिपल याद रखता है वह निश्चित ही अपने सत्कार्यों द्वारा मृत्यु को जीत लेता है। सच ही कहा है किसी कवि नेह्न

यूं तो सभी मरण के राही हैं, इक रोज मर जाते हैं।
मगर धन्य हैं वे, जो मरकर भी नाम अमर कर जाते हैं।।

ऐसे ही धन्य व्यक्तित्वों की शृंखला में एक नाम है साध्वी सुजाणांजी का। सहिष्णुता, उदारता, मिलनसारिता, कार्यकुशलता आदि उनके व्यक्तित्व के विशिष्ट गुण थे।

जीवन एक सागर है। इसमें अनेक तूफान उठते हैं और समय के साथ शांत हो जाते हैं। महान् वह होता है जो तूफानों की छाती को चीरकर आगे बढ़ना जानता है। साध्वी सुजाणांजी के जीवन में भी अनेक तूफान आए। उन्होंने हर तूफान को हिम्मत से परास्त किया। इन तूफानों में सबसे भयंकर तूफान था यौवन में पति-वियोग। आपने पति विरह की दर्दनाक घटना से व्यथित होने की बजाय नश्वर संसार से विरक्त होने की प्रेरणा ली। जन्म मृत्यु के दारुण पाश से मुक्त होना आपका एकमात्र लक्ष्य बन गया। इस महान् लक्ष्य की सम्पूर्ति हेतु आपने अपनी ११ वर्षीया पुत्री इन्द्रा (साध्वी आनन्दकुमारीजी) के साथ ३० वर्ष की युवावय में तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य महामना कालूगणी के कर कमलों से सुजानगढ़ में दीक्षा ग्रहण की। दो वर्ष तक गुरुकुलवास, २६ वर्ष तक साध्वी सजनांजी (बीकानेर) के साथ तथा २४ वर्ष तक साध्वी आनन्दकुमारीजी के साथ विचरण किया। ५२ वर्ष तक प्रलंब संयम पर्याय का पालन कर ८२ वर्ष की सुदीर्घ आयु में आपने इस पार्थिव जगत् से सुखद विदा ली।

साध्वी सुजाणांजी मेरी संसारपक्षीया प्रपितामही (मेरे संसारपक्षीय दादाजी श्री सोहनलालजी की मामी) तथा साध्वी आनन्दकुमारीजी बुआ दादीसा महाराज थी इसलिए मेरी यह सहज आकांक्षा एवं दायित्व था कि मैं उनके बारे में कुछ लिखूं। साथ ही मोमासर निवासी केवलचंदजी नाहटा तथा गंगापुर निवासी देवेन्द्रजी हिरण का विशेष अनुरोध भी लिखने में हेतुभूत बना। यद्यपि जीवन वृत्त लिखने का न मुझे कोई अनुभव था और न साहित्यिक कौशल। फिर भी साध्वी आनन्दकुमारीजी से जितना कुछ सुना उसी आधार पर मैंने लिखना शुरू किया और लिखित संस्मरणों का एक संकलन तैयार हो गया। वि. सं. २०५१

नाथद्वारा प्रवास में मैंने संकलित सामग्री का पुनरावलोकन कर संशोध्य स्थलों को यथावश्यक परिवर्तित, परिवर्धित एवं परिष्कृत कर व्यवस्थित रूप दिया और सहज ही एक कृति ने आकार ले लिया।

प्रस्तुत कृति में साध्वी सुजाणांजी के जीवन संबंधी विविध पहलुओं को उजागर किया गया है। साध्वी सुजाणांजी एवं साध्वी आनन्दकुमारीजी आपस में मां-पुत्री थी। दीर्घकालिक सहप्रवास के कारण कई घटनाएं दोनों के जीवन से संबद्ध हैं अतः कई स्थलों पर यह विभाजन करना भी कठिन हो जाता है कि किस घटना को किसके जीवन-वृत्त में उद्धृत किया जाए फिर भी मैंने चरित्र नायक की मुख्य भूमिका के आधार पर साध्वी-द्वय के जीवन-वृत्त को दो कृतियों 'आनन्द की रश्मियां', 'अमरत्व की तलाश' में प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयत्न किया है।

परमाराध्य गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी एवं श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का मंगल वरद हस्त, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का सारस्वत अनुग्रह मेरी विकास यात्रा का संबल है। प्रस्तुत कृति के प्रणयन में स्व. साध्वी आनन्दकुमारीजी की प्रेरणा, स्व. साध्वी रायकुमारीजी की मंगल सन्निधि, साध्वी कानकुमारीजी व साध्वी मदनश्रीजी का स्नेहाविल सहयोग योगभूत बना है। समय समय पर साध्वी जिनप्रभाजी एवं साध्वी निर्वाणश्रीजी द्वारा प्रदत्त दिशादर्शन एवं साध्वी उज्ज्वलरेखाजी द्वारा संग्रहीत स्फुट संकलन ने मेरे लेखन मार्ग को सुगम किया है। अस्तु, जिन जिनका इस कार्य में ज्ञात-अज्ञात योग रहा है उन सबके प्रति आभार अर्पित कर मैं अपने कर्तव्य को सीमाबद्ध करना नहीं चाहती। अपनों द्वारा प्राप्त यह कृपा-भाव मेरी सृजन यात्रा को सदैव गतिशीलता प्रदान करता रहे, यही मंगलकामना है।

११ जनवरी २००६ **साध्वी संघप्रभा**
पड़िहारा

अनुक्रम

१.	कसौटीमय गृही जीवन	१
२.	गृहस्थ जीवन के कुछ उल्लेखनीय प्रसंग	१५
३.	अनुराग से विराग की ओर	२२
४.	गुरु-सन्निधि में तीन चातुर्मास	२७
५.	बर्हिविहार और पदयात्रा	२८
६.	साधनामय जीवन के विविध आयाम	२९
७.	स्मृतियों के दर्पण में	४५
८.	अरुणिम प्रभात : अरुणिम संध्या	४९
९.	मंगल संदेश	५५
१०.	विशेष ज्ञातव्य बिन्दु	५९
११.	चातुर्मास-दर्पण	६२
१२.	संक्षिप्त जीवन परिचय	६५

A_aËd H$s Vbme

(स्व. साध्वी सुजाणांजी की प्रेरक जीवन गाथा)

1. H$gmQr_` Jhr OrdZ

gá_mMm` SmbJUr H$ emgZ H$mb H$m àË`j XIZ dmbr, MVW gmÜdrà_Im ORmOr g à{V~mY àmá H$a AîQ_mMm` H$mbJUr H$ daXhñV g ½`mah dfu`m nÌr gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$ gmW Xr{jV hmZ dmbr, VamnW Y_gK H$s H$_e… nmMdr, NRr, gmVdt Ama AmRdt gmÜdrà_Im H$mZH$daOr, gmÜdrà_Im P_H$Or, gmÜdrà_Im bmSmOr VWm gmÜdrà_Im H$ZH$à^mOr H$ nWXeZ _ gVV AmË_gmYZm _ {ZaV ahZ dmbr, amOñWmZ H$s nÊ`Yam na AdV[aV hmH$a, ~mdZ dfm VH$ XrK g`_ n`m` H$m nmbZ H$a ~`mgr df H$s XrKm` _ AmMm`Ir Vbgr H$s {VbH$^{_ "JJmna' (_dmS) H$s E{Vhm{gH$ YaVr na CÝht H$ Jmadembr emgZ-H$mb _ AîQ {Xdgr` Am_aU AZeZ ndH$ XhË`mJ H$aZ dmbr ghO gm{YH$m gmÜdrIr gOmUmOr H$m OrdZ AnZ Amn _ EH$ àaH$ AÜ`m` h¡&

OÝ_

"amOñWmZ' ^maV df H$m EH$ Y_nam`U, AÜ`mË_àYmZ, em` Ama ~{bXmZ H$s A_a JmWmAm g AmH$sU VWm ham^am àXe h¡& Bgr àXe _ H$bm d^d Ama CÞV gñH${V g n[anU "Mê$' OZnX H$ "amObXga' Jmd _ gånÞ ~X n[adma _, gR> àVmn_bOr ~X H$ JhmJU _ _mVm _mbr Xdr H$s H${j g {dH$_ gdV 1960 _mK H$îUm AîQ_r H$m Vrgar gÝVmZ H$ ê$n _ gmÜdr gOmUmOr H$m OÝ_ hAm¡&

~MnZ

~X n[adma Cg `J H$m à^mdembr, AmÜ`mpË_H$ Ama Z{VH$ gñH$mam g n[anU VWm VamnW H$ à{V IÕmerb n[adma Wm Bg{bE gmÜdr gOmUmOr H$m Ym{_H$ gñH$ma {damgV _ àmá W¡& AmnH$ OÝ_ g nd EH$ ^mB VWm EH$ ~hZ H$m OÝ_ hm MH$m Wm, {H$ÝV H$mb H$s brbm ~Sr {d{MÌ h¡&

AmnH$ Á`îR> ~Y Ed ^{JZr H$m Aënm` _ hr XhmdgmZ hm J`mï& Cg g_` Amn AnZr _mVm H$s BH$bmVr gÝVmZ Wr, AV... g^r nm[admaH$OZm H$m Amn na ~hV ñZh Wmï& _mVm {nVm H$ __Vm_` gm` _ AmnH$m nmbZ-nmfU hAmï& ~MnZ _ ^r Amn_ ~mb gb^ MnbVmE Zht Wrï& ~mV-~mV _ ê$RZm, hR> nH$S>Zm, AH$maU CÚ_ H$aZm Am{X H$Ë`m g Amn H$mgm Xa Wrï& AmnH$m OrdZ ghO gmpËdH$ Ama Cƒ {dMma g `º$ Wmï&

g_` H$s bham H$m nma H$aVm hAm g I X eed H$mb H$m_` H$s Ama J{V_mZ hm CRmï& AdñWm n[adVZ H$ gmW-gmW emar[aH$ gf_m ^r d{ÕJV hmZ bJrï& gmMZ g_PZ Ama H$N> OmZZ H$s e{º$ {dH${gV hBï& _Z _ nT>Z-{b I Z H$s bbH$ OJr {H$ÝV dh nar Zht hm gH$s Š`m{H$ dh `J ê$ {T> ~hb Wmï& {H$gr H$Ý`m H$m nTmZm Cn`º$ Zht _mZm OmVm Wmï& Cg g_` H$Ý`mAm H$m {gbmB, ~ZmB, _hXr, gÝXa H$grXmH$mar, {gVma d JmQ> H$m ~marH$ H$m_, nmH$H$bm Am{X Jh {dkmZ H$s {d{dY {dYmAm H$m à{e j U Ka _ hr {X`m OmVm Wmï& `h g~ Bg{b` {g I m`m OmVm Wm {H$ H$Ý`m ^{dî` _ EH$ H$eb J{hUr ~Z gHo$ï& ~m{bH$m gOmUm Z ^r BZ g~H$m à{e j U {b`mï&

nm{UJhU

Vah-MmXh df H$s Aënm` _ AmnH$ OrdZ H$m n[aU`-gÌ _ ~mY {X`m J`mï& _m_mga (Mê$ {Obm) {Zdmgr NmJ_bOr ZmhQm H$ VVr` nÌ I r I ~MXOr ZmhQm H$ gmW ~m{bH$m gOmUm H$m nm{UJhU hm J`mï& ~MnZ H$s ñdVÌVm A~ naVÌVm _ ~Xb J`rï& ~mb {ddmh àWm H$ gñH$ma BVZ Jha W {H$ H$Ý`m H$m ~mah Vah df g D$na hm OmZm g_mO _ H$Vhb H$m {df` ~Z OmVm Wmï& gabVm, {dZ_Vm, H$m`H$ebVm Am{X {defVmAm H$ Ûma AmnZ ~hV erK hr ggamb H$ g_ñV gXñ`m H$m AnZm ~Zm {b`mï& AnZr gmå` àH$fV, {_bZgma ì`dhma H$ H$maU ZddY gOmUm Z ZmhQm n[adma _ AmXe nÌdY H$ ê$n _ AnZr nhMmZ ~ZmBï&

CZ {XZm ZmhQm n[adma g{d»`mV Ym{_H$ Ama g_Õ n[adma Wmï& VamnW B{Vhmg H$ dÎmm _{Z ZdaËZ_bOr Bgr ZmhQm n[adma g Xr{j V hEï& CÝhmZ emgZ-g_Ð H$ nMrg ^mJm _ VamnW H$ gmY-gmpÜd`m H$ OrdZ-dÎm H$m àñVV {H$`m hï& gmÜdr amOmOr, gmÜdr VrOmOr, gmÜdr {bN>_mOr Am{X ^r Bgr n{adma g g~Õ Wrï& AmÜ`mË_H$ Ama gm_m{OH$ H$m`m _ `h

n[adna gXd AJUr ahm h¡& AnO ^r `h n[adna VamnW Y_gK H$m AnZr Cëb I Zr` gdm`| g_{nV H$a ahm h¡&

\$bm _m H$m dMZ

gOnUnOr H$ ídga Ir NmJ_bOr ZmhQm AnY{ZH$ {dMmam| H$ ì`{º$ W¡& d ghgm {H$gr ^r ~mV na {dídmg Zht H$aV W¡& d ha VÏ` H$m OrdZ H$s à`mJembm _| AnZm H$a X I Zm MmhV W¡& d naZr naånamAm| H$m AY{dídmg H$hV W¡& H$hm OmVm h Cg g_` ZmhQm n[adma _| VbKa na _H$mZ ~ZmZ H$s naånam Zht Wr¡& g^d h Bg naånam H$ nrN X{dH$ H$maU ahm hm, na NmJ_bOr H$m `h ~mV AQnQr bJr¡& d Bg naånam H$m ~XbZm MmhV W Bg{b` CYhmZ Egm _H$mZ ~ZdmZm àma^ H$a {X`m {OgH$ ZrM ^{_Jh hm VWm D$na H$_a¡& NmJ_bOr H$s _m Z ~hV ~ma g_Pm`m na d इसे अंधविश्वास कहकर टालते रहे। उन्होंने अपनी मां से दृढ़ स्वर में कहा—'मेरा H$mB H$N ^r {~JmS Zht gH$Vm¡& _ Vm `h _H$mZ ~ZmH$a ahJm¡&' nÌ H$ Bg पूर्वाग्रह को देख एक दिन मां ने स्पष्ट शब्दों में कहा—'छोगमल! अपने कुल की Bg ar{V H$m V ^J H$a ahm h¡& X I bZm, BgH$m Xîn[aUm_ Š`m hmJm? `{X EH$ ^r amV V Bg _H$mZ _| na ngma H$a gm Om` Vm _ Var _m Zht¡' _m H$ Bg H$Rma eãXm| H$m gZH$a ^r d AnZ {ZU` na AQb ah¡& H$B ~ma {ZU` na AQb ahZm AÀNm hmVm h Vm H$B ~ma {ZU` H$m ~XbZm ^r I`ñH$a hmVm h¡& "dh H$m` Zht H$aZm Mm{h` {Og_| JéOZm| H$s ñdrH$¥{V `m _Jb आशीर्वाद प्राप्त नहीं हो'—यह नीति सूत्र अनुभव की स्याही से लिखा गया है। यह संयोग कहें या मातृ हृदय से निकले वचनों का प्रभाव—आखिर मां की बात gË` hmH$a ahr¡& _H$mZ ~ZZ g nd hr d Bg ggma g {dXm hm JE¡&

NmJ_bOr Z Xm {ddmh {H$` W¡& CZH$s àW_ nËZr g CËnÞ Xm पुत्र—नथमलजी और हरखचंदजी का भी पिता की मृत्यु के पश्चात् बहुत शीघ्र Xhmdgmz hm J`m¡& ZW_bOr Ama ha I MXOr H$s gVmZ| ^r Or{dV Zht ah gH$s¡& nhbr nËZr H$ {ZYZ H$ níMmV NmJ_bOr Z Xgam {ddmh {H$`m¡& दूसरी पत्नी से उनके दो सन्तानें हुई—खूबचंदजी और केसरबाई। खूबचंदजी के भी दो पुत्रियां हुईं, उनमें सिर्फ एक जीवित रही—इंद्रा (साध्वी आनंदकुमारीजी)। I~MXOr H$m ^r Vrg df H$s `dmdñWm _| {ZYZ hm J`m¡& Bg àH$ma NmJ_bOr H$ n[adma H$s nr{T>`m Cg _H$mZ H$m ~ZmZ H$ ~mX erK hr H$mb H$s JmX _| g_m JB¡& Cg _H$mZ _| ^r {H$gr H$m bå~ H$mb VH$ {Zdmg Zht

hm gH$m Ama dh _H$mZ ^r I~MXOr H$s {dÚ_mZVm _| hr ^`H$a ^Mmb _| {JaH$a IÊS>ha hm J`m& _m H$m dMZ Bg Vah \$bJm, BgH$s H$ënZm ñd`| NmJ_bOr H$m ^r Zht Wr& Bg KQ>Zm g ~mYnmR> {_bVm h {H$ _m Ama Jé H$ dMZ H$m H$^r A{VH$_U Zht H$aZm Mm{hE&

NmJ_bOr H$s gV{V naånam _| CZH$s nÌr H$ga~mB H$m n[adma वृद्धिंगत हुआ। केसरबाई के आठ सन्तानें थी—चार पुत्र सोहनलालजी, nZ_MXOr, MmX_bOr, _mhZbmbOr VWm Mma n{Ì`m BMaO (ñd. gmÜdr am`H$daOr) H$mZH$da (gmÜdr H$mZH$daOr), MÝÐmdb~mB Ama nmZH$da~mB& ñd. gmÜdr am`H$daOr Z dfm VH$ AJJÊ` H$ ê$n _| {dhma {H$`m, `Wme{º$ gK H$s à^mdZm H$s& dV_mZ _| gmÜdr HmZHdaOr gK-gdm _| gb¾Z h&

dMZ H$m Vra

Ir_mZ I~MXOr ñdm{^_mZr, ÑT>{ZíM`r Ed YZ H$ YZr ì`{º$ W& _mVm-{nVm H$ ñdJdmg H$ g_` CZH$s C_ 13-14 gmb H$s Wr& g^r nm[adm[aH$ OZ CZ na ~hV ñZh aIV W& A{V Cnjm Ed A{V ñZh ~hYm ~ƒ H$m CÀN>Ib ~Zm XV h& I~MXOr H$m H$em` ^r Bg d{Îm H$m {eH$ma hm J`m& d hR>rb Ed {ZaH$e hmV Mb J`& H$gJ{V _| nS>H$a gÅ d \$mQ>H$ H$m YYm H$aZ bJ& CZH$m Ü`mZ nT>mB _| H$_ VWm _Zm{dZmX, hgr-_OmH$ Am{X _| Á`mXm ahVm& OAm IbZ H$s AmXV ^r nîQ> ~Z JB& EH$ ~ma CZH$ MmMm Jbm~MXOr H$m {H$gr Z I~MXOr H$s {eH$m`V H$s& Bg ~mV H$m nVm bJV hr CÝh| ~hV Jñgm Am`m& CÝhmZ खूबचंदजी को तीव्र स्वर में टोकते हुए कहा—'खूबचंद! तूं हमारे परिवार में XmJ bJm ahm h& Våh| Š`m nVm ngm {H$VZr _píH$b g H$_m`m OmVm h& V| gmMVm hmJm {H$ _m-{nVmOr Vm ggma _| ah Zht& A~ _P H$hZdmbm H$mZ h? I~aXma! AJa Xgar ~ma `h {eH$m`V gZZ H$m {_br Vm _a Og H$mB ~am Zht hmJm& {\$a H$^r `h JëVr XmhamB Vm Bg Ka _| Våhmar H$mB OJh Zht h&' Egm H$hZ H$ gmW CÝhmZ ^VrO H$ Jmb na EH$ MmQ>m ^r O_m {X`m&

Bg SmQ> _| ~mbH$ H$ {hV gajU VWm CÁÁdb ^{dî` H$ {Z_mU H$s ^mdZm g{Þ{hV Wr na, H$mZ g_P ^mdZm H$s JhamB H$m? I~MXOr H$m MmMm H$m EH$ EH$ eãX eb H$s Vah M^ ahm Wm& gm{W`m| H$ ~rM MmMmOr

H$ Bg Cnmb^ g CZH$m ñdm{^_mZr `dm _mZg bÁOm Ama An_mZ g CÛ{bV hm CRm|&

I~MXOr H$m ÑT> {ZíM`

I~MXOr VËH$mb dhm g CR> Ama {H$gr H$m {~Zm H$N> H$h ~g ñQ>ÊS> H$s Ama Mb nS>|& O~ _| H$N> én` W|& CÝht g {Q>H$Q> {b`m Ama ~g _| ~R> J`|& OrdZ _| nhbr ~ma gZr Bg S>mQ> Z CZH$ AÝV…H$aU H$m hr Zht, H$Vì` H$s {Xem H$m ^r ~Xb {X`m|& d h_em H$ {b` gÅ> Ama OE g _º$ hm J`|& OE H$m NmS>Z H$ gmW hr CÝhmZ AnZr OÝ_^{_ H$m ^r NmS>Z H$m {ZíM` H$a {b`m|& ~g _| ~R>V hr CÝhmZ `h gH$ën H$a {b`m {H$ A~ H$^r _m_mga Zht AmD$Jm|& AnZ ~b~V na ngm H$_mD$Jm V~ hr {ddmh H$ê$Jm|& Bg gH$ën Z CZH$ VZ _Z _| Z`m Ome ^a {X`m|& YZmOZ H$ {bE d amOñWmZ g grY Ag_ nhM J`|& dhm OmV hr CÝhmZ H$m` H$s ImO H$s, {H$ÝV AWm©^md H$ H$maU H$mB {ZOr ì`mnma Zht H$a gH$|& H$N> _{hZm VH$ {H$gr nmQ> H$ ì`mnmar H$ `hm ZmH$ar H$s|& d ñdën g_` _| hr nmQ> H$ ì`mnma _| Xj hm J`|& H$eb ì`dhma H$ H$maU AnZ _m{bH$ H$ H$mnmnmÌ ~Z J`|& AZH$ gånÞ ì`{º$ CZH$ {_Ì ~Z J`|& BVZm g~ H$N> hmV hE ^r ZmH$a ~Z ahZm CÝh| A^rîQ> Zht Wm|& AVV… Cn`º$ Adga XI H$a AnZ Xm {_Ìm| H$s ghm`Vm g Ag_ H$ EH$ NmQ> g H$ñ~ "gmnQ>Jm_' _| EH$ nmQ> H$m गोला खरीद लिया। इस व्यापार में तीन व्यक्ति भागीदार थे—चूरू के श्री aVZbmbOr, aVZJT> H$ Ir O`MXbmbOr Ed Vrga ñd` I~MXOr|& nmañn[aH$ gh`mJ Ed I_ g H$N> _{hZm _| hr ì`mnma O_ J`m|& I~MXOr nmQ> H$ à{VpîR>V VWm àm_m{UH$ ì`mnmar H$ ê$n _| nhMmZ OmZ bJ|&

~hZ H$ Zm_ ^mB H$m nÌ

Xgar Ama I~MXOr H$ AH$ñ_mV Jm`~ hm OmZ g g^r A{^^mdH$ {MpÝVV hm JE|& CÝh| ImOZ H$ {b` AZH$ à`ËZ {H$` {H$ÝV g~ {Zî\$b hm J`|& Bg ~mV H$m nVm CZH$s ~hZ H$ga~mB H$m bJm|& H$ga~mB H$m {ddmh amObXga {Zdmgr H$mSm_bOr SmJm g hAm Wm|& H$mSm_bOr H$m ^r AnZ NmQ> gmb H$ à{V A{YH$ dmËgë` Wm|& I~MXOr H$ J_ hmZ H$s I~a g ~hZ-~hZmB XmZm| {MÝVmVa hm CR>|&

I~MXOr gXd AnZr ~Sr ~hZ H$m _mVVë` gå_mZ XV W|& d H$ga~mB H$s {H$gr ^r Amkm H$m CëbKZ Zht H$aV W|& H$ga~mB ^r Xm Mma {XZ

g AnZ ^mB H$ g_mMma _JdmVr ahVr Wr& ^mB H$ Bg Vah Mb OmZ g CZH$ X…I H$m H$mB nma Zht Wm& I~MXOr ^r Bg ~mV g ^br^m{V n[a{MV W Bg{bE CÝhmZ ~hZ H$m EH$ nÌ Ûmam `h gMZm à{fV H$a दी—'आप मेरी चिन्ता मत करना। मैं असम में आनन्दपूर्वक रह रहा हूं।' पत्र nT>V hr H$ga~mB H$m BVZm hf hAm {H$ Og gmjmV ^mB hr {_b J`m hm& H$ga~mB Z `h gMZm _m_mga ^r ^O Xr&

I~MXOr H$m ghr g_mMma nmH$a n[adm[aH$OZm Z {ZpíMÝVVm H$s gmg br& Jbm~MXOr VWm CZH$ nÌ H$_MXOr Z CÝh _m_mga ~bmZ H$ {b` AZH$ nÌ {X` {H$ÝV I~MXOr Z AmZ H$s ñdrH$ {V Zht Xr& Am{ Ia नाहटा परिवार के कुछ सदस्य राजलदेसर आये और केसरबाई से बोले—'केसर! bJVm h I~MX h_ma H$hZ g _m_mga Zht Am`Jm& V_ nÌ XH$a I~MX H$m `hm ~bm bm, dh Våhmam H$hZm {H$gr ^r pñW{V _ Zht QmbJm&' H$ga~mB Z AnZ MmMmOr H$s ~mV _mZ H$a VËH$mb ^mB H$m ~bmdQ H$m nÌ X {X`m& nÌ nhMV hr I~MXOr VaÝV amObXga H$ {bE admZm hm J`& I~MXOr H$ nhMV hr g~ nb{H$V hm CR&

गुलाबचंदजी ने सोचा—खूबचंद H$m {ddmh H$a XZm Mm{h`& n[aU` gÌ _ ~Y OmZ H$ ~mX CgH$s ñdÀNÝXVm ñdV… H$N H$_ hm Om`Jr& ^VrOr H$ga~mB ^r Bg {dMmaYmam g gh_V Wt& CÝhmZ ^mB H$s BÀNm OmZZ H$ {b` I~MXOr H$ gå_I {ddmh H$m àñVmd aIm& खूबचंदजी ने कहा—'बाई! मैं विवाह तो कर लूंगा पर मोमासर नहीं जाऊंगा।' केसरबाई ने कहा—'कोई बात नहीं तुम्हारी इच्छा हो, वहां रह जाना।' मोमासर Z AmZ H$s ~mV Z gma ZmhQm n[adma H$m Ag_Og H$s pñW{V _ IS>m H$a {X`m&

I~MXOr H$m _m_mga OmZ H$ {bE _ZmZ H$m H$m` ^r H$ga~mB H$m gmnm J`m& EH$ {XZ C{MV Adga XI H$a H$ga~mB Z AnZ ^mB g _Ya स्वर में कहा—'खूबचंद! तुम्हारे मोमासर न जाने के हठ से नाहटा और डागा XmZm H$bm H$s Aem{^ hmJr& Bg An`e H$m H$maU V_ ~Zm, `h _ Zht MmhVr Bg{bE V_ AnZr ~Sr ~hZ H$s Amkm g_P H$a hr _m_mga Mb OmAm Ama MmMmOr H$s BÀNmZgma H$m` H$am&' I~MXOr ~Sr ~hZ H$s Bg ~mV H$m Qmb Zht gH$& CR>H$a ~hZ H$m àUm_ {H$`m Ama {~Zm {H$gr ZZZM H$ n[adm[aH$OZm H$ gmW grY _m_mga Am J`&

I ~MXOr H$ AmV hr Y_Ym_ g àU`mËgd H$s V`m[a`m eê$ hm JBï& e^ _hÎm _ amObXga {Zdmgr àVmn_bOr ~X H$s gnÌr ~m{bH$m gOmUm g I ~MXOr H$m {ddmh gnÞ hm J`mï&

gOmUmOr Z WmS> g_` _ n[admaOZm H$ öX` _ AnZm ñWmZ ~Zm {b`mï& d bJ^J VrZ df VH$ _m_mga _ ahrï& Bg Ad{Y _ CZH$ EH$ nÌr hBï& bå~ AVamb H$ ~mX ~m{bH$m H$ OÝ_ g n[admaH$ ha gXñ` H$ _Z _ AmZÝX H$s bha XmS> JBï& Bgr AmZÝX H$ Cnbú` _ nÌr H$m Zm_ AmZXr (gmÜdr AmZXH$_marOr) a I {X`m J`mï& gOmUmOr A~ H$db dY hr Zht, _m ^r ~Z MH$s Wrï& gñH$mar {ee H$m {Z_mU H$aZm CZH$ Xm{`Ëd H$s H$gmQr Wrï& d Bg H$gmQr na I ar CVaZ H$ {b` à`ËZerb ~Z J`rï& _mVm H$s JmX _ AmZÝXr H$m g I X eedH$mb ~rVZ bJmï&

gOmUmOr H$s _Zmd{Îm gm{ÎdH$ Wrï& Y_ CZH$ OrdZ H$m A{^Þ AJ Wmï& EH$ H$eb J{hUr, g{dZrV nÌdY Ama à~Õ _mVm H$ Xm{`Ëd H$m {ZdhZ H$aV hE ^r AnZr Ym{_H$ àd{Îm`m H$ à{V nU gOJ Wrï& à{V{XZ gm_m{`H$, On, _mbm, ñdmÜ`m` Am{X H$aZm CZH$m {Z`{_V H$_ Wmï& Xg-½`mah df H$s C_ _ hr CÝhmZ AîQ>r-MVXer H$m Cndmg H$aZ H$m gH$ën b {b`mï& d nm{jH$ à{VH$_U ^r {Z`{_V ê$n g H$aVr Wrï& gmV df H$s ~mb-d` _ hr CÝhmZ gmÜdrà_I m ORmOr g OrdZ ^a nmMm {V{W`m (XO, nM_r, AîQ>r, EH$mXer, MVXer) _ am{Ì^mOZ Ed h[a`mbr I mZ H$m Ë`mJ H$a {X`mï& Zm df H$s C_ _ AmnZ gmÜdr ORmOr g {d{YdV gå`ŠËd Xrjm JhU H$sï& nfrg ~mb, à{VH$_U, Vah Ûma, nmZm H$s VÎdMMm VWm H$B namZr Tmb H$RñW H$a brï&

naXe J_Z

g_` H$s KSr {Z~mY J{V g K_ hr ahr Wrï& amOñWmZ g Ag_ J` I ~MXOr H$m VrZ df hm J`ï& Bg Ad{Y _ d EH$ ~ma ^r _m_mga Zht आये। व्यापार, व्यापार और व्यापार—बस यही एक धुन उन पर दिन रात सवार Wrï& AnZr H$_mB g CÝhmZ gmnQ>m_ _ EH$ g{dYmOZH$ NmQ>m gm _H$mZ ^r I arX {b`mï&

एक दिन सहसा उनके मन में विचार आया—यहां खाने-पीने की काफी {X¸$V nSVr hï& Š`m Z AmZÝXr H$s _m H$m `hm b AmD$ï? Egm {MÝVZ H$a d _m_mga AmEï& dhm H$N> {XZ ahH$a amObXga Am`ï& ~Sr ~hZ H$ga~mB

g AmerdmX àmá H$a d AnZr nËZr VWm Xm dfu` nÌr AmZÝXr H$m bH$a nZ… Ag_ nhM JE'& gOmUmOr Z Z` Ka H$s gmar ì`dñWmE WmS g_` _ hr ~hV AÀN TJ g O_m br'& J{h-M`m H$ gmW d gm_m{`H$, gda, Cndmg Am{X Ym{_H$ àd{Îm`m _ `Wmg_` gb¾Z ahVr Wr'&

{d{MÌ Jm`

gmÜdr gOmUmOr H$B ~ma AnZ Ag_ àdmg H$ AZ^d gZmV g_` कहा करती थी–'मुझे बाजार की चीजें बहुत कम पसन्द थी। मैं हर वस्तु अपने Ka _ hr ~ZmZm MmhVr Wr'& Om eÕVm Ka _ ~Zr dñV _ hmVr h, dh ~mOma _ I arXr J`r dñV _ H$_ g^d h'& eÕ dñV IrZ g ñdmñÏ` {OVZm nîQ Ama {ZamJ ahVm h CVZm AeÕ dñV g Zht'&' d VmOm ñdm{XîQ Ama nÏ` HmaH ^mOZ ~ZmZ _ {ZnU Wr'& Ag_ _ CZ {XZm XY AÀNm Zht {_bVm Wm'& gOmUm Or Z Xm VrZ _{hZ Vm Og Vg H$m_ Mbm`m {\$a I~MXOr H$mb aJ H$s Jm` b Am`'& Bgg ~{T`m XY H$s Amdí`H$Vm Vm nar hm J`r naÝV dh Jm` BVZr CÀN Ib Wr {H$ bmh H$s H$mQXma gmH$b H$m ^r VmSH$a ~mha Mbr OmVr Ama Xm VrZ KQ VH$ BYa-CYa Kmg MaH$a dmg g`mX` g nd AnZ Amn IQ H$ nmg AmH$a ISr hm OmVr'& Cg Jm` की एक और विचित्र आदत थी–वह बच्चों को देखते ही इस तरह टूट पड़ती Og {~ëbr Mh na'& ~m{bH$m AmZÝXr H$Vhb de Cg Jm` H$ nmg OmZ H$s H$m{ee H$aVr na Jm` H$s Bg àd{Îm g gOmUmOr nUV`m n[a{MV hm J`r Wr AV… AnZr nÌr AmZÝXr H$m Jm` H$ nmg OmZm Vm Xa CgH$s Nm`m VH$ Zht nSZ XVr VWm ñd` ^r ~Sr gmdYmZr g Jm` H$ nmg OmVr'& Jm` H$ nmg OmZ g nd d _hm_Ì ZdH$ma H$m ñ_aU VWm _Ìr ^mdZm H$m à`mJ H$a bVr Wr'& Egr Jm` H$m gInH$ nmbZ OmJê$H$Vm Ed {Z^uH$Vm g {H$`m'&

{dnXm H$ ~mXb

{Og àH$ma {XZ H$ ~mX amV Ama amV H$ ~mX {XZ H$m AmJ_Z hmVm h RrH$ dg hr gI H$ ~mX X…I, X…I H$ ~mX gI, gånXm H$ ~mX {dnXm Ama {dnXm H$ ~mX gånXm H$m AmZm Adí`^mdr h'& n[adVZerb H$mb MH$ H$s Bg A{_Q gr_m aIm H$ ~rM ggma H$m ha àmUr AnZm OrdZ`mnZ H$aVm h'& gOmUmOr H$ XmånË` OrdZ H$m nmMdm df {Z{d¿ZVm g gånÞ hm ahm Wm'& gI H$ Bg H$g{_V gamda _ ghgm ^`H$a VfmamnmV hAm'& n{VIr I~MXOr AMmZH$ gJhUr amJ g JñV hm J`'& Xer Xdm H$ gdZ g EH$

~na Vn d nU ñdñW hn J`{H$ÝV gå`H$ AZnZ H$ A^nd _| d nZ… AñdñW hn J`&

I~MXOr H$s AË`{YH$ AñdñWVn H$n gdnX gZ H$ga~nB {MÝVnVa hn CR>r& EH$ hr NnQn ^nB, dh ^r ~r_na hn J`n& A~ Š`n hnJn? H$ga~nB H$n H$n_b öX` H$nn CR>n& CYhnZ ^nB H$n ~bnZ H$ {b` AZH$ nÌ Ed Q>brJn_ {X` {H$ÝV I~MXOr Zht An`& An{Ia CYhnZ AnZ Á`îR> nÌ gnhZbnbOr H$n Ag_ ^OZ H$n {ZíM` {H$`n& _n H$ {ZXe H$n ñdrH$na H$a gnhZbnbOr erK Ag_ nhMo& _n_nOr H$n anObXga b OnZ H$ {b` बहुत चेष्टाएं की पर सब निष्फल। सोहनलालजी ने कहा—'मामाजी! मां ने मुझे nhbr ~na AnnH$n bnZ H$n H$n` gnn hi& `{X _ AH$bn hr nZ… nhMn Vn _n _P Cnnbå^ XJr& H$n`n EH$ ~na _a gnW anObXga Mb, {\$a ^b {OVZ {XZ dhn éH$& ^nZO H$n AË`{YH$ AnJh X I I~MXOr Z Yra गंभीर स्वर में कहा—'सोहन! मोमासर में अधिक रहना नहीं चाहता और anObXga _| ~hZ H$ Ka ^nB H$n ahZn bn{H$H$ ÑpîQ> g C{MV Zht& Bg{bE _ A^r Ohn h _P dht ahZ Xn& V_ anObXga OnAn& H$ga~nB H$n _an ~na-~na àUn_ H$hZn& _an ñdnñÏ` Yra-Yra R>rH$ hn OnEJn&'

gnhZbnbOr hVne hnH$a AH$b bnQ> AnE& CYhnZ _n H$ga~nB H$n dñVpñW{V H$s AdJ{V Xr& ^nB H$ Z AnZ g CZH$ H$n_b {Xb H$n Jhar R>g bJr& ^nB H$ {~Zn EH$-EH$ nb CYh df Og bJ ahn Wn& ^nB g {_bZ H$s AH$bnhQ> BVZr Vrd hB {H$ CYhnZ H$N> {XZ ~nX nZ… gnhZbnbOr H$n Ag_ ^On& Bg ~na ^r d AnZ _n_n H$n _nZg V`na H$aZ _| g\$b Zht hn nE&

I~MXOr H$n à~b AnË_{dídng Wn {H$ XdnB g erK hr ñdñW hn On`J {H$ÝV CZH$n {dídng \${bV Zht hn gH$n& VZ H$s pñW{V {MÝVZr` ~Z JB& d AË`{YH$ éU hn JE& R>rH$ hnZ H$ Angna A~ jrU hn MH$ थे। एक दिन खूबचंदजी ने सोचा—यदि बहन से बिना मिले ही मर जाऊंगा तो ~hZ H$ gnW ~hV ~Sn Ynı Ïn hn On`Jn& CYhnZ AnZ {_Ì Ûnan anObXga Q>brJn_ ^On& Vna nhMV hr n[adna _| Jhar {MÝVn ì`nná hn JB& H$ga~nB आकुल-व्याकुल हो उठी। माता की व्यग्रता देख सोहनलालजी ने कहा—'मां! _ A^r Ag_ OnVn h Ana `Z-H$Z-àH$naU _n_nOr H$n bH$a AnVn h&' nÌ H$ BZ dMZn g _n H$n H$N> gnÝËdZn {_br& d _n H$n gXe bH$a grY

Ag_ nhMï& _m_mOr H$s emar[aH$ pñW{V XI gmhZbmbOr H$N> nb Vm ñVãY g IS> ah {H$ÝV erK g^b J`ï& _m H$s nrSm H$m Xa H$aZm hr gÝVmZ H$m na_ H$Vì` hmVm hï& Bg {MÝVZ Z gmhZbmbOr H$ ^mdH$ _mZg H$m AnZ Xm{`Ëd H$ à{V gOJ H$a {X`ï&

_m_mOr H$m àUm_ H$a CÝhmZ ghO ^md g _m H$m gXe gZm`ï& gmhZbmbOr H$m AnZ gå_I XI I~MXOr H$ nrb ZÌm _ àgÞVm H$s bm{b_m M_H$ CRrï& CÝhmZ hf g ^mZO H$m AnZr ~mhm _ ^a {b`ï& gmhZbmbOr H$ ZÌ ^r Cg g_` gOb hE {~Zm Zht ah gH$ï& ~hZ H$ öX` ñneu gXe H$m gZH$a ^mB H$m öX` JXJX hm J`ï& I~MXOr Yr_ ñdam _ बोले—सोहन! मेरा शरीर अब वैरी हो गया। सोचा कुछ और था और हुआ कुछ Amaï& _a H$maU Våh ~Sr _hZV H$aZr nSr {\$a ^r V_ AKm` Zhtï& _P bJVm h ^mZOm hm Vm Egm hmï& _mVöX`m H$ga~mB H$m ^r _a AmJh H$ H$maU AË`{YH$ H$îQ> hAmï& BgH$m _P ~hV IX hï& A~ _am H$mB AmJh Zht hï& _ Våhma gmW MbZ H$m V`ma hï&'

gmhZbmbOr Z _m_mOr H$ H$WZmZgma ì`mnma H$m H$m` CZH$ {_Ìm H$m g^bm H$a bZXmar-XZXmar H$m nam {hgm~ H$a {b`ï& d A{VerK _m_mOr, _m_rOr Ama BÝÐm H$m gmW bH$a abJmSr H$m bå~m g\$a V` H$a amObXga nhM J`ï&

{H$amE H$ _H$mZ _ àdmg

dfm H$ BÝVOma H$ ~mX ^mB g {_b H$a ~hZ H$m Anma hf hAmï& H$ebj_ H$ gdmX nNmZ H$ ~mX H$ga~mB Z I~MXOr H$m AnZ Ka _ ahZ H$ {b` ~hV AmJh {H$`ï& ~hZ H$ AË`{YH$ AmJh H$m XI I~MXOr Z कहा—'बाई! मैं आपके पास रहूं इससे बड़ा और क्या सौभाग्य हो सकता है? Bg é½UmdñWm _ AmnH$m gm_rß` Vm _a {b` ~hV ~Sm g~b h {H$ÝV ~hZ H$ Ka ahZ g Z H$db _ar A{nV ZmhQm n[adma H$s à{VîRm na àíZ{M• bJVm hï& A~ Amn hr ~VmE, _ Š`m H$ê$?'

^mB H$ àíZ Z H$ga~mB H$m {MÝVZ H$ {bE {dde H$a {X`ï& {MÝVZ के क्षणों में एक समाधान उपलब्ध हो गया। केसरबाई ने कहा—'खूबचंद! तुम H$ht ^r ahm, _P H$mB Amn{Îm Zhtï& _ar Vm {g\$ BVZr ^mdZm h {H$ V_ Eg ñWmZ na ahm, Ohm _ à{V{XZ V_g {_b gH$ï&' ~hZ H$s Bg ~mV H$m

gå_nZndH$ ñdrH$ma H$a I~MXOr dht {H$anE na EH$ NnQn gn _H$nZ bH$a ahZ bJ&

CnMma {Zî\$b hn JE

H$ga~nB Z ^nB H$ ZnZn{dY CnMma H$adn` na H$nB ^r CnMma H$n_`n~ Zht hn gH$n& {XZ-à{V{XZ eara H$s {~JSVr hB Xen H$n X I H$a EH$ {XZ I~MXOr Z {dMma {H$`n {H$ A~ _ ~MZ dnbn Zht h AV… AnZ _Z H$s ~nV ~hZ H$n ~Vn XZr Mn{hE& `h {MÝVZ H$a I~MXOr Z EH$nÝV समय में केसरबाई को अपने पास बुलाया। उन्होंने कहा—बाई! आपने मुझे पाला nngn, ~Sn {H$`n& X^n` g NnQr C_ _ _nVn {nVn H$n gn`n _P Zht {_b gH$n& {H$ÝV Ang _P gXd BVZn dnËgë` {_bn {H$ H$^r _nVn-{nVn H$n A^nd Zht I Q H$n& _ AnnH$ Bg CnH$ma H$n H$^r Zht ^b gH$Jn& _Z OnZ-AZOnZ _ AZH$ Jb{V`n H$s h, CZ g~H$ {b` eÕ AV…H$aU g j_n`nMZn H$aVn h& _P bJVn h ~hZ hn Vn Egr hn, On g_` na ^nB H$n ghr anñVn {X I n gH$&'

"_an ~MnZ AnnH$ nng ~rVn& _an {ddnh ^r AnnH$ {ZXeZ _ hAn& _P bJVn h {H$ _ar OrdZ brbn H$n AÝV_ jU ^r AnnH$ gn_Z AnZ dnbn h&' `h öX`-^Xr eãX gZV hr H$ga~nB H$n H$n_b H$bOn YSH$ उठा। आंखों से अविरल आंसू बहने लगे। उन्होंने कांपते हुए स्वरों में कहा—यह Š`n H$h ah hn? I~MX! AJa V_ Mb OnAnJ Vn _an Š`n hnb hnJn? बहन की वेदना को शान्त करते हुए खूबचंदजी ने सधे हुए शब्दों में कहा—

gÝVXng ggma _ ~Sn H$gnB H$nb&
anOn {JU Z ~nXenh, ~Tn {JU Z ~nb&&

~nB! _Ë` A~ _P àË`j {X I nB X ahr h& On gË` h Cg ZH$nam Zht On gH$Vn& _an AnnH$ gnW BVZ {XZ H$n hr g`nJ Wn& Bg gË` H$n ñdrH$ma H$a _Z H$n enV ~ZnE& _nh H$n hQn b& dº$ H$n ~rVZn h Bg{b` dh ~rVJn& ggma H$n MbZn h Bg{bE dh MbJn& ha àmUr H$n `hn g OnZn h Bg{b` dh On`Jn& {H$gr H$n nhb Vn {H$gr H$n ~nX _, An{ I a g~H$n Zå~a An`Jn& ggma H$n H$n_ {H$gr H$ nrN Z éH$n h, Z éH$Jn&'

_Ë` H$n ndn^ng

I~MXOr H$ AÜ`nË_ AZàn{UV dMZn H$n gZ H$a H$ga~nB H$s ì`Wn

कुछ कम हुई। वे कुछ साहस जुटा कर बोली–'शास्त्रकारों ने सच ही कहा है–शरीरं व्याधि मंदिरम्'। भाई! यह औदारिक शरीर है। इसमें अनेक दुःसाध्य amJ CËnÞ hmV h Ama AmfYmnMma g RrH$ hm OmV hï& nd g{MV AgmVmdXZr` H$_ H$m CX` hAm hï& Bg g_Vm g ghZ H$amï& Y` Ama gmhg g _H$m~bm H$amï& _Zm~b H$m _O~V a I mï& `Ú{n Våhmar emar[aH$ Agø dXZm Ama {Z~b AdñWm _a öX` H$m {dXrU H$a ahr h {\$a ^r AnZ e^me^ H$_ ñd` H$m hr ^mJZ nSV hï& Mmh H$a ^r _ Våhmar dXZm H$m ~Qm Zht gH$Vrï& `hr Vm OZ XeZ H$m H$_ dmX hï& _P {dídmg h {H$ V_ nU ñdñW hm OmAmJï&

I ~MXOr Z ~hZ H$s ~mVm H$m Ü`mZ g gZm Ama eara H$s gmar e{º$ बटोर कर बोले–'बाई! आपने जो कुछ कहा, वह बिल्कुल ठीक है किन्तु जो OÝ_m h dh Adí` _aJmï& gpîQ> H$ Bg A{Zdm` {Z`_ H$m H$mB ^r VmS> Zht gH$Vmï& H$mb H$ AmJ NmQ> ~S> H$m H$mB \$H$ Zht hï& _Ë` H$m {Og g_` {OgH$ nmg AmZm h dh AmH$a hr ahJrï& Amn Mmh H$N> ^r Š`m Z H$h na A~ _ EH$ Xm {XZ H$m _h_mZ hï& OmV OmV BpÝXam H$s _m Ama BpÝXam H$s {Oå_Xmar AmnH$ D$na NmS> ahm hï& AmnZ gXd BZH$m Ü`mZ a I m h Ama Amn.....' `m H$hV-H$hV I ~MXOr H$m Jbm AdéÕ hm J`m, nbH$ ~ÝX hm JBï&

^mB H$ _I g ` A{V_ ~mb gZH$a H$ga~mB H$m H$n_b _mZg H$N> jU H$ {b` __hV hm J`mï& YraO H$m gV Q>Q> J`mï& d g~H$-g~H$ H$a amZ bJrï& na dmVmdaU _ Jhar CXmgr Ama OS>Vm gr Nm J`rï& H$ga~mB EH$ Ym{_H$ _{hbm Wr AV... WmSr Xa ~mX CZH$ {dMmam _ Z`m _mS> Am`mï& चित्त की सरिता में निर्मोह की उर्मियां उठने लगी। उन्होंने सोचा–कहीं मेरे इस _hmbmn Ama éXZ H$ H$maU ^mB H$s D$Ïd_ I r {dMmaYmam _ qH${MV AÝVa Z Am Om`ï& Om Om`Jm dh _a amZ YmZ g Zht éH$Jmï&

केसरबाई ने अपने आंसू पौंछकर साहस के साथ कहा–भाई! होनहार hmH$a ahVr hï& `{X Våhmam _Pg Bgr àH$ma {d`mJ hmZm {ZpímV h Vm Cg H$mB Qmb Zht gH$Vmï& Am`î` H$s Sma H$m gde{º$_mZ VrWH$a ^r Zht ~Tm gH$ Vm h_ {H$g ~mJ H$s _br hï? OmZm Ama ahZm {H$gr H$ hmW H$s ~mV Zht h {H$ÝV {H$gr H$s {MÝVm H$m ^ma AnZ gmW _V b OmZmï& Y_ hr h_am g ƒ m ghmam h Bg{bE à{Vnb Y_ H$m a_U H$aZmï& {H$gr H$ à{V

amJ-Ûf H$m ^md _V aIZmï&' ~hZ H$s BZ AmÜ`mpË_H$ {ejmAm g I~MXOr H$m _mZ{gH$ g~b {_bmï&

ghmJ H$s A{V_ amV

gOmUmOr Ah{Ze n{V H$s gdm n[aM`m _ brZ ahVr Wrï& {H$VZr hr amV CÝhmZ OmJH$a {~VmBï& n{V H$s AñdñWVm g nËZr H$m {MpÝVV hmZm ñdm^m{dH$ Wm {\$a ^r d ~S> Y` Ama gmhg H$ gmW _Ya ñda _ AmË_{MÝVZ naH$ Tmb gZm ahr Wrï& Tmbm H$s _Jb Üd{Z AdMVZ _Z H$m ñne H$a ahr Wrï& ghgm I~MXOr Z ~X nbH$ Imbrï& nËZr H$m åbmZ _I
देख खूबचंदजी ने प्रेरक स्वर में कहा–'उदास क्यों हो? पति-पत्नी दोनों में से EH$ H$m nhb nrN> OmZm hr nS>Vm hï& _a OmZ H$ ~mX amZm-YmZm _V H$aZmï& YraO VWm {hå_V g X...I H$s H$mbr amV ^r gJ_Vm g H$Q> OmVr hï& h_em _ar ~S>r ~hZ H$s Amkm _ MbZmï& BpÝXam H$m gñH$mar ~ZmZmï& Xd-Jé Ama Y_ H$ à{V nar IÕm aIZmï&' nËZr Z _ñVH$ PHmHa n{V H$s A{V_ {ejm H$m ñdrH$ma {H$`mï& CgH$ Z`Z gOb hm JEï&

Og Og aOZr H$m JhZ AYH$ma AnZr {demb ~mhm H$m \$bmVm hAm gpîQ> H$ ha àXe H$m AmdV H$a ahm Wm dg-dg I~MXOr H$s JmÌ dXZm Vrd g VrdVa hmVr Om ahr Wrï& àJmT> dXZm H$ jUm _ ^r CZH$ _I g C\$ VH$ Zht {ZH$bmï& d g_^md g dXZm g OP ah Wï& Eg {dH$Q> g_` _ gOmUm Or Z ^r ~hV ÑT>Vm H$m n[aM` {X`mï& AnZr AÝVa ì`Wm H$m JmU H$a gOmUmOr VÝ_` hm AnZ n{V H$m AmÜ`mpË_H$ gh`mJ X ahr Wr, Z_ñH$ma _hm_Ì H$m On gZm ahr Wrï& I~MXOr H$m JmÌ íbW hmVm Om ahm Wmï& OdmZ ~X hm JBï& AMmZH$ ídmg H$s J{V ~T>r, Xm-VrZ ídmg VOr g Am` Ama XIV-XIV gmJmar AZeZ H$ gmW I~MXOr Bg ggma g {dXm hm JEï&

Agm_{`H$ {ZYZ H$s Bg KQ>Zm Z gma n[adma H$m {MÝVm Ama emH$ H$ gmJa _ S>~m {X`mï&

{d`mJ H$s ì`Wm ... dYì` H$m AYH$ma

am{Ì H$m gKZ V_g {dbrZ hAmï& àmMr _ nm \$Qrï& ^ma H$m ghmZm g_`, n{j`m H$m _Ya H$bad gá _mZd _{XZr H$m OmJaU H$m gH$V H$a ahm Wmï& AéUmX` H$ A{^ZÝXZ H$s nd V`mar _ D$fm H$s a{º$_m ZrbJJZ

_ {dH$sU hm MH$s Wrï& gpîQ> H$m H$U H$U ZB VmOJr H$m AZ^d H$a ahm Wm {H$ÝV g`mX` hmZ g nd hr gOmUmOr H$ gm^mh` H$m gaO AñV hm MH$m Wmï& àH${V H$ àmJU _ O~ nVPS> AmVm h Vm ~gÝV ^r AmVm hï& g` AñV hmVm h Vm C{XV ^r hmVm hï& gOmUmOr H$ OrdZ _ EH$ Egm nVPS> Am`m {Og ~gÝV _ ~XbZm EH$ gnZm Ogm bJ ahm Wmï& Cg CObr ^ma H$s à^m CZH$ {bE A_m H$s H$mbr amV g ^r A{YH$ ^`mdh Wrï& OrdZ-gmWr H$ {d`mJ H$s ì`Wm g ì`{WV dYì` H$ H$mb AYH$ma _ ImB dh nfrg df H$s `dVr {H$g AmbmH$ _ AnZm OrdZ nW àeñV H$aï? Bg `j àíZ H$m CÎma {g\$ g_` H$ nmg Wmï& Cg {XZ {H$gr Z H$ënZm Zht H$s Wr {H$ `h X~br nVbr Zmar EH$ {XZ AnZ ÑT> gH$ën Ama à~b néfmW g dYì` H$m gm^mh` _ n[aUV H$a B{Vhmg _ A_a hm OmEJrï&

\$b {IbZ g nhb _aPm J`m, XrnH$ ObZ g nd ~P J`mï& gIX XmånË` OrdZ H$m EH$ XeH$ nam hmZ g nd hr {Z`{V H$a hmWm Z gOmUmOr H$ ghmJ H$m {gÝXa bQ> {b`mï& H$mb H$s {ZîRa brbm Z EH$ ñdm{^_mZr, ÑT> gH$ënr Ama OPmê$ ZmOdmZ H$m AZÝV _ {dbrZ H$a {X`mï& {Og {H$gr Z ^r `h öX` {dXmaH$ gdmX gZm, CgH$m {Xb Xhb CRmï&

पतिरेव परमेश्वरः—इस आदर्श वाक्य को जीने वाली भारतीय नारी के {bE n{V H$m {d`mJ {H$VZm X...gh hmVm h, CgH$s H$ënZm _mÌ g öX` {gha OmEï& Cg `J _ ê$S>`m Ama H$àWmAm H$s OS> Jhar Wrï& {dYdm Zmar H$s pñW{V Vm X`Zr` Ama H$éUmOZH$ hmVr Wrï& Cg ha BÀNm H$m X_Z H$aZm nSVm Wm, Mmh AZMmh AZH$ gm_m{OH$ ~YZm H$m ghZm Amdí`H$ Wm {H$ÝV H$ga ~mB ~hV g_PXma _{hbm Wrï& d AnZr ^m^r H$s Egr Xem Zht XIZm MmhVr Wrï& bmH$mndmX H$m ghH$a ^r CÝhmZ ^m^r H$m CÝ_º$ dmVmdaU {X`m AV... gOmUmOr H$m n{V {d`mJ H$ ~mX H$B _{hZm VH$ H$_a H$ H$mZ _ ~R> ahZ H$s ÌmgXr Zht ^mJZr nSrï& CÝhmZ EH$mÝV g_` _ gmpÜd`m H$ XeZ Ed CnmgZm H$n bm^ bH$a emH$mH$b {MÎm H$m g_Ëd H$s `mÌm _ `mÌm{`V H$aZ H$m à`mg {H$`m Ama Cg_ d g\$b ^r ~Ztï&

2. JhñW OrdZ H$ H$N> Cëb l Zr` àgJ

{ZñnhVm H$m {ZXeZ

gmÜdr gOmUmOr _ àma^ g hr nmn^réVm Ed AmË_mWu d{Îm Wr¡& CZH$ OrdZ _ AZH$ Eg àgJ h {OZ_ CZH$s AV_ l r d{Îm PbH$Vr h¡& JhñW OrdZ H$s KQ>Zm h¡& gmÜdr gOmUmOr H$ MmM ídga l r_mZ Jbm~MXOr ZmhQ>m AnZ OrdZ H$ A{V_ g_` _ Vah {XZ H$s Vnñ`m _ brZ W¡& CZH$ _Z _ gWma H$s ^mdZm OmJV hB¡& AZeZ ñdrH$a H$aZ g nd CÝhmZ g^r nm[adm[aH$OZm H$m g{ÞH$Q> ~bm`m, eÕ AV..H$aU g l _V l m_Um {H$`m¡& Bgr H$_ _ gOmUmOr d BÝÐm H$m ^r {ZH$Q> ~bmH$a l _V l m_Um {H$`m¡& ~m{bH$m BÝÐm H$ {ga na hmW \$aV hE AnZ nmÌ

डॉक्टर आसकरणजी से कहा–'आसू! इन्द्रा को अपनी छोटी बहन समझना। nmM gm MmXr H$ H$bXma (énE) BgH$ Zm_ {b l X¡& O~ `h g_PXma hm OmE Vm MH$dVu ã`mO g{hV BgH$ hmW _ gmn XZm¡& l M l mV _ _V {JZZm¡& _P bJVm h `h Ka _ Zht ahJr¡& BÝÐm H$s Xrjm hm Vm V_ _Zmhr _V H$aZm¡&' AmgH$aUOr Z XmXmOr H$s Amkm ghf {eamYm` H$aV hE nmM gm H$bXma BÝÐm H$ Zm_ {b l {XE VWm Xrjm _ ~mYH$ Z ~ZZ H$ {bE gH$ën ~Õ hm JE¡&

XmXmOr H$m àUm_ H$a Og hr AmgH$aUOr ~mha OmZ bJ, CZH$ पिता कर्मचंदजी ने पूछा–'पिताजी ने आज इन्द्रा के नाम क्या लिखाया है?' आसकरणजी ने पत्र पिता के हाथों में थमाते हुए कहा–पांच सौ चांदी के रुपए लिखाए हैं। कर्मचंदजी ने कुछ चिन्तन की मुद्रा में कहा–'पिताजी ने तो बहुत कम लिखवाए हैं।' आसकरणजी ने हास्ययुक्त स्वरों में कहा–'बापूसा! आप ज्यादा लिखा दें।' कर्मचंदजी कुछ गंभीर होकर बोले–'पिता से बढ़कर पुत्र H$g {b l dm gH$Vm h¡?' AmgH$aUOr AnZ {nVm H$ Bg {dZ_ VH$ H$m gZH$a _mZ hm JE¡& H$_MXOr Z ^r {nVm H$m AZgaU H$aV hE Cgr nÌ

na nmM gm MmXr H$ H$bXma Ama {bI {XEï& AmgH$aUOr Z Cg nÌ H$m ga{jV ñWmZ na aI {X`ï& g^r nm[admaH$ OZ Bg {bIVZm_ H$ gmjr Wï&

O~ _m-~Qr XmZm g`_ nW na AJga hmZ dmbr Wr V~ EH$ {XZ AmgH$aUOr Z MmXr H$ H$bXma {g¸$m g ^ar Wbr gOmUmOr H$ nam _ aIV हुए कहा–'काकीजी! यह थेली आप ले लें।

"Bg_ Š`m hï? _P BgH$m Š`m H$aZm hï?' gOmUmOr Z àíZr{`V ÑpîQ> g nNmï&

आसकरणजी ने कहा–'इसमें पूज्य दादाजी एवं पिताजी द्वारा प्रदत्त MH$dVu ã`mO g{hV EH$ hOma MmXr H$ H$bXma h, Om {H$ BÝÐm H$ Zm_ {bI hE Wï& M{H$ BÝÐm A^r NmQr h AV... AmnH$m _Z hm CÝh ` énE ~mQ> Xmï&'

सुजाणांजी ने कहा–'मन से क्या मतलब? आप कह दें, जिन जिनको {OVZ énE XZ h _ X XJrï&'

"Zht, {OÝh XZ h CÝh Vm h_ AnZ Amn XV ahJï& ` Vm AmnH$s _Ou hm Vm ~hZ ^mUOr Am{X H$m X Xmï&'

सुजाणांजी ने सोचा–पीहर वालों को दूं तो भी अव्रत का काम और ggambdmbm H$m X Vm ^r AdV H$m H$m_ï& _P Vm Xrjm bZr h {\$a _ AnZ hmWm g AdV H$m H$m_ Š`m H$ê$ï& _ AnZr _Ou g {H$grH$m ^r H$N> Zht दूंगी। सुजाणांजी ने स्पष्ट स्वरों में कहा–'आप जाने आपका काम जाने। मुझे BZ én`m g H$maB bZm-XZm Zhtï&' AmgH$aUOr Z ~hV AZZ` {dZ` {H$`m na, gOmUmOr Z Cg Wbr H$m ñdrH$ma H$aZm Vm Xa, hmW VH$ Zht bJm`mï& Bg KQ>Zm _ CZH$s ghO {ZñnhVm H$s d[Îm H$m XeZ hmVm hï&

g{hîUVm

ghZerbVm H$m CnXe XZm Vm AmgmZ h na g_` na ghZerbVm H$m n[aM` XZm ~hV H${RZ H$m_ hï& gmÜdr gOmUmOr Z JhñW Ed _{Z OrdZ _ g{hîUVm H$m AÀNm n[aM` {X`mï&

{d. g. 1988 H$s KQ>Zm hï& AîQ>_mMm` nÁ` H$mbJUr gaXmaeha (amOñWmZ) _ g_dgV Wï& H$_MXOr ZmhQm (_m_mga) H$s Y_nËZr AnZr XdamZr (gmÜdr gOmUmOr) g{hV gn[adma Jé XeZmW gaXmaeha nhMrï&

H$N {XZ CnmgZm H$ níMmV bmQV d°$ d amObXga _ éH$s& CZH$ gmW H$_MXOr H$ ~S nÌ nÞmbmbOr Ed ~ƒ ^r W& nÞmbmbOr H$s _m Z अपनी देवरानी से कहा—तुम सब मोमासर चले जाओ। वहां घर एवं बच्चों की nar g^mb a IZm& EH$ gámh ~mX H$ma (JmSr) dmng amObXga ^O XZm Vm{H$ _ ^r Cgr JmSr _ _m_mga Am OmD$Jr&' gOmUmOr ORmZr H$ H$WZmZgma ~ƒm H$m bH$a gmZÝX _m_mga Am JB&

H$_MXOr H$s bSH$s BMaO ~hV ZQ IQ Wr& CgH$s C_ Vah df H$s Wr& dh EH$ {XZ _H$mZ H$ ~mha JmIS (Ka H$ ~mha ~Zm M~Vam) na ~Rr EH$ _Zr_ g hmgr-_OmH$ H$a ahr Wr& EH$ JmIS na _Zr_ (~m÷U H$m bSH$m) ~Rm Wm Ama Xga JmIS na BMaO& XmZm Oma-Oma g ~mV H$a ah W& gOmUm Or {H$gr H$m`de AMmZH$ ~mha AmB& CÝh Egm H$aZm C{MV नहीं लगा। उन्होंने बात करती हुई जेठूती को टोकते हुए कहा—'इचरज बाई! इस àH$ma XadmO H$ ~mha ~RH$a AH$b _Zr_Or g ~mV H$aZm C{MV Zht h& `{X H$N ~mV hm JB Vm Cnmbå^ _P {_bJm&' BMaO H$m MmMr H$m `h H$WZ AÀNm Zht bJm& CgZ MmMr H$ H$WZ H$m à{VdmX H$aV hE कहा—'मेरी मां यहां नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं कि आप मुझे बिना _Vb~ SmQV ah& Amn Bg Vah QmH$Z dmb H$mZ hmV h?' gOmUmOr Z Bg pñW{V _ _mZ ahZm hr Cn`°$ _mZm na BMaO Z MmMr H$ dMZm H$s _Z _ JmR Ogr ~mY br& {Og {XZ BMaO H$s _m Ka H$ Ûma na nhMr, BMaO XmSH$a ~mha AmB, JmSr g CVaZ H$ nhb hr _m H$m MmMr H$s Ta gmar {eH$m`V H$a Xr& ñd` ^r Oma Oma g amZ bJr& nÌr H$s ~mV gZH$a _m H$m Mham Ande g a{°$_ hm J`m& CÝhmZ XdamZr H$m Cnmb^ XV hE `hm VH$ H$h {X`m {H$ O~ VH$ V _a Ka _ ahJr, _P Mmam Amhma-nmZr H$ Ë`mJ h&

BZ A{à` eãXm H$m gZH$a ^r gOmUmOr CÎm{OV Zht hB& CÝhmZ {~Zm {H$gr à{VdmX H$ ghO ^md g AnZm AmgZ CRm`m Ama gmpÜd`m H$ {RH$mZ OmH$a gm_m{`H$ H$m àË`m»`mZ H$a {b`m& grIZ {MVmaZ _ VëbrZ hm JB& H$N g_` ~mX ORmZr H$m Jñgm emV hAm& CÝh nm[adm[aH$OZm Ûmam Bg dñVpñW{V H$m nVm bJm {H$ dñVV… JëVr BMaO H$s Wr& CgZ AnZr JbVr {NnmZ H$ {bE hr MmMr H$s {eH$m`V H$s h& O~ gMmB àH$Q hmVr h V~ öX` H$s dXZm níMmÎmmn H$m {ZPa ~Z ñdV… ~hZ bJVr h& H$_MXOr H$s Y_nËZr H$m ^r AnZ H$Ë` na AZVmn hAm& AnZr ^b H$

n[aîH$ma H$m gH$ën à~b ~Z J`m& CÝhmZ VËH$mb gmpÜd`m H$ {R>H$mZ EH$ AmX_r XdamZr H$m ~bmZ H$ {bE ^O {X`m& gOmUmOr Z EH$ hr CÎma दिया—मेरे अभी सामायिक है। घण्टा भर बाद फिर एक आदमी बुलाने के लिए गया तब भी यही उत्तर मिला—मेरे अभी सामायिक है। जब देवरानी नहीं लौटी Vm Vrgar ~ma ñd` ~bmZ H$ {bE JBï& dhm XdamZr H$m ñdmÜ`m` _ brZ XIH$a d XJ ah JBï& KSr H$s gB H$ar~ ~mah ~O H$s gMZm X ahr Wrï& जेठानी ने पूछा—'कितनी सामायिक है?'

देवरानी—'पांच।'

जेठानी ने मृदु स्वरों में कहा—'चलो अब घर चलें।'

देवरानी ने मुस्कान भरी चुटकी लेते हुए कहा—'आपके चारों आहार के Ë`mJ h Zmï?'

जेठानी ने संकुचित स्वरों में कहा—'आवेश में किया हुआ त्याग वस्तुतः Ë`mJ Zht hmVmï& JbVr Våhmar Zht, BMaO H$s hï& _Z Amdede Om H$N> Hhm, CgH {bE V_ _P j_m H$a Xm Ama Ka Mbmï&'

gOmUmOr H$m öX` gab Wmï& CZH$ _Z _ {H$gr àH$ma H$s JmR> Zht Wrï& gm_m{`H$ AmV hr ghO^md g CRr Ama AmgZ bH$a ORmZr H$ gmW Ka Am JBï& Ka H$ g^r H$m` nddV H$aZ bJrï& CZH$ Mha na Z Cnmb^ H$ g_` {IÞVm Wr Ama Z _Zma H$ g_` àgÞVmï&

ñnîQdm{XVm

{d. g. 1986 H$s KQZm hï& Cg g_` AmMm` H$mbJUr H$m amObXga _ nXmnU hm ahm Wmï& Ir ~Y_bOr ~X Z AnZ Zd{Z{_V _H$mZ _ H$mbJUr H$ àdmg H$m AZamY {H$`m& ñWmZr` à_I ImdH$m Z कहा—आपका स्थान उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। श्रावक वर्ग की इस बात पर ~Y_bOr H$m ~hV CÎmOZm Am`rï& d Amde H$ Ze _ ImdH$Ëd H$m ^mZ ^b JEï& VaÝV amObXga g grY ~rH$maZa nhMï& dhm AmMm` Odmha_bOr विराजित थे। बुधमलजी ने आचार्यजी से प्रार्थना की—इस बार आपका amObXga AmZm hm Vm Oê$a _a Z` _H$mZ _ {damOZmï& nÁ`Or EH$ VamnWr ImdH$ H$ _I g `h {dZVr gZ àgÞ hEï& CÝhmZ AmídmgZ XV hE कहा—'श्रावकजी! आपकी अर्ज ध्यान में है। अगर उधर आना हुआ तो आपके ZE _H$mZ _ {damOZ H$m ^md hï&'

g`mJde H$N hr {XZm ~mX ñWmZH$dmgr AmMm` Odmha_bOr amObXga AmE Ama ~Y_bOr ~X H$s nd àmWZmZgma d CYht H$ _H$mZ _ {damO & AmMm` H$mbJUr H$m àdmg _b {RH$mZ _ Wm & OZ gmYmaU _ `h H$Vhb H$m {df` ~Z J`m & CËgH$Vm de AZH$ bmJ CZH$ ì`m»`mZ _ OmZ bJ & nZ_MXOr SmJm (gOmUmOr H$ ZmUX) ^r gm{W`m H$ H$hZ g à{V{XZ dhm OmZ bJ & d Ka AmH$a CZH$ ì`m»`mZm H$s I~ àegm H$aV & nm[adm[aH$OZm H$m ^r àdMZ H$ {bE à[aV H$aV {H$ÝV Ka H$ {H$gr gXñ` na CZH$s ~mVm H$m qH${MV ^r à^md Zht nSm & CÝhmZ EH$ {XZ Ka H$s महिलाओं से कहा–'कल मैं पूज्यजी को अपने घर गोचरी लाऊंगा'। किसी ने उनकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने सुजाणांजी से कहा–मामीसा! कल _ AmMm` OdmhabmbOr H$m AnZ Ka JmMar H$ {bE {ZdXZ H$aH$ Am`m h &

मामी ने तपाक से कहा–'चाहे आप लायें या वे स्वयं आएं। क्या फर्क nSVm h? JhñW H$m Ka Vm g~H$ {bE I bm h&'

मामी की बात काटते हुए पूनमचंदजी बीच में ही बोल पड़े–'मामीजी! H$b _J H$s Xmb {^Jm XZm&'

मामी–'किसलिए?'

पूनमचंदजी–'दाल का हलुआ और स्वादिष्ट बड़े बनाने हैं।'

मामी–'मेहमान कौन आएंगे?'

पूनमचंदजी–'कौन क्या आएंगे, आते ही तो बता दिया था कि कल AmMm`Or JmMar nYmaJ & AmMm`Or H$s {def I m{VaXmar H$aZr h&'

सुजाणांजी–'मुझे तो संतों के निमित्त बनाने का त्याग है।'

nZ_MXOr H$m _m_rOr H$m `h ê$j CÎma ~hV A I am na, d Ë`mJ H$ gm_Z Š`m ~mbV? MnMmn dhm g CR H$a Mb JE&

Xga {XZ AmMm` OdmhabmbOr AmR gVm H$ gmW JmMar nYma & nZ_MXOr AmMm`Or H$m gmJh XY, Kr, X{b`m Am{X {d{^Þ I mÚ Ðì` ~hamZ bJ & nmg _ I S gOmUmOr `h gmam Ñí` X I ahr Wr & CÝhmZ àíZ करते हुए कहा–'महाराज! उत्कृष्ट भावों से दान देते हुए व्यक्ति में कौन सा JUñWmZ nmVm h?' nÁ`Or H$N OëXr _ Wo & CÎma XZ H$m g_` Z X I d कुछ झल्लाते हुए बोले–'बाई! तुम्हें चर्चा करनी हो तो मेरे डेरे आ जाना।'

~{hZ gOmUmOr Z {Z^ªक स्वरों में कहा–'मुनिजी! डेरे तो कंजरों के

hmV h¡& gVm H$s Vm {RH$mZm hmVm h AV... Amn {_ÀNm{_ X¸$S>_ br{OE¡&' बहिन सुजाणां की यह स्पष्टोक्ति उन्हें अप्रिय लगी। उन्होंने तेज स्वर में कहा—"_ Š`m H$ê$ {_ÀNm{_ X¸$S>¡? H$am V_, Š`m{H$ V_Z gVm H$m A{dZ` {H$`m h¡&'

बहिन सुजाणां—'मैं गृहस्थ हूं और आप साधु। साधु को आने जाने की आदेशात्मक सावद्य भाषा बोलनी कल्पती नहीं है। दूसरी बात—संत तो Aà{V~Õ {dhmar Amam A{ZH$Vdmgr hmV h {\$a AmnZ _P AnZ Sa AmZ H$m AmXe H$gm {X`m¡?'

~{hZ gOmUm H$ Bg Xm QH$ O~md H$m gZ H$a AmMm`Or H$N> CÎm{OV Vm hE na H$N> àË`Îma {XE {~Zm hr dmng _SZ bJ¡& CÎma-àË`Îma H$s आवाज नीचे खड़े श्रावकों के कानों में पड़ी। उनमें एक थे—बुधमलजी बैद। उन्होंने सीढ़ियों पर चढ़कर जोर से आवाज लगाई—'अरे पूनमचंद! तुम्हारे घर में `h MMm H$aZ dmbr H$mZ h¡?' nZ_MXOr H$N> O~md X, Cgg nd hr Pam I में से झांकते हुए सुजाणांजी ने कहा—'भाई! तुम्हारी बहन ही है। (क्योंकि वे बैद n[adma H$s ~Qr Wr) Våhmar BÀNm hm Vm AmT>Zm H$mMbr XZm, Zht Vm _V XZm¡& ghr ~mV H$m H$hZ _ Sa {HgHm¡?' VÌñW bmJ gOmUmOr H$s ñnîQm{º$ g ñVãY ah JE¡&

àgJ Xer-{dbm`Vr {dJh H$m

Cg g_` Wbr àXe H$ Amgdmb g_mO _ Xer (IrgK) Ama {dbm`Vr H$m {dJh Mb ahm Wm¡& Bgr {dJh H$mb _ I~MXOr ZmhQm (gOmUmOr H$ n{V) H$m amOboXga _ Agm_{`H$ {ZYZ hm J`m¡& I~MXOr AnZ {nVm H$ EH$_Ì nÌ W¡& CZH$ {ZYZ H$ ~mX ZmhQm n[adma Z ~h gOmUm Ed nÌr BÝÐm H$m _m_mga ~bmZm C{MV g_Pm naÝV, ~bmZ _ g~g ~Sr AS>MZ `h Wr {H$ _m_mga H$m ZmhQm n[adma Cg g_` IrgK JQ> _ {JZm OmVm Wm Ama I~MXOr H$m n[adma ~Jmb _ àdmg H$aZ H$ H$maU {dbm`Vr JQ> _¡& XmZm H$m _b H$aZm gm_{OH$ {damY H$m Ý`mVm XZm Wm¡& A~ Š`m {H$`m OmE¡? Jbm~MXOr Cg g_` ZmhQm n[adma _ g~g ~S> W¡& H$garMXOr, MmW_bOr, eaghOr Am{X g^r ^mB`m Z EH$ ñda g कहा—'भाई साहब! आप सबसे बड़े हैं। जैसा उचित समझें वैसा करें। हम सब AmnH$ gmW h¡&' Jbm~MXOr Z H$m\$s gmM-{dMma H$ ~mX IrgK d {dbm`Vr {dJh H$s nadmh {H$E {~Zm {Z^`Vm ndH$ H$X_ CRm`m¡& CÝhmZ

~h gOmUm VWm ~m{bH$m BÝÐm H$m _m_mga ~bmZ H$m {ZíM` ì`º$ {H$`m&

g`mJde Jbm~MXOr H$s gnmÌr C_amd~mB VWm CZH$ n{V nZ_MXOr Cgr {XZ AnZ gmb l ~MXOr H$s _Ë` na emH$ ì`º$ H$aZ Am` W& CÝht H$s H$ma H$m ~h gOmUm VWm ~m{bH$m BÝÐm H$m bmZ amObXga ^Om J`m& O~ _m-~Qr gH$eb _m_mga nhM JB V~ nZ_MXOr gaXmaeha bmQZ H$ {bE CVmdb H$a ah W& H$N> g_` éH$Z H$m AmJh H$aV hE परिवारजनों ने कहा—'कंवर साहब! अभी तो आप पधारे ही हैं। भोजन-पानी भी Zht {b`m& Cgg nhb OmZ H$s BVZr OëX~mOr Š`m H$a ah h?' nZ_MXOr ने कड़कते हुए कहा—'अगर बेटी को पानी पिलाना हो तो जीवन भर पीहर ही a l Zm hmJm& `m Vm {dbm`Vr nÌdY Ka _ nmZr nr`Jr `m AmnH$s ~Qr& ~Qr H$m a l Zm hm Vm ~h H$m ^O Xr{OE Ama ~h H$m a l Zm hm Vm _P admZm H$s{OE& \$gbm AmnH$ hmW _ h& Ogm Mmh dgm H$a&'

EH$ jU H$ {bE g~ AdmH$ hm JE& Jbm~MXOr H$ gm_Z Y_ gH$Q> की स्थिति थी—जंवाई जाए तो कर्मचंदजी नाराज और बेटी को घर में रखकर ~h H$m Z bmE Vm ZmhQm n[admam H$s à{VîRm na AmM AmE& Bg n[apñW{V _ ^r Jbm~MXOr Z ~Sr ~{Õ_Îmm g H$m_ {b`m& nÌr H$s nadmh Z H$aV hE nÌdY H$m Ka _ bmE Ama ~Qr-OdmB H$m {~Zm nmZr {nbmE hr gaXmaeha H$s Ama admZm H$a {X`m& hmbm{H$ CÝh g_mO H$m H$Sm {damY ghZm nSm na d AnZ {ZU` na AQb ah&

3. AZamJ g {damJ H$s Ama

OrdZ _| H$N> Egr AH$pënV Ama A{MpÝVV KQ>ZmE§ KQ>Vr h¢ O‹m _mZd _Z H$m AZm`mg EH$ ZB© {Xem X OmVr h¢& n{V-{d`mJ H$s Bg KQ>Zm Z {MÝVZ H$ àdmh H$m Z`m _mS> X {X`m& ggma H$s j U^JaVm CZH$s Am I m| H$ सामने नाचने लगी। उन्होंने देखा—

Š`m ^amgm h {OÝXJmZr H$m&
AmX_r ~X~Xm h nmZr H$m&&

ggma H$ n[adVZerb ñdê$n H$m {MÝVZ H$aV H$aV CZH$s ^mdYmam AÝV_ I r hm JB©& AZamJ {damJ _| ~Xb J`m& OÝ_ Ama _Ë` H$s A{dpÀN>Þ ûm I bm g _º$ hmZ H$s {Xem _| CZH$ MaU J{V_mZ hm CR&
उन्होंने अनुभव किया—संयम ही मोक्ष का साधन है। दिन रात संयम-पथ को JhU H$aZ H$m gnZm CZH$s Am I m| _| VaZ bJm&

A j a kmZ H$s H${RZ `mÌm

_Z H$s YaVr na CJm hAm gnZm ÑT> gH$ën ~Z J`m& gH$ën H$s n{V H$ {bE d nUV… H${Q>~Õ hm JB©& {MÎm-{h_mb` g àdm{hV {ZdX H$s A{dH$b Ymam _| {dah-ì`Wm H$m nH$ YbH$a EH$X_ gm\$ hm J`m& AnZ damé` H$m Ama A{YH$ nîQ> ~ZmZ H$ {bE d H$N> Vm{ËdH$ kmZ A{OV H$aZm MmhVr Wr na Aj a-kmZ H$ A^md _| CÝh| gr I Z _| H${RZmB© _hgg hm ahr Wr& Bg H${RZmB© H$m Xa H$aZ H$ {bE CZH$ _Z _| gm j a ~ZZ H$s Vrd A^rßgm OmJ CR>r& Bg A^rßgm H$s n{V A~ H$g H$s Om` `h H${RZ g_ñ`m Wr& _Zî` H$m gH$ën-~b O~ OmJVm h V~ g_ñ`m H$m g_mYmZ स्वतः निकल आता है। सच ही कहा है किसी कवि ने—

dm H$mZ gm CH$Xm, Om dm hm Zht gH$Vm&
{hå_V H$a BÝgmZ, Vm Š`m hm Zht gH$Vm&&

gOmUmOr Z ^r AnZ _{V H$meb g EH$ Cnm` T>T> {b`m& CZH$ Ka

H$ ng SŠQa ZXa_Or e_ ahV W& CZH$s nËZr AÀNr nTr {b I r CXa_Z _{hb Wr& gOUOr Z AnZ {dZ_ Aa {_bZga ì`dha g CÝh nTZ H$ {bE aOr H$a {b`& d h_e dh nTZ H$ {bE OZ bJr& JhñW OrdZ H$ g_J X{`Ed H${ZdhZ H$aV hE ^r d A j a kZ H$ {bE H$N g_` {ZH$b bVr& {ZaÝVa Aä`g, à~b néf W Ed Vrd BÀNe{º$ g CÝhZ A j a-kZ A{OV H$a {b`& d Añ I{bV ê$n g nñVH$ nTZ VW H$JO A{X {b I Z _ g j_ h JB&

Eg gr I VÎdkZ

gOUOr H$ ~MnZ g hr VÎdkZ gr I Z H$s é{M Wr& da` hZ H$ ~X à{Vnb kZaYZ H$aZ hr CZH$ OrdZ H$ EH$ bú` ~Z J`& gÜd` H$s g{Þ{Y _ CÝhZ AZH$ WH$S H$RñW H$a {bE& Bg ~V H$ nV CZH$ Xda nZ_MXOr SJ (ZUX H$ga~B H$ {ÛVr` nÌ) H$ bJ& उन्होंने क्रोधित स्वरों में कहा—कोई जरूरत नहीं साध्वियों के ठिकाने जाने की। gOUOr ~hV ~{Õ_Vr Ed ghZerb _{hb Wr& d ñd` H$ {H$gr H$s CÎOZ H$ {Z{_Î Zht ~ZZ MhVr Wt Bg{bE CÝhZ {RH$Z AZ OZ H$_ H$a {X`& Ka _ hr nM-Nh g_{`H$ H$a bVr& gÜd` g O H$N nTVr, d Cg Ka na `X H$a bVr& Xga {XZ g~h gÜd` H$ XeZ H$aZ OVr V H$RñW kZ gZ XVr Aa ZE nR nT bVr& Bg àH$a bJ^J nM df VH$ CZH$ gr I Z {MVaZ H$ {Z`{_V H$_ Oar ah& Bg Ad{Y _ AnZ B¸$g VËdH$ WH$S, {d{dY ì`»`Z VW gH$S naZr Tb H$RñW H$a br& gr I Z {MVaZ H$ gW An Ka H$ ha ~ƒ _ g_{`H$, gV-XeZ, _b \$aZ, Ë`J àË`»`Z H$ e^ gñH$a ^aVr& _ H$ da`nU OrdZ H$ à{V{~å~ ~{bH$ BÝXa H$ ñdÀN _Zg XnU na nS& dh ^r _ H$ gW Xrj bZ H$ CÚV h JB&

`h ea H$s J\$ _ ahr hB h

EH$ ~a gOUOr AnZr MMr gg (H$_MXOr ZhQ H$s nËZr) H$ gW gaXaeha _ H$bJUr H$s CngZ H$a ahr Wr& CngZ H$ àgJ _ कर्मचंदजी की बहू ने आचार्यवर से निवेदन किया—गुरुदेव! मेरा व्रत निपजाएं। पास में ही मुनि मगनलालजी खड़े थे। उन्होंने विनोदी लहजे में कहा—पन्नूं की _! Våham n[ada ~hV ~S h& ~Q, nVm, nVr _ g {HgH dV {ZnOE& nÞbलजी की मां ने तत्काल कहा—गुरुदेव! वह भी तैयार है।

आचार्यवर ने पूछा—बोलो, कौन तैयार है। पन्नालालजी की मां ने सस्मित कहा—'एक तो मेरी देवरानी (साध्वी सुजाणांजी) और दूसरी देवरानी की लड़की BÝÐmB (gmÜdr AmZÝXH$_marOr)Ÿ& JéXd Z àgÞVm ì`º$ H$aV hE फरमाया—प्रकृति कैसी है? पन्नालालजी की मां ने बड़ी दृढ़ता के साथ कहा—गुरुदेव! प्रकृति के बारे में आप निश्चिन्त रहें। मेरी देवरानी शेर की गुफा _| ahr hB h Ama BÝÐmB A^r Zm gmb H$s ~ƒr hŸ& `h Vm H$ƒr {_Å>r hŸ& Amn Bg Og Tmbj dg Tb OmEJrŸ& `h ^jd emgZ jra g_Ð H$ g_mZ CÁÁdb Ed JJm H$s Ymam H$ g_mZ {Z_b hŸ& Bg emgZ _| AmH$a dh ñdV… gñH$mar ~Z OmEJrŸ&' `h gZ AmMm`da H$m ~Sm gVmf hAmŸ&

Xrjm H$s àmWZm

{d. g. 1988 _| AmMm` H$mbJUr H$m amObXga _| nXmnU hAmŸ& Cg g_` dhm EH$ gmW VrZ dam{JZ| Xrjm bZm MmhVr WrŸ& gmÜdr gOmUmOr, CZH$s nÌr BÝÐm Ed ZmZXr BMaO (H$mSm_b SmJr H$s nÌr)& EH$ {XZ gÌ H$ ì`m»`mZ H$ g_` _| C{MV Adga XI _m_mga H$ ZmhQm Ed amObXga H$ SmJm XmZm| n[admam| Z VrZm| H$s Xrjm H$s naOma AO H$sŸ& AmMm`da Z IndH$m| H$s AË`{YH$ AO na BMaO H$s Xrjm H$s KmfUm H$a Xr {H$ÝV gOmUmOr H$s, Om BMaO g ~hV nhb hr Xrjm bZ H$ CÚV Wr, Xrjm Zht \$a_mBŸ& XmZm| n[admam| Ed g^r Jm_dm{g`m| Z gOmUmOr H$s Xrjm H$ {bE AË`ÝV AmJh {H$`m {H$ÝV AmMm`da Z Xrjm H$m AmXe Zht {X`mŸ& gOmUmOr H$m _Z H$m\$s ~MZ hm J`mŸ& g`_ H$ {~Zm CÝh| EH$ EH$ jU ^mar àVrV hm ahm WmŸ& {OgH$m _Z ggma g {da$ hm OmVm h Cg ggma H$mamdmg H$s Vah bJVm hŸ& RrH$ `hr pñW{V gOmUmOr H$s hm ahr WrŸ&

nm[adm[aH$OZm| Z ^r WmS>-WmS> AVamb H$ ~mX _m-nÌr H$s Xrjm H$s àmWZm H$s {\$a ^r Xrjm H$m AmXe Zht {_bmŸ& nm[adm[aH$OZm| Z सोचा—शायद हमारी अर्ज में कुछ कमी है इसीलिए गुरुदेव मर्जी नहीं करवा रहे hŸ& CÝhmZ Xga {XZ ~Sr g»`m _| CnpñWV hmH$a IrMaUm| _| na Oma-ema H$ साथ अर्ज की। आचार्यवर ने तब कुछ कड़े शब्दों में फरमाया—'अभी क्या OëXr hŸ? g_` AmZ na Xrjm AnZ Amn hm OmEJrŸ& JéXd H$ _Ima{~ÝX g ` eãX gZH$a g~ _mZ hm JEŸ& gOmUmOr H$ {bE `h pñW{V Agø ~Z JBŸ& n{V-{d`mJ H$s {dH$Q> KSr _| ^r CÝh| BVZr dXZm Zht hB {OVZr {H$ Xrjm H$s KmfUm Z hmZ g hm ahr WrŸ& AnZr ~MZr H$m Xa H$aZ H$ {bE

CÝhm|Z H$B AQ>H$b| bJmB na H$mB ^r Cnm` H$m_`m~ Zht hm gH$m & Am{I a EH$ {XZ d gmÜdr P_H$Or (N>Rr gmÜdrà_wI m) H$ nmg JB© & EH$mV _| साध्वी साध्वी झमकूजी से निवेदन किया—'आप कृपा कर आचार्यश्री को मेरी Xr jm H$s AO H$amE© & Amn hr _ar ^mdZm nar H$adm gH$V h© & AmnH$s H$nm hmJr Vm _am H$m_ Adí` ~Z OmEJm&'

_m ~Qr gmW hr Xr jm b bZm

gmÜdr P_H$Or ~hV H$éUmerb Wr© & CÝhm|Z ~{hZ gOmUmOr H$m आश्वस्त करते हुए कहा—'तुम दीक्षा के लिए इतनी उतावली क्यों हो रही हो? Våhmar Xr jm _| qH${MV ^r gXh Zht h {H$ÝV.........©&'

"{H$ÝV {\$a Š`m|? ~g Bgr àíZ H$m CÎma nmZ H$ {bE _| AmnH$ nmg AmB h| _hmamO©!©&' ~{hZ gOmUm Z gmÜdr P_H$Or H$ nmd nH$S>V hE H$hm©&

साध्वी झमकूजी ने विश्वास भरे शब्दों में कहा—किन्तु परन्तु का उत्तर `hr h {H$ BÝX A^r NmQ>r h, Våhma Xr{jV hmZ H$ ~mX Bg gr I Z-{MVmaZ H$ {bE ~ma-~ma H$mZ à[aV H$aJm Ama H$mZ _m H$ {OVZm Ü`mZ a I Jr©? BÝX WmS>r Ama ~S>r hm OmE Vm _m ~Qr gmW hr Xr jm b bZm© & `{X H$db Våh| hr Xr jm bZr hm Vm Xr jm H$^r hm gH$Vr h naÝV BÝX H$s ^r Xr jm H$s ^mdZm hm Vm H$N> g_` àVr jm H$am©&' `h gZ ~{hZ gOmUm H$m _Z AmídñV hm J`m© & gmÜdr P_H$Or H$s ~mV _mZH$a ~{hZ gOmUm Z JhñW OrdZ _| H$ar~ Xm df Ama {~Vm`© &

Xr jm H$m AmXe

Og Og g_` H$m MH$ K_ ahm Wm dg dg _m ~Qr H$ ^mì` H$m MH$ ^r K_ ahm Wm© & {d. g. 1990 _| AmMm` I r H$mbJUr H$m nZ… amObXga में पदार्पण हुआ। बहिन सुजाणां ने सोचा—अब इन्द्रा भी बड़ी हो गई है और JéXd H$m ^r ghO hr `hm nXmnU hm J`m h Š`m| Z EH$ ~ma nZ… H$m{ee H$s OmE© & nm[adm[aH$OZm| Z ^r Bg C{MV Adga _mZm© & CÝhm|Z I r MaUm| _| naOma Xr jm H$s àmWZm H$s© & ZmhQ>m Ed S>mJm XmZm| n[adma| H$ à_I ì`{º$`m| H$ {def {ZdXZ na AmMm` I r Z AË`ÝV AZJh H$a _m-~Qr XmZm| H$m Xr jm H$m AmXe àXmZ H$a {X`m© & Xr jm H$m AmXe àmá hmV hr gmÜdr gOmUmOr Ed BÝÐm H$m am_-am_ nbH$ CR>m© & XmZm| Z gmÜdr P_H$Or g ñdën g_` _| I _U à{VH$_U gr I {b`m©&

gOmZJT> _ Xrjm _hmËgd

{d. g. 1990 _ AmMm`Ir H$mbJUr H$m MmV_mg gOmZJT> _ Wmï& gOmUmOr, BÝÐm Ed H$_MXOr ZmhQm H$s ~h AmMm`da H$s g_mgZm H$ {bE gOmZJT> nhMï& gOmUmOr Z gmÜdr P_H$Or g Xrjm {V{W H$s घोषणा हेतु प्रार्थना की। साध्वी झमकूजी ने हास्य मिश्रित स्वरों में कहा—'रीते gmdU _ Š`m Xrjmï? ^mXdm ^am hmVm h AV... ^mXd _ XIJï&' gOmUmOr ~g~r g ^mÐd _mg H$s àVrjm H$aZ bJrï& EH$-EH$ {XZ H$aV-H$aV gmdU _hrZm ~rV J`mï& ^mÐd _mg àma^ hAm, bú` n{V H$ jU gm_Z AmE Vm CÝh _b[a`m ~Ima MT> J`mï& ~Ima Z Egm nrNm nH$Sm {H$ H$^r _m Ama H$^r ~Qr H$s ~mar MbVr ahrï& H$ar~ Xm _hrZ ~Ima _ hr na hm JEï& gOmUmOr gH$ën H$s YZr Wrï& d OmZVr थी—'श्रेयांसि बहु विघ्नानि'—कल्याणकारी कार्यों में कहीं न कहीं से विघ्न आ hr OmV hï& gOmUmOr Z ÑT> {ZíM` H$a {b`m {H$ Bg ~ma Mmh H$N> ^r hm, Xrjm {V{W H$s KmfUm hE {~Zm `hm g OmD$Jr hr Zhtï&' AnZ {ZíM` H$ AZgma d nZ... AnZ Ka Zht JBï& JéXd H$s gdm _ VrZ _hrZ ~rV JEï& Xer Xdm H$ AmgdZ ~Ima EH$X_ RrH$ hm J`mï& H$_MXOr H$s ~h Z nZ... XdamZr gOmUmOr VWm BÝÐm H$s Xrjm H$s AO H$sï& AmMm`da Z AË`ÝV AZJh H$a gOmZJT> _ Xrjm _hmËgd H$s KmfUm H$sï& g^r nm[adm[aH$OZ gOmZJT> _ EH$[ÌV hEï& AmnH$ Xrjm _hmËgd H$ Cnbj _ H$_MXOr H$s ~h Z na Jmd H$m ^mO {X`mï& AË`ÝV CËgmhnU dmVmdaU {d. g. 1990 H$m{VH$ H$îUm Zd_r H$m àmV...H$mb H$s e^ ~bm _ qgKrOr H$ _{Xa _ AîQ>_mMm` H$mbJUr H$ H$a H$_bm g Zm Xrjm{WZr ~{hZm H$ gmW AmnH$s Xrjm gmZÝX gånÞ hBï&

g`_-nW ñdrH$ma H$a gmÜdr gOmUmOr Z AnZr b{jV `mÌm H$m EH$ nSmd V` H$a {b`mï& EH$ _hmZ AZemñVm H$s NÌ Nmh _ ñd` H$m gdmË_Zm g_{nV H$a Jhar {ZpíMÝVVm H$s AZ^{V H$sï& _m Ama nÌr Xb^ g`_ aËZ H$s gajm _ OrdZ H$ EH$-EH$ H$s_Vr jU H$m OmJêHVm g {~VmZ bJrï&

4. Jé-g{Þ{Y _ VrZ MmV_mg

OrdZ H$ {Z_mU _ JéH$bdmg H$m {def _hÎd hmVm hï& gmÜdr gOmUmOr H$m ~mdZ dfm H$ bå~ g`_r OrdZ _ VrZ ~ma JéH$bdmg H$m gm^mh` gàmá hAï& Xrjm bV hr AmnZ àW_ MmV_mg AmMm`lr H$mbJUr H$ gmW {H$`mï&

{d. g. 2017 _ VamnW {ÛeVmãXr g_mamh H$ Cnbj _ AmMm`lr Vbgr H$m MmV_mg amOZJa Wmï& Cg df AZH$ ~{h{dhmar qgKmSm H$m amO _ alm J`m, Bgr H$_ _ AmnH$m ^r gmÜdr gOZmOr (~rH$mZa) H$ gmW JéH$bdmg H$m gm^mh` gàmá hAï&

{d. g. 2028 bmSZ gdm H$ÝÐ _ gmÜdr AmZXH$_marOr (_m_mga) Ed gmÜdr am`H$_marOr (amObXga) H$s MmH$ar Wrï& Amn ^r Cg g_` dht Wrï& g`mJ g Cgr df AmMm`lr Vbgr H$m MmV_mg ^r bmSZ _ Wmï& AV... ghO hr AmnH$m Jé-gdm H$m Adga àmá hm J`mï&

BgH$ A{V[aº$ AZH$ ~ma _`mXm _hmËgd H$ Adga na ^r Jé MaUm H$s g_nmgZm H$m _mH$m {_bmï& O~-O~ AmnH$m JéH$bdmg H$m gAdga àmá hmVm, Amn AnZr j_VmZgma g_ƒ` H$ {gbmB, aJmB, dñÌ-nmÌ àjmbZ Am{X {d{dY H$m`m _ AmJ ahVrï& JéXd H$ {damOZ H$m ñWmZ ^b hr {H$VZr Xa Š`m Z hm {H$ÝV Amn XeZ, CnmgZm Ed àdMZ ldU H$m nam bm^ bVrï& dÕmdñWm VWm emar[aH$ X~bVm H$s pñW{V _ ^r Amn amñV _ Xm-VrZ {dlm_ bH$a {RlH$mZ nhM OmVrï& BVZr Xa MbH$a OmZ g AmnH$m बहुत थकान आ जाती तब सहवर्ती साध्वियां आप से निवेदन करती— gmÜdrlrï! AmOH$b AmnH$m ñdmñÏ` H$m\$s H$_Oma hm J`m h AV... Amn EH$ ~ma hr nYma Om`m H$a {H$ÝV gmÜdr gOmUmOr H$s Jé ^{º$ BVZr à~b Wr {H$ {H$gr ^r hmbV _ d Jé g{Þ{Y H$m gAdga NmSZm Zht MmhVm Wrï& Jé H$m Zm_ bV hr CZH$ H$X_m _ ZB ñ\${V gr Am OmVrï&

5. ~{h{dhma Ama nX`mÌm

dm` H$s Vah bK^V Ed Aà{V~Õ hmH$a {dhaU H$aZm OZ _{Z H$m A I ÊS OrdZ dV h¡& Bg OrdZ-dV H$s AZnmbZm H$aV hE gmÜdr gOmUmOr Z {ZaÝVa g`_-`mÌm _| AnZ MaUm| H$m AmJ ~T>m`m h¡& CÝhmZ 30 df H$s ^ar OdmZr _| Xrjm JhU H$s h¡& Xrjm bZ H$ ~mX bJ^J Añgr df H$s C_ VH$ AmnZ ^maV H$ AZH$ àmÝVm| _| {dMaU H$a OZ-OZ H$m AmÜ`mpË_H$ à{V~mY {X`m h¡& _Ü`àXe, h[a`mUm, nOm~, amOñWmZ Am{X àmÝVm| H$ {d{^Þ j Ìm| H$m ñne H$aV hE bJ^J 26 hOma 468 {H$. _r. H$s nX`mÌm H$s h¡& AmnH$ ~{h{dhma H$m àgJ ^r EH$ {def KQ>Zm g OS>m hAm h¡&

{d. g. 1991 _| AmMm`Ir H$mbJUr _dmS> àXe H$s `mÌm H$adm ah W¡& Cg df XmbVJT> _| {H$gr H$m MmV_mg Zht Wm¡& ~{h{dhmar g^r gmY gmpÜd`m| H$ MmV_mg Km{fV hm MH$ W¡& XmbVJT> H$ ImdH$m| H$ {def {ZdXZ na AmMm`da Z gmÜdr gOZmOr (~rH$mZa) H$m Z`m qgKmS>m ~Zm`m Ama gOmUmOr, gmÜdr AmZÝXH$_marOr VWm gmÜdr nmZH$daOr (amOJT>) H$m CZH$ gmW ^O {X`m¡& gmpÜd`m| H$ MmV_mg g Jmd _| AÀNm CnH$ma hAm¡& MmV_mg gånÞ hmV hr gmpÜd`m| Z AmMm`da H$ nZ… XeZ {H$E¡& AmMm`da Z àgÞ hmH$a gmÜdr gOZmOr H$m AJUr H$ ê$n _| hr {dhaU H$aZ H$m {ZXe {X`m¡& gmÜdr gOZmOr H$ gmW AmnZ 27 MmV_mg {H$E¡& CgH$ ~mX {d. g. 2017 _| AmMm`Ir Vbgr Z gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$m AJJÊ` ~Zm {X`m¡& gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$ gmW AmnZ 25 MmV_mg {H$E¡&

6. gmYZm_` OrdZ H$ {d{dY Am`m_

kmZmOZ H$s bJZ

gmÜdr gOmUmOr H$ _Z _| kmZmOZ H$s Vrd bJZ Wr& AnZr Bgr bJZ H$ H$maU d gmjm ~Zt& ñ_{V-e{º$ H$m {dH$mg {H$`m& CÚ_ H$aV H$aV CZH$s ñ_aU-e{º$ ^r VO hm JB©&

JhñW OrdZ H$s KQ>Zm h¡& EH$ ~ma AmMm` H$mbJUr H$m _m_mga _| nXmnU hAm& dhm AmMm`lr Z AmfmT> _{Z H$m amMH$ ì`m»`mZ \$a_m`m& gmÜdr gOmUmOr VWm nlr BÝÐm Z ^r ì`m»`mZ gZm& CÝh| dh ì`m»`mZ ~hV AmH$fH$ bJm& XmZm| Z EH$ hr {XZ _| nam ì`m»`mZ H$R>ñW H$a gZm {X`m& bJ^J EH$ hOma nÚ à_mU "YZ Or M[aÌ' Zm_H$ ì`m»`mZ ^r CÝhm|Z JhñW OrdZ _| hr H$R>ñW H$a {b`m& Bgr àH$ma em{VZmW M[aÌ, dra MmTm{b`m, em{VZmW ñVdZ, AmamYZm, Mm~rgr, {d¿ZhaU, _{UÝX _mam Am{X H$B Tmb| VWm AZH$ WmH$S> JhñWmdñWm _| hr H$R>ñW {H$E&

T>bVr d` _| bJ^J 13000 nÚm| H$m H$R>ñW H$a AmnZ AÀNr ñ_aUe{º$ H$m n[aM` {H$`m& ~hYm ì`{º$ `h gmMH$a gr¶Zm N>mS> XVm h {H$ _| ~Tm hm J`m h, A~ Vm gr¶Z H$s C_ ^r Mbr JB na, AmnH$m Bg {MÝVZ _| {dídmg Zht ahm& dÕmdñWm hmZ na ^r kmZàm{á H$ à{V AmnH$ _Z _| à~b CËH$R>m Wr& Amn Z H$db kmZmamYZm _| gb¼Z ahVr A{nV gnH$ H$ AmZ dmbr ~hZm| H$m ^r VmpËdH$ kmZ gr¶Z H$s àaUm XVr Am à`ËZdH$ CÝh| {gIm Z _| ^r ag bVr& {d. g. 2023 Ogmb (_madmS>) MmV_mg _| CÝhm|Z bJ^J 50 ~hZm| H$m nƒrg ~mb {gIm E& CZH$m AmXe सूत्र था—

Om gr¶m Amam| H$m {gIm V Mbm&
XrE g Xr`m ObmV Mbm&&

gmÜdr gOZmOr H$m gÌ gZZ H$m ~hV emH$ Wm& Cg O_mZ _| AmJ_

H$s à{V`m ghO gb^ Zht Wr& gmÜdr AmZÝXH$_marOr `Ì-VÌ à{V`m H$s
lmO _| ahVr Wr& ZmWÛma MmV_mg _| CÝhmZ gmÜdr gOZmOr H$m Xm ~ma
~Îmrg AmJ_m| H$m dmMZ H$aH$ gZm`m& gmW _| gmÜdr gOmUmOr Z ^r Xm
~ma ~Îmrgr gZr&

AmnH$s gm{hË` dmMZ _| ^r Jhar é{M Wr& {d. g. 2042 VH$
AnZ bJ^J nVrg hOma nîRm| H$m dmMZ {H$`m& `Ú{n amOñWmZ _| OÝ_
bZ H$ H$maU AmnH$s _»` ^mfm amOñWmZr Wr {H$ÝV {ZaÝVa Aä`mg H$aV
H$aV eÕ {hÝXr {blZ-nTZ Ed ~mbZ _| ^r AmnZ XjVm àmá H$a br&
h[a`mUm-nOm~ AmnH$s `mÌm H$ XmamZ AmnZ h[a`mUdr Ama nOm~r
^mfm _| Ãnl{bV ê$n g ì`m»`mZ XZm grl {b`m& Amn àm`… {hÝXr ^mfm
_| EH$-EH$ KÊQm VH$ _Ü`m• H$mbrZ àdMZ XVr Wr& AmnH$s ì`m»`mZ-
ebr agmË_H$ Ed {ejmàX Wr& AmnH$m AZH$ AmnX{eH$ Jr{VH$mE,
íbmH$, Xmh, nÚ Am{X H$RñW Wo& ì`m»`mZ H$ ~rM _| àgJmZgma Amn
{d{^Þ àaH$ nÚm d H$hm{Z`m| H$m à`mJ H$aVr Wt, {OÝh gZH$a lmVm
^md{d^ma hm OmV&

ñdmÜ`m`-é{M

H$RñW H$aZ g ^r A{YH$ H${RZ H$m_ h HRrHV kmZ H$m n¸$m
alZm& dhr ì`{º$ kmZ H$m n¸$m al gH$Vm h Om {Z`{_V ê$n g ñdmÜ`m`
H$aVm h& gmÜdr gOmUmOr H$m ~mVm| _| g_` ~~mX H$aZm H$^r A^rîQ Zht
Wm& d Xm Mma {_ZQ ^r H$ht lSr ahVr Vm EH$ Jr{VH$m H$m nZamdVZ H$a
bVr& ñdmÜ`m` CZH$ OrdZ H$m A[^Þ AJ Wm& gÌ H$s ñdmÜ`m` _| CÝh|
AË`{YH$ ag AmVm Wm& d à{V{XZ bJ^J EH$ hOma nÚm| H$s ñdmÜ`m`
H$aVr Wr&

gmÜdr gOmUmOr H$m àma^ g hr ñdmÜ`m` _| BVZm AmZÝX AmVm Wm
{H$ ~mha H$s hbMb g ^r CZH$s MV{gH$ EH$mJVm ^¾Z Zht hmVr& JhñW
OrdZ H$s KQZm h& _m_mga _| Jbm~MXOr ZmhQm H$ nmÌ nÞmbmbOr H$
{ddmh H$m àgJ Wm& {ddmh H$ Cnbj _| amÌr _| ZË` H$m Am`mOZ {H$`m
J`m& H$eb ZVH$-ZV{H$`m| H$m ZË` hV ~mha g ~bm`m J`m& Jmd H$ àm`…
g^r bmJ Bg ZË` H$m XlZ H$ {bE CnpñWV W& Cg g_` gOmUmOr AnZ
e`Z H$j _| bmbQZ H$ àH$me _| VÎdkmZ H$s nñVH$ nT ahr Wr& ZmQH$
gånÞ hmZ H$ níMmV {H$gr H$m`de nÞmbmbOr Z Cg H$_a _| àde {H$`m&

वे सुजाणांजी को अध्ययन करते देख दंग रह गए। उन्होंने साश्चर्य पूछा–"HmHsOr! BVZm ~{T>`m ZmQ>H$ hm ahm Wm, AmnZ Š`m Zht XIm? ñdmÜ`m` Ama gm_m{`H$ Vm ~mX _ ^r hm gH$Vr Wr na ZmQ>H$ Vm AmO hr XIZ Ogm था।' सुजाणांजी ने सहज भाव से कहा–'पन्ना! नाटक तो जीव ने अनन्त बार XIh na, Š`m H$^r V{á {_br hr? Vpá Vm Ë`mJ _h, ^mJ _ Zht& Om AmË_m H$m ZË` XIVm h dh ~mha H$m ZmQ>H$ Š`m XIr? ZmQ>H$ Zht XIm Vm H$mB ZH$gmZ Zht hAm {H$ÝV `h g_` AJa à_mX _ Mbm OmVm Vm {H$VZm ZH$gmZ hm OmVmr?' nPmbmbOr Bg CÎma H$m gZ AdmH$ hm JE&

gn ^r ñdmÜ`m` gZZ Am`m h

{d. g. 1995& bUH$aUga MmV_mg H$s KQ>Zm h& EH$ ~ma gmÜdr gOmUmOr amÌr _ Mm~rgr (O`mMm`H$V 24 VrWH$am H$s ñV{V) H$m ñdmÜ`m` H$a ahr Wr& Cgr g_` EH$ ~hZ CZH$ XeZ H$aZ Am`r, dh ^r gmÜdrIr H$ gmW Mm~rgr {MVmaZ bJr& Mmam Ama gKZ AÝYam Wm& AMmZH$ gmÜdr gOmUmOr H$ na na H$mB OmZda gm MTm& CÝhmZ à_mOZ H$a hmW g EH$ Va\$ gaH$m {X`m& WmSr Xa ~mX {\$a dhr OmZda nam na aJZ bJm {\$a ^r gmÜdr gOmUmOr VÝ_`Vm g ñdmÜ`m` H$aVr ahr& Mm~rgr nar चितारने के बाद साध्वीश्री ने उस बहिन से कहा–'लगता है, कोई उरपर जाति H$m OmZda gdm H$a ahm h na AYa _ {XImB Zht X ahm hr&' ~hZ VËH$mb ~mha g bmbQ>Z bH$a AmB& XIV hr dh ñVãY ah JB {H$ EH$ ~Sm H$mbm ZmJ gmÜdr gOmUmOr H$ nam na ~Rm h Ama d pñWaVm g ~Rr ñdmÜ`m` H$a रही हैं। बहिन ने कुछ हल्ला मचाना शुरू किया–'अरे! इस सांप को पकड़ो।' साध्वी सुजाणांजी ने निर्भीक स्वर में कहा–'नागराज तो स्वाध्याय सुनने आए हैं, CÝh {~Zm _Vb~ Š`m nH$S> ah hm? ` Vm AnZ Amn Mb OmEJ&' gmÜdrIr Z Á`mhr _Jb nmR> gZm`m, H$mbm gn Z OmZ H$hm AÑí` hm J`m& CnpñWV bmJ Bg Ñí` H$m XI {dñ_` {d_½Y W&

ñdmÜ`m` H$aZ _ d BVZr VëbrZ hm OmVr Wr {H$ CÝh Xgar {H$gr MrO H$m Ü`mZ hr Zht ahVm& OrdZ H$ A{V_ Xm dfm _ AmnH$s emar[aH$ e{º$ H$m\$s jrU hm MH$s Wr& ñdV… ñdmÜ`m` H$aZm AeŠ` gm hm J`m {\$a ^r Amn gdmaV gmpÜd`m g ñdmÜ`m` gZVr ahVr& gmÜdr {~Xm_mOr (ntnbr) VWm gmÜdr ^rImOr (ntnbr), Om à`… AmnH$s Cnmgm _ ~Rr ahVr Wr, Z AmnH$m ñdmÜ`m` H$admH$a AmÜ`mpË_H$ gh`mJ {X`m&

On-gmYZm

gmYZm {g{Õ H$ Ûma na V~ VH$ XñVH$ Zht XVr O~ VH$ e{º$ H$m {dñ\$moQ> Zht hmVm h¡& On, Vn, Ü`mZ, _mZ Am{X e{º$-gdYZ H$ à`mJ h¢& gmÜdr gOmUmOr Z AnZr gmYZm H$m Ama A{YH$ n[anîQ> ~ZmZ H$ {bE On H$m Ambå~Z {b`m h¡& CÝhmZ "› [^j', "› A. ^r. am. {e. H$m Z_…', › A. {g. Am. C. gm. Z_…' Am{X _Ìm H$m H$B ~ma gdm bmI H$m On {H$`m h¡& {d¿ZhaU, _{UÝX _mam H$s Tmb VWm nmídZmW H$ NÝX H$m nZamdVZ {H$E {~Zm d _h _ nmZr VH$ Zht bVr Wr¡& EH$ ~ma CZH$ _Z _ gÌ H$ nÚm H$m OnZ H$s ^mdZm OJr¡& gmÜdr AmZÝXH$_marOr Z CZH$s ^mdZm H$m gmH$ma H$aZ H$ {bE AmJ_ gm{hË` g M`{ZV gmV à^mdembr JmWmE {g I mB,
जिनकी वे नित्य दस माला फेरती थी–

1. Yå_m _Jb_{¸$Æ, Aqhgm gO_m Vdmo¡&
   Xdm {d V Z_g{V, Oñg Yå_ g`m _Umo¡& XgdH$m{bH$
2. MBÎmm ^mah dmg, M¸$dÅr _{h{–Am¡&
   gVr gVr H$a bmE, nÎmm JB _UÎma¡&& CÎmamÜ``Z
3. Xd XmUd JYìdm, OŠ I aŠ I ñg {H$Þam¡&
   ~^`m[a Z_g{V, XŠH$a O H$a{V V¡&& CÎmamÜ``Z
4. MÎmm[a na_Jm{U, Xëbhmurh OVUm¡&
   _mUgÎm gB gÕm, gO_{_ ` dr[a`¡&& CÎmamÜ``Z
5. {gÕmU U_m {H$ƒ m, gO`mU M ^mdAm¡&
   AËW Yå_ JB Vƒ , AUgqÆ gUh _¡&& CÎmamÜ``Z
6. Z{_D$U Aga-ga, Jéb ^`J n[ad{XE¡&
   J` {H$bg A[ah, {gÕm`[aE CdÁPm` gìdgmh `¡&&
   MÝÐàk{ágÌ
7. gVr H$W Aahm, A[aÆZ{_ {OUX nmgm `¡&
   g_aVmU {Zƒ , gìd amJ nUmgB¡&&

On H$m à^md

भारतीय मंत्र साहित्य में एक वाक्य बहुत प्रचलित है–'अचिन्त्यो हि _{U-_ÌmfYrZm à^md…' AWmV _{U, _Ì Ama Amf{Y H$m à^md A{MÝË` hmVm h¡& {Z`{_V _Ì OnZ dmbm ^`H$a gH$Q> g ^r ~M OmVm h¡& Bg VÏ` gm jmËH$ma gmÜdr gOmUmOr Z ^r {H$`m Wm¡&

{d. g. 2011 H$s KQ>Zm h¡& g¶Üdr gOZm Or H$mJS>r (_dmS>) g gmbm Jrd _| nYma¡& gmbm JJmna H$ nmg NmQ>m gm Jm_ h¡& dhm Xmnha _| g¶Üdr AmZÝXH$_marOr H$m nM_r g{_{V OmZm nS>m¡& g¶Üdr gOmUmOr CZH$ gmW Wr¡& bmQ>V dº$ AMmZH$ {H$gr Am¡gar e{º$ H$m CnÐd hm J`m¡& g¶Üdr AmZÝXH$_marOr _pÀN>V hmH$a YaVr na {Ja nS>r¡& nam eara AJma H$s Vah VnZ bJm¡& g¶Üdr gOmUmOr H$m pñW{V H$m ^mnV Xa Zht bJr¡& CÝhmZ सोचा—यह रोग किसी औषधि से ठीक होने वाला नहीं है। एकमात्र जप ही BgH$m BbmO h¡& CZH$ _Z _| Z K~amhQ> Wr, Z Am¡gar e{º$ H$m ^`¡& d EH$mH$s Cg OJb _| nmídZmW H$ NÝX H$m Cƒ ñda g EH$mJVmndH$ Cƒ maU H$aZ bJr¡& Á`m¡hr g¶Üdr gOmUmOr Z NÝX nam {H$`m, g¶Üdr AmZÝXH$_marOr nU ñdñW hmH$a CR> I S>r hB Ama Yra-Yra MbH$a {R>H$mZ Am JB¡& `h Wm ÑT> gH$ën Ama VÝ_`VmnU {H$E hE On H$m à^md¡& g¶Üdr gOmUmOr Z O~ g¶Üdr gOZmOr H$m nar KQ>Zm ~VmB Vm d ~hV àgÞ Ed M{H$V hB¡&

I mÚ g`_

g¶YZm H$m àW_ gmnmZ h agZm {dO`¡& agbmbn ì`{º$ H$^r ^r g¶YZm Zht H$a gH$Vm¡& agZm H$m de _| H$aZm ~hV H${R>Z h¡& Om agZm na {dO` nm bVm h dhr AÜ`mË_ H$ ahñ`m| H$m CnbãY H$a gH$Vm h¡& g¶Üdr gOmUmOr Z I mÚ g`_ H$m {def Aä`mg {H$`m¡& I mÚ g`_ H$ Ûmam CÝhmZ VZ Ama _Z H$m g`_ gmYm¡& d A{YH$Va {hV, {_V Ama gmpËdH$ Amhma H$aVr¡& CÝh| Vbr ^Zr Ed H$B àH$ma H$s {_RmB`m| H$ Ë`mJ W¡& d I mZ _| H$_ g H$_ Ðì`m| H$m gdZ H$aVr Wr¡& ^mOZ H$ ~mX àha nM I bVr Wr¡& d à{V{XZ EH$ ZdH$magr, Xm KÊQ> H$ {V{dhma Ë`mJ Ed EH$ Mm{dhma VWm EH$ {V{dhma àha H$aVr Wr¡&

Vnñ`m H$aZm H${R>Z h na Cgg ^r A{YH$ H${R>Z h Amhma H$aV hE ñdmX {dO` H$s g¶YZm¡& O~ H$^r JmMar _| Añdm{XîQ> Ðì` Am OmVm V~ आप फरमाती—स्वामीजी ने दीक्षा से पूर्व उबले हुए केर का खारा पानी पिया Wm¡& `h dñV Vm BVZr H$S>dr h hr Zht¡& H$S>d _rR> H$s ^XaI m Vm Or^ H$aVr h¡& nQ> Vm ~Mmam H$N> H$hVm Zht, Egm gX{MÝVZ H$a d ghf Cg Ðì` H$m ^r JhU H$a bVr¡& O~ H$^r JmMar _| A{YH$ Ðì` Am OmVm Vm आप फरमाती—यह तो मुझे रुचिकर लगता है, यों कहकर आप अधिक द्रव्य को

भी खाकर उठा देती। उनका कहना था—सायी ‌I‌mE Vm ^r {ZOam Ama ^I‌m ah Vm ^r {ZOam& {\$a ghO bãY {ZOam H$ Adga H$m Š`m I‌m`m OmE? O~ कभी गोचरी में कम द्रव्य आते तब आप फरमाती—Vdm{Îm A{h`mgE—अच्छा hAm, ghO hr D$UmXar H$m _mH$m {_b J`m& Bg Vah H$_ `m A{YH$, स्वादिष्ट या अस्वादिष्ट—दोनों ही प्रकार की वस्तुओं को खाते समय उनका g_Vm ^md àm`… ~Zm ahVm Wm&

JhñW OrdZ H$s KQZm h& EH$ ~ma gmÜdr gOmUmOr AnZ Ka na ^mOZ H$a ahr Wr& BVZ _ AmnH$s ZZX (H$gaXdr) Z nrN g AmH$a AMmZH$ AmnH$s Wmbr _ Am_ag g ^ar H$Qmar Smb Xr& gmÜdr gOmUmOr H$m `h H$VB ngÝX Zht Wm na, ~Sr ZZX H$ gm_Z d H$N ~mb ^r Zht gH$s& `Ú{n CÝhmZ ^mOZ bJ^J nam H$a {b`m Wm, {\$a ^r CÝhmZ ZZX H$m gå_mZ a I Z H$ {bE RÊSr ~mOa H$s amQr H$ g I QH$S {^JmH$a Am_ag I‌m`m& Cg Am_ag H$m I‌mZ H$ VaÝV ~mX MmW IX H$m ^r Ë`mJ H$a {X`m& ZZX H$ga~mB H$m O~ Bg ~mV H$m nVm bJm Vm CÝh ~hV gdXZ hAm& उन्होंने भारी मन से कहा—'ऐसा पता होता तो मैं भाभी को आमरस परोसती ही Zht, na A~ Š`m hm gH$Vm h?'

सुजाणांजी ने मुस्कुराते हुए कहा—आप इस बात का इतना अफसोस क्यों H$a ahr h? AÀNm hr hAm, Amn Vm _a Ë`mJ ~TmZ _ gh`mJr ~Z h& ggma _ I‌mZ H$ {bE AZÝV nXmW h, CZ g~H$m Bg Or^ Z AZÝV ~ma I‌m`m h {\$a ^r Š`m Or^ H$m H$^r V{á hB h& dmñV{dH$ V{á I‌mZ g Zht, Ë`mJ g hr {_bVr h&' ^m^r H$ ` ~mb gZ H$ga~mB AË`ÝV à^m{dV hB&

Bg KQZm _ Ohm gmÜdr gOmUmOr H$ {da{º$_` gñH$ma H$m gmjmV hmVm h dhm CZH$m {dYm`H$ ÑpîQH$mU ^r n[ab{jV hmVm h& d AnZr BÀNm H$ à{VH$b àd{Îm _ ^r AnZm {hV I‌mO bVr Wr& {OgH$m {dYm`H$ ÑpîQH$mU hmVm h dhr Y_ H$ __ H$m nhMmZ gH$Vm h&

gmÜdr gOmUmOr H$m VZ X~b Wm {H$ÝV gH$ën e{º$ AQb Wr& CÝh {Og {V{W H$m Cndmg H$aZm hmVm, d HaH hr ahVr {\$a ^b {dhma hm `m ì`m{Y& CZH$m gH$ën {Z{dH$ën Wm& H$B ~ma Eg àgJ AmE O~ CÝh amñV _ RÊSr ~mgr amQr I‌mH$a nmaUm H$aZm nSm Vm H$B ~ma nmaUm {H$E {~Zm ^r {dhma H$aZm nSm {H$ÝV CÝhmZ AnZ OrdZ _ {OZ gH$ënm H$m ñdrH$ma {H$`m, CÝh AÝV VH$ nU OmJêH$Vm Ama ÑT>Vm H$ gmW {Z^m`m&

dmUr g`_

AmJ_ gm{hË` _ _{Z H$s EH$ {defVm {Z{XîQ> h "A§n^mgr' AWmV _{Z Aën^mfr hmVm hï& gmÜdr gOmUmOr ~hV H$_ ~mbVr Wrï& {XZ _ Xm KQ> H$m _mZ H$aVr Wrï& ej gmpÜd`m H$m {ejm XV g_` Amn \$a_m`m करती थी—बातूनी व्यक्ति कभी ज्ञान ध्यान की प्राप्ति नहीं कर सकता। यदि जैसे Vg H$a ^r bVm h Vm kmZ H$m {Q>H$m Zht gH$Vm Š`m{H$ Om ~mVm _ nS> OmVm h dh ñdmÜ`m` Zht H$a nmVmï& ñdmÜ`m` H$ A^md _ grIm hAm kmZ भी पानी के प्रवाह की तरह बह जाता है। कहा भी है—

kmZ Amam gXÜ`mZ _, a_U H$am {XZ amVï&
~mVSr H$s {~JS>Vr, {~ëH$b gƒr ~mVï&&

gmÜdr gOmUmOr H$m {dídmg H$m_ _ Wm, ~mV _ Zhtï& d ha g_` AnZ H$m_ Ed ñdmÜ`m` _ _ñV ahVrï& ~mbZm Amdí`H$ hmVm Vm d _X-_X ñdam _ AnZr ~mV H$hVrï& Oma g ~mbZm, AZmdí`H$ nMm`Vr H$aZm CZH$s àH${V Zht Wrï& Amam Vm Š`m, AnZr nÌr gmÜdr AmZÝXH$_marOr g ^r {~Zm _Vb~ ~mV Zht H$aVrï&

gmÜdr gOmUmOr H$m JhñWm g {ZaWH$ ~mV H$aZm ngÝX Zht Wmï& H$mB JhñW CZH$s gdm _ ~R>Vm Vm d Cg VÎdkmZ H$s ~mV g_PmVr AWdm NmQ>r-_mQ>r H$WmAm Ûmam AmÜ`mË_H$ ~mY XVrï& AnZr nmíddVu gmpÜd`m H$m d ` hr gñH$ma XVr {H$ JhñW h_mar gdm H$aZ AmV hï& `{X BÝh H$N> Rmg nmW` Zht {_bm Vm h_mam g_` ^r Ì`W J`m Amam JhñW H$s ^r H$N> nëb Zht nSmï&

{d. g. 2041 H$s KQ>Zm hï& gmÜdr CÁÁdbaImOr (gaXmaeha) _Ü`m• _ AnZ km{VOZm H$m gdm H$am ahr Wrï& AmnX{eH$ Jr{VH$mAm Ed àaH$ H$WmAm H$m gÝXa H$_ Mb ahm Wmï& gmÜdr gOmUmOr CZ {XZm Añdñ W Wrï& AV... CnnmV _ bQ> bQ> d ^r Jr{VH$mAm H$m gZ ahr Wrï& CZH$m _Z Jr{VH$mAm H$m gZH$a àgÞ hm CRmï& gÜ`m à{VH$_U H$s nímV O~ gmpÜd`m gmÜdr gOmUmOr H$m dÝXZm H$aZ JB V~ AmnZ gmÜdr उज्ज्वलरेखाजी की पीठ थपथपाते हुए प्रसन्न स्वरों में कहा—'इनकी सेवा कराने H$s àd{Îm _P ~hV ngÝX AmBï& JhñW H$m gdm H$amZr hm Vm Eg gdm H$amZr Mm{hEï& kmZ dYH$ ~mV H$aZ g Våham kmZ H$m nZamdVZ hmJm Amam BÝh ^r H$N> Z`m kmZ àmá hmJmï&'

Vn…gmYZm

XgdH$m{bH$ gÌ _ Vn H$ _hÎd H$m àH$Q> H$aV hE H$hm J`m है–'तवसा धुणइ पुराण पावगं' अर्थात् तप से पूर्व संचित कर्मों का नाश होता hï& VamnW Y_gK _ AZH$ XrK Vnñdr gmY gmpÜd`m hE h {OÝhmZ Vnñ`m H$ Ûmam ñd-H$ë`mU H$ gmW Y_gK H$ Jmad H$m ^r eVJ{UV {H$`m hï& gmÜdr gOmUmOr Z AnZ gmYZm-H$mb _ Vnñ`m H$m ^r {def à`mJ {H$`mï& AmnZ AnZ OrdZ _ àbå~ Vn…gmYZm H$sï& OrdZ H$ A{V_ Mma nmM df _ AmnH$m nmaUm H$aZ _ AË`{YH$ AgmVm hmVrï& Vnñ`m g ^r A{YH$ Amhma AmgdZ H$ {XZ ~MZr ahVrï& ghdVu gmpÜd`m कहती–महाराज! आपको आजकल पारणे में बहुत तकलीफ होती है अतः शरीर H$ gm_Ï` g A{YH$ Vnñ`m Zht H$aZr Mm{hEï& Amn ghO ñdam _ फरमाती–'सतियों! यह शरीर तो अन्न का कीड़ा है। जीवन भर खाया ही खाया h na gma Š`m {ZH$mbmï?'

"Xhñ` gma dVYmaU M' AWmV eara H$m gma h dV YmaU H$aZmï& `h dmŠ` AmnH$s gmYZm H$m _b _Ì Wmï& `h eara Zída hï& Bgg {OVZm gma ItMm OmE dhr IîR> hï& Cndmg g bH$a nÝÐh VH$ H$s bSr, Y_MH$, H$_Ma, à{Vdf EH$mÝVa Am{X H$ A{V[aº$ AmnZ ag n[aË`mJ, D$ZmXar Vn H$s AÀNvr gmYZm H$sï& Vnñ`m HaH {XZ ^a gmE ahZm AmnH$m ngÝX Zht Wmï& Amn Vnñ`m H$ gmW-gmW ñdmÜ`m`, Ü`mZ, _mZ Am{X _ ^r gbmZ ahVrï& AmnH$ OrdZ _ Vnñ`m H$ gmW g_Vm, gdm, g{hîUVm Ed ñdmdbå~Z H$m _{UH$mMZ g`mJ Wmï&

Vn H$s AMH$ Amf{Y

EH$ ~ma gmÜdr gOmUmOr H$ ~mE na _ AMmZH$ H$m\$s gOZ ~T> JBï& MbZ-{\$aZ, CRrZ-~RZ _ AË`{YH$ H$îQ> hmZ bJmï& H$îQ> {ZdmaU hV AZH$ CnMma gPmE JE na AmnH$m _mZg Xdm bZ H$ {bE V`ma Zht hm nm`mï& EH$ {XZ AmnH$ _Z _ {dMma CRm {H$ ^JdmZ Z Vn H$m AMH$ AmfY ~Vm`m hï& _ ^r Bg Amf{Y H$m AmgdZ H$aH$ X Iï& Xga hr {XZ AmnZ Vnñ`m eê$ H$a Xrï& Vn H$ à^md g Yra-Yra gOZ H$_ hmZ bJrï& O~ VH$ na H$m XX nUV`m g_á Zht hAm V~ VH$ Vnñ`m H$m H$_ Mbm ahmï& Vnñ`m H$ gmW H$m`mËgJ Ama AZàjm H$m à`mJ ^r Omar ahmï& à~b _Zm~b, ÑT> gH$ën Ama Vn H$ à^md H$ gm_Z XX H$~ VH$ {QH$m ahVmï?

Am{I a Cg AnZm ñWmZ NmoS>H$a OmZm hr nS>m& gmÜdr Ir nU ñdñW hm JB©& V^r g AmnH$ _Z _| Vn H$ à{V Jhar {ZîR>m hm JB, Om CÎmamoÎma àdY_mZ hmVr ahr& AJOr XdmB`m| _| AmnH$s àma^ g hr Aé{M Wr& AJOr XdmB`m| H$m CÝhmZ H$^r AmgdZ Zht {H$`m& NmoQ>r _moQ>r ì`m{Y H$m d Vn On d gH$ën g R>rH$ H$a bVr& A{YH$ Añdñw hmZ na Xer `m hmå`mon{WH$ Xdm JhU H$aVr& {H$ÝV AmnH$m _mZ{gH$ ^md h_em Vn H$ Ûmam CnMma H$aZ H$m hr ahVm&

OrdZ H$ A{V_ 24 _{hZm| _| AmnH$ OrU eara H$m à{Ví`m`, Imgr, A{Vgma Am{X AZH$ ì`m{Y`m| Z EH$ gmW Ka {b`m {H$ÝV d {H$gr ^r ì`m{Y g ì`mHw$b Zht ~Zr& H$B ~ma Vnñ`m _| O~ H$mB ì`m{Y CJ ê$n YmaU H$a bVr V~ gmpÜd`m Amng nmaU H$ {bE AmJh H$aVr Vm Am ~S>r सहजता के साथ फरमाती—'सतियों! यह शरीर तो व्याधियों का भण्डार है। ImZ na ^r ì`m{Y`m hmVr h Ama Zht ImZ na ^r hmVr h& O~ VH$ dXZr` H$_ H$m CX` h V~ VH$ ì`m{Y`m| H$m ^mJZm hr hmJm& Vnñ`m na_ Am¡f{Y h& _| Cgr H$ Ûmam R>rH$ hm OmD$Jr&' gmpÜd`m AmnH$m `h gmYZm naH$ CÎma gZH$a IÕmZV hm OmVr&

Mm~rg _mg _| Vn H$ gmbh _mg

Vnñ`m H$ nW na CZH$ MaU {ZaÝVa ~T>V ah& `Ú{n Am AnZ OrdZ _| H$^r ^r nÝÐh {XZ g A{YH$ EH$ gmW Vnñ`m Zht H$a gH$s {H$ÝV NmoQ>H$a Vnñ`mAm| H$m H$_ {ZaÝVa Omar ah& AmnH$ OrdZ H$m gmÜ`H$mb Vm Vnñ`m H$s ÑpîQ> g ñd{U_ H$mb Wm& AmnH$s Vn… gmYZm H$m H$_ ^r {d{eîQ> Wm& nÝÐh {XZ H$s Vnñ`m H$ ~mX {\$a AmR> {XZ ^mOZ H$aZm& dmng gmV {XZ Vnñ`m H$aZm {\$a VrZ {XZ ^mOZ H$aZm {\$a Vnñ`m करना—इस क्रम के अनुसार २४ महिनों में लगभग सोलह महिनों का कालमान Vnñ`m _| ~rVm&

Vnñ`m H$ gmW ñdmdbå~Z

Vnñ`m Ama Añdñw`Vm H$s pñW{V _| ^r AmnZ àm`… ñdmdb~Z H$m OrdZ Or`m& O~ ^r AmnH$m {dIm_ H$ {bE H$hm OmVm, Am EH$ hr dmŠ` कहती—'आराम हराम है।' खाली बैठे वेदना और अधिक सताती है। काम करने g _Z àgÞ ahVm h& H$m` _| ì`ñV ahZ dmbm amJr AnZr nrS>m ^b OmVm

h Bg{bE {ZaÝVa H$m_ H$aV ahZm Mm{hE'& dXZm H$ jUm _| Amn `WmeŠ` {~ñVa Ama Am{f{Y`m| g Xa ahZm MmhVr Wr'&

उत्तराध्ययन सूत्र में मुनि के लिए एक शब्द आया है–'सहाय्य-n{ƒŠ lmU'&' gmÜdr gOmUmOr _| ^r gh`mJ-àË`m» `mZ H$s d{Î$m Wr'& CZH$m H$hZm Wm "_P Vm AnZr H$_ {ZOam H$aZr h'& V_ g~ OdmZ hm {H$ÝV _ar C_ Vm H$m\$s T>b MH$s h'& {OVZr {ZOam H$s H$_mB H$a b, CVZr AnZr h'& _a {bE Vm H$m_ hr Aam_ h'& AV… _P H$m_ H$aZ Xm'&'

l_{Zî$ OrdZ

{d. g. 2029 H$s KQ>Zm h'& Cg df gmÜdr am`H$_marOr (amObXga) Ed gmÜdr AmZÝXH$_marOr (_m_ga) XmZm| gKmSm| Z bmSZ gdm-H$ÝÐ _| MmH$ar H$s'& EH$ {XZ gmÜdr gOmUmOr {H$gr H$m`de H$ht Om ahr Wr'& AMmZH$ EH$ àñVa-ñVå^ H$s MmQ> Aml| na bJr'& ^-^mJ H$ D$na Jham O»_ hm J`m'& O»_ g lZ ~hZ bJm'& H$N> Xa ~mX CnMma g em{UV H$m àdmh Vm ~X hm J`m {H$ÝV ^`H$a MmQ> g nam A{j^mJ gO J`m'& Á`m-Á`m| gOZ ~T>Vr JB Ë`m-Ë`m| Aml H$s nrSm ^r ~T>Vr JB'& nrSm H$ H$maU VO ~lma ^r hm J`m'& Vrd dXZm H$ CZ jUm _| ^r AmnH$ _l g C\$ VH$ Zht {ZH$bm'& dÕmdñWm _| ñd^mdV… hr emar[aH$ e{º$`m jrU hm OmVr h, {\$a BVZm lZ EH$ gmW ~h OmZ g Ama A{YH$ X~bVm Am JB'& BVZr dXZm hmV hE ^r AmnZ _píH$b g Xm EH$ {XZ {dl_ {H$`m hmJm'& Vrga {XZ Vm Amn JmMar-nmZr, bUm-nëbm YmZm Am{X g^r H$m`m _| àdÎm hm JB'& ghd{VZr gmpÜd`m| Z {dl_ hV ~hV AmJh {H$`m'& तब आपने शिक्षात्मक स्वरों में फरमाया–"g{V`m|! `h eara Vm Zída h, CgH$s Š`m nadmh H$aZm h? V_ g~ Zr{VdmZ Ama JUdmZ hm'& _a {~Zm H$h hr H$m_ H$aZ H$ {bE V`ma hm {H$ÝV Ohm VH$ hm gH$, _| {H$gr H$m gh`mJ Š`m| b?'

gh`mJ ^mdZm

{d. g. 2038 H$s KQ>Zm h'& AmMm` lr Vbgr Z gaXmaeha _`mXm _hmËgd na gmÜdr am`H$_marOr (amObXga) H$m ndmMb H$s nX`mÎm H$m {ZXe {X`m'& gmÜdrlr Cg df {\$ëbma (nOm~) _| MmV_mg n[agånÞ H$aH$ nYmar Wr'& gXu H$m _mg_ Wm'& {H$gr lmdH$ H$s AË`{YH$ AO na gmÜdrlr

Z Xm VrZ D$Zr H$~bm H$m dV {ZnOm {X`m& ~Jmb, {~hma d Ag_ H$s H$ar~ Xm hOma {H$._r. H$s bå~r `mÌm gm_Z Wr& A~ CZ H$~bm H$m ^ma BVZr Xa H$Ym na TmZm H${RZ bJ ahm Wm& gmÜdr HmZH_marOr Z H$B gmpÜd`m g AZamY {H$`m {H$ÝV {H$gr H$m ^r H$~b H$s Oê$aV Zht Wr& आखिर उन्होंने साध्वी सुजाणांजी से कहा–'महाराज! अब हम तो बहुत दूर जा ah h na, AmnH$m H$N> ^ma X ah h& gmÜdr Ir Z àíZm{`V _Ðm _ कहा–'कौनसा भार?' कानकुमारीजी ने सकुचाते हुए कहा–'साध्वीश्री! अगर AmnH$m {X¸$V Z hm Vm H$n`m Amn ` EH$ Xm H$å~b br{OE& Vm{H$ h_ BVZm dOZ Zht b OmZm nS& gmÜdr gOmUmOr Z àgÞVm ì`º$ H$aV hE कहा–'तुमने इतने संकोच के साथ क्यों कहा? तुम लोग दूर जा रहे हो इसलिए Om ^r A{V[aº$ ~mP hm dh _P X Xm& `h ^ma Zht, nmañn[aH$ gh`mJ Ed gdm h& `Ú{n CÝh Cg g_` H$~bm H$s Anjm Zht Wr {\$a ^r CÝhmZ dh gmam ^ma AnZ H$Ym na CRm`m& `h Wm CZH$m dmËgë` Ama gh`mJ H$m ^md&

gdm^mdZm

VamnW Y_gK _ gdm H$m {d{eîQ> ñWmZ ahm h& `hm gdm _ AmXmZ Ama à{VXmZ H$s ^mdZm Zht hmVr ~pëH$ {ZOam H$s ^mdZm hmVr h& O~ ì`{º$ H$m CÔí` AmË_{hV d AmË_ H$ë`mU ~Z OmVm h V~ gdm ^ma^V Zht A{nV H$_-{ZOam H$m ñd{U_ Adga ~Z OmVr h& gmÜdr gOmUmOr _ ^r gdm ^mdZm H$m {def JU Wm& AmnH$m é½U Ama dÕ gmpÜd`m H$s gdm H$aZ _ ~hV AmZÝX AmVm Wm& Xgam H$s nrSm Amn AnZr nrSm g_PVr Wr& AmnH$ ì`dhma _ BVZr göX`Vm Wr {H$ amJr H$m emar[aH$ ñdmñï` H$ gmW _mZ{gH$ g_{Y ^r {_bVr Wr& AmnH$m AnZ OrdZ _ H$B ~ma gdm H$ Adga àmá hE& gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$ gmW {d. g. 2021 _ aVZJT> _ gmÜdr gVmH$mOr (gaXmaeha) H$s Zm _{hZ VH$, {d. g. 2023 Ogmb _ gmÜdr àVmnmOr (~rXmga) H$s MmXh _{hZ VH$, {d. g. 2025 _ gmÜdr Jbm~mOr (gK ~{hîH$V) H$s Mma _{hZ VH$ VWm Kma VnpñdZr gmÜdr ^amOr H$s Am_Q> _ Vah _{hZ VH$ gdm H$s& BgH$ A{V[aº$ bmSZ gdm H$ÝÐ H$s MmH$ar H$s&

gdm bZ H$s H$bm

OrdZ H$ A{V_ Xm dfm _ AmnH$m eara BVZm Aeº$ hm J`m {H$

{hbZm, S>bZm, H$adQ> ~XbZm, gmZm, CR>Zm, ~R>Zm, Amhma, Zrhma Am{X Amdí`H$ emar[aH$ {H$`mAm| H$ gmnmXZ _| ^r Xgam| H$m ghmam bZm AË`ÝV An{j V hm J`m h¡& gmH$a CR>Z _| ^r AmnH$m ~hV dXZm hmVr h¡& emar[aH$ nadeVm H$ BZ j Um| _| ^r gmÜdr {~Xm_mOr (ntnbr) gmÜdr ^r I mOr (ntnbr) gmÜdr dg_VrOr (gaXmaeha), gmÜdr CÁÁdba I mOr (gaXmaeha) Z _Zm`mJ g gdm H$s h¡&

gmÜdr gOmUmOr gdm XZ _| {OVZr CXma Wr gdm bZ _| CVZr hr H$nUr h¡& gdm bZ _| CÝh| ~hV gH$mM hmVm Wm h¡& "hm gH$ Ohm VH$ {H$gr g gdm bZ H$s MîQ>m Zht H$aZm h¡&' "AnZm H$m_ AnZ hmW g H$aZm h¡&' "{ZOam H$m Adga hmW g Zht OmZ XZm' BË`m{X dmŠ` CZH$ OrdZ gH$ën Og ~Z hE W& O~ O~ gmpÜd`m AmnH$m hmW H$m ghmam XH$a CRmVr {~RmVr तब तब आपके मुंह से ये स्वर फूट पड़ते—'सतियों! मैं तुमसे कितनी सेवा ले ahr h¡& ` C_ kmZ-Ü`mZ H$s h {H$ÝV Š`m H$ê$? _am eara dar hm J`m h¡& Z MmhV hE ^r _P Våhmam I_ bZm nSVm h¡&' `h gZH$a gmpÜd`m गद्गद स्वरों में कहती—'साध्वीश्री! आपने हम पर बहुत उपकार किया है। CgH$s VbZm _| `h gdm Vm ~hV ñdën h¡& gdm H$aZm h_mam na_Y_ h¡& gdm H$aZ dmbm _hmZ H$_m H$s {ZOam H$aVm h¡& h_ ^r H$_ {ZOam Ûmam AmË_m H$s gƒr H$_mB H$aZm MmhV h¡& Amn AnZ _Z H$m {~ëH$b hëH$m a I| h¡&' gmpÜd`m| H$m `h öX`ñneu CÎma gZH$a gmÜdr gOmUmOr Cëb{gV स्वरों में फरमाती—'सतियों! विनय जिनशासन का मूल है। तुम सब जिस {dZ_Vm g _a Ogr gmYmaU gmÜdr H$s gdm H$a ahr hm, dh Y_gK H$s J[a_m H$m ~TmZ dmbm H$m` h¡& A¼bmZ ^md g gdm H$aZ dmbm VrWH$a Jmì H$m CnmOZ H$aVm h¡&' NmQ> g NmQ> H$m` H$ à{V H$VkVm km{nV H$aZm AmnH$m ghO JU Wm h¡& AmMm`I r Vbgr Ûmam a{MV ` n{º$`m CZH$ OrdZ ì`dhma H$m AJ ~नी हुई थी—

> WmSm gm ^r `{X {H$`m, AJa {H$gr Z H$m_ h¡&
> km{nV H$am H$VkVm ~Zm Z Z_H$ ham_ h¡&&

AmñWm Jé-dMZ _|

जैनागमों का एक प्रसिद्ध सूक्त है—'आणाए संजमो आणाए तवो' अर्थात् Jé Amkm hr g`_ h Ama dhr gƒm Vn h¡& ^mVr` gñH¥$[V _| Jé H$m

gdmf _hÎd ahm hï& {eî` H$s AmÜ`mpË_H$ {dH$mg `mÌm _ Jé H$m And `mJXmZ ahVm hï& Jé H$m nX {OVZm J[a_mnU h Cgg ^r A{YH$ H${RV h gXJé H$s àm{áï& Bg àgJ _ ñdm_r gVXmg Or H$s n{º$`m ~hV hr गम्भीर हैं—

gVXmg Za Xh Xb^, nrN> Xb^ ^fï&
_hmXb^ gVJé {_bZ, nrN> Xb^ Ab lï&&

gmÜdr gOmUmOr H$ H$U-H$U _ Jé-{ZÎRm H$ JhZ gñH$ma a_ hE Wï& Jé-^{º$ CZH$ am_-am_ g ñ\$[aV hmVr Wrï& Bg gX^ _ d H$B ~ma कहा करती थी—गुरु दूरदर्शी होते हैं। उनकी आज्ञा का पालन करने वाला शिष्य gXd A{hV g ~MVm h Ama {hV-àm{á H$s {Xem _ J{Verb ahVm hï& Bg{bE {H$gr ^r pñW{V _ Jé-Amkm H$s AdhbZm Zht H$aZr Mm{hEï& Amkm H$s {damYZm H$aZ dmbm _mj H$s {damYZm H$aVm h VWm ^d^_U H$m ~TmVm hï&

X~b VZ ... _O~V _Z

{d. g. 2039ï& ZmWÛmam _`mXm _hmËgd H$s KQ>Zm hï& gmÜdr gOmUmOr H$m dhm A{Vgma-amJ hm J`mï& H$N> Xer CnMma ^r {H$E JE {H$ÝV amJ Vrd J{V g ~TVm J`mï& bå~ Aag g AmnH$ EH$mÝVa Vn Mb ahm Wm AV... eara Vm nhb g hr H$_Oma hm MH$m Wm {\$a ~r_mar g Ama A{YH$ X~b hm J`mï& H$_Omar H$ H$maU H$B ~ma AmnH$m ~hmer ^r Am OmVrï& AmMm`da H$m Bg ~mV H$m nVm bJm Vm Amn Xga {XZ hr `dmMm`_hmàkOr g{hV AmnH$m XeZ XZ nYmaï& _hmI_Ur gmÜdrà_Im H$ZH$à^mOr Z ^r AZH$ ~ma {RH$mZ nYma H$a gdm H$admBï& BVZr AñdñWVm Wr {H$ H$adQ> ~XbZ _ ^r eara ngrZ g Va~Va hm OmVm {\$a ^r Amn nM_r g{_{V H$ {bE ~mha nYmaVrï& gh`mJr gmpÜd`m H$ dht Bg आवश्यक क्रिया को करने के अनुरोध पर आपने कहा—'सतियों! और सब काम Vm V_ H$aVr hr hm, AnZ eara H$m H$m_ Vm _ AnZ Amn H$aVr ah, `hr AÀNm hï& O~ VH$ Bg VZ _ `pËH${ÄMV e{º$ h V~ VH$ CËgJ H$m H$m_ Våhma g H$admZ H$m ^md Zht hï&' gmpÜd`m H$ AZZ`nU AZamY na ^r AmnH$m {ZíM` Zht ~Xbmï& EH$ ~ma nM_r g{_{V nYmaZ _ VrZ-Mma {dIm_ bZ nSVï& X{hH$ X~bVm {XZ à{V{XZ ~TVr JB Ama EH$ {XZ Vm OJb g bmQ>V dº$ Amn amñV _ hr ~hme hmH$a {Ja nSrï& ghd{VZr

साध्वियों ने तत्काल साधन (ठेला गाड़ी—कल्पनीय वाहन) की खोज की। gmYZ _| gbmH$a Og-Vg CÝh| àdmg-ñWb VH$ bm`m J`m& CnMma H$ Ûmam d gMV hB na AMmZH$ {JaZ g eara H$ H$B ^mJ O»_r hm JE& arT> H$s hÈr _| H$m\$s MmQ> AmB Bg{bE _`mXm _hmËgd H$s n[agånÞVm H$ ~mX ^r H$B {XZm| VH$ dht éH$Zm nSm&

Jé Amkm hr OrdZ àmU

_`mXm _hmËgd H$ ~mX AmMm`Ir Z CX`na H$s Va\$ {dhma H$a {X`m& ZmWÛmam CX`na H$m _mJdVu j Ì h& dhm g H$B qgKmSm| H$m CX`na OmZm Wm& gmÜdr AmZÝXH$_marOr Z ^r C{MV Adga XI AÝ` qgKmSm| H$ gmW ghdVu gmÜdr dg_VrOr H$m Jé-XeZ H$ {bE ^O {X`m& gmÜdr dg_VrOr Z Á`m{hr nÁ` JéXd H$ CX`na _| XeZ {H$E, AmMm`da Z g~g nhb gmÜdr gOmUmOr H$ ~ma _| gI gdmX nNm Ama àgÞ ñdar _| फरमाया—'अब उनकी स्थिति कैसी है?' साध्वी वसुमतीजी ने विनम्रतापूर्वक gmar pñW{V {Zd{XV H$a Xr& AmMm`da Z Ü`mZndH$ gmar ~mV gZr Ama फरमाया—'तुम सब उनकी खूब सेवा करना, समाधि उपजाना, संघ की प्रभावना H$aZm Ama {ZpíMÝV ahZm&' JéXd H$ _I g ` H$nm-nU eãX gZH$a gmÜdr dg_VrOr JXJX hm JB& gmV {XZ VH$ AmMm`da H$s gdm H$a gmÜdr dg_VrOr nZ… ZmWÛmam OmZ H$s AZ_{V bZ AmMm` MaU _| उपस्थित हुई तब गुरुदेव ने वात्सल्य रस उंडेलते हुए कहा—'मर्यादा महोत्सव के Adga na _Z AmZÝXH$_marOr H$s JJmna MmV_mg hV {Z`{º$ H$s Wr {H$ÝV A~ `{X gmÜdr gOmUmOr H$m ñdmñÏ` RrH$ Z hm Vm MmV_mg nZ… n[ad{VV कर सकता हूं।' साध्वी वसुमतीजी ने निवेदन किया—'गुरुदेव! उनका स्वास्थ्य Vm ~hV H$_Oma h na _Zm~b D$Mm h& O~ ^r gmÜdrIr H$ gå_I nmdg परिवर्तन की चर्चा चलती है तो उनका एक ही उत्तर होता है—हमारी बुद्धि तुच्छ h, JéXd H$m {MÝVZ {demb h& Jé ^{dî` ÐîQ>m hmV h& d Om ^r {ZU` H$aV h dhr {eî` H$ {bE {hVH$a hmVm h&' gmÜdr dg_VrOr Z àgJ H$m आगे बढ़ाते हुए कहा—'भगवन्! जब मैंने उदयपुर आते वक्त उन्हें वन्दना की तब उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखकर ये शब्द कहे—'गुरुदेव की, युवाचार्यश्री की, _hmI_UrOr H$ I~ gdm H$aZm, gIgmVm nNZm Ama dÝXZm AO H$aZm& _ar Ama g IrMaUm| _| `h {ZdXZ H$aZm {H$ JéXd Z _P na ~hV ~Sr H$nm H$s h& _ AmMm`da H$ AmerdmX g erK ñdñW hm OmD$Jr& à^m! _|

AmnH$ MaUm _ gdmË_Zm g_{nV hï& A^r g_` ~hV hï& H$n`m _a {bE Amn Xga {MÝVZ H$m H$îQ> Z H$amEï& Ohm Mm_mgm \$a_m`m h dht OmZm l`ñH$a hï& _a {bE Vm Jé Amkm hr OrdZ àmU hï& _ AmMm`da H$m Zm_ aQ>V aQ>V MmV_mg H$ {bE JJmna nhM OmD$Jrï&' AmMm`da Z gmar ~mV सुनकर अत्यन्त प्रमुदित मुद्रा में फरमाया—'जिसके मन में गुरु के वचनों के प्रति BVZr àJmT> AmñWm hmVr h CgH$m ha H$m_ ñdV… RrH$ hmVm hï& AÀNr Vah OmAmï& àgÞ ahmï&' gmÜdr dg_VrOr JéXd H$ Bg A_V_` AmerdmX H$m nmH$a H$VH$Ë` hm hm CRrï&

JéXd H$s dmUr g\$b ~Zrï& gmÜdr gOmUmOr H$m ñdmñÏ` H$N> RrH$ hAmï& gmÜdr AmZÝXH$_marOr Z ZmWÛmam g JJmna H$s Amma grYm {dhma करने का चिन्तन किया। साध्वी सुजाणांजी ने कहा—'आचार्यवर का चोखले के Jmdm H$m nagZ H$m AmXe hï& H$N> ^r hm, _ AnZr Amma g AmXe H$s AmamYZm _ ~mYH$ Zht ~ZZm MmhVrï& Mmh EH$-EH$ {H$._r. ^r MbZm nS> na g~ Jmdm H$m MmV_mg g nd ñne Amdí`H$ hï&' gmÜdr gOmUmOr H$m JéXd H$ dMZm na ÑT> {dídmg Wm, Bgr {dídmg H$ ~b na CÝhmZ {dhma {H$`m VWm Mmlb H$ EH$ EH$ jÌ H$m ñne H$aVr hB d {ZpíMV g_` na JJmna MmV_mg hV nYma JBï& JJmna H$ lmdH$ AmfmT> eŠbm MVWu H$m gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$ JJmna nXmnU g nbH$ CRï& gmÜdr gOmUmOr H$m AmO A{V[aº$ àgÞVm Bg{bE Wr {H$ d Jé-{Z{XîQ> jÌ _ nhM JBï& {dZrV Amma AZem{gV {eî` H$ {bE AmMm` H$s Amkm H$s AmamYZm hr na_ àgÞVm H$m {df` hmVm hï& gmÜdr gOmUmOr H$s _mZ{gH$ àgÞVm H$m ^r `hr ahñ` Wmï& EH$-{XZ H$N> lmdH$m Z gmÜdr gOmUmOr g AmíM` H$ स्वरों में पूछा—महाराज! आप तो इतने कमजोर लग रहे थे फिर भी इतनी दूर चलकर कैसे पधारे? साध्वीश्री ने विश्वास भरे शब्दों में कहा—'भाइयों! मैं `hm AnZ nam H$s VmH$V g Zht nhMr, `h Vm Jé-dMZm H$s VmH$V hï& Jé-dMZm na lÕm alZ dmbm JJmna Vm Š`m, {edna (_mj) ^r nhM gH$Vm hï&'

Ohm AmñWm H$m ~b hmVm h dhm VZ ~b, _Zm~b, dMZ~b, ~{Õ~b Amma YZ~b g~ JmU hm OmV hï& Bg AmñWm H$ ~b g hr gmÜdr gOmUmOr Bg X~b AdñWm _ ^r b{jV _{Ob na nhM JEï&

Cg {XZ {H$gr Z Egr H$ënZm Zht H$s Wr {H$ `hr JJmna gmÜdr

gOmUmOr H$s VnmñWbr Ama g_m{Y ñWbr H$ ê$n _| B{Vhmg H$ nîR>m| _| A{H$V hmJm& `Ú{n gmÜdr AmZÝXH$_marOr {g\$ Cg df H$m MmV_mg H$aZ hV nYmar Wr {H$ÝV gmÜdr gOmUmOr H$m eara AñdñWVm, dÕmdñWm Ed {ZaÝVa Vn…gmYZm H$ H$maU BVZm H$e hm MH$m Wm {H$ dhm g {dhma hmZm H$s{R>Z hm J`m& AmMm`da Z gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$m dht àdmg H$aZ H$m {ZXe {X`m& gmÜdrOr H$m dhm H$ar~ Xm dfm VH$ àdmg ahm& Bg àdmg H$mb _| Ohm gmÜdr gOmUmOr Z AnZ AmnH$m nar Vah Vn _| {Z`m{OV {H$`m dhm Vnm_` Am^m_S>b g OmdH$ Om{dH$mAm| _| ^r Vn H$ ^md OmJ& ~hZm| _| Y_MH$, H$ÊR>Vn, H$_Ma, Am`{~b, EH$mÝVa, dfuVn Am{X AZîR>mZm| H$s hmS> gr bJ JB& gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$s àaUm g {d{^Þ àaH$ H$m`H$_ Am`m{OV hE& bmJm| _| AÀNm CËgmh ahm& A_V _hmËgd H$ àW_ MaU H$ H$m`H$_ H$s V`m[a`m ^r gmÜdrOr H$ {ZXeZ _| gånÞ hB& H$B ~ma JJmna H$ bmJ gK~Õ ê$n _| AO hV AmMm`da H$s g{Þ{Y _| nhM& gmÜdrdX H$ AWH$ O_ g g^r _S>bm| _| AÀNr g{H$`Vm AmB& H$b {_bmH$a gmÜdr gOmUmOr H$ {Z{_Îm g hmZ dmbm `h Xm dfu` ñWadmg CnbpãY OZH$ ahm& JJmna H$ OmdH$m| Z Bg àdmg _| {Og Xm{`Ëderb Vm H$m n[aM` {X`m, dh CëbOZr` h&

7. ñ_{V`m| H$ XnU _|

O~ H$^r _| AVrV H$s `mÌm na {ZH$bVr h± V~ _Z ñ_{V`m| H$ ggma _| I m OmVm h¡& CZ ñ_{V`m| H$s g I X AZ^{V _| EH$ AZm I m AmZÝX hmVm h¡& _Z CZ ñ_{V`m| H$ gmJa _| XrKH$mb VH$ S>~ OmZm MmhVm h¡& H$ar~ Mmbrg df© H$s Bg bå~r Ad{Y _| _am n[aM` hOmam| ì`{º$`m| g hAm h¡& AVrV H$ Bg bå~ g\$a H$m V` H$aZ H$ ~mX {dJV H$ d gma j U OrdV hm CR>V h, {OZH$m _Z Or`m h¡& öX` H$ {MÌnQ> na Mb{MÌ H$s Vah Ñí` AmV JE, {dbrZ hmV JE¡& Am I| AnbH$ CÝh| {ZhmaVr ahr¡& _Z gmMVm ahm¡& dº$ ~rVVm ahm¡& ñ_{V`m| H$m H$_ A{dpÀN>Þ ê$n g Omar ahm¡& ghgm EH$ AmH${V ñ_{V`m| H$ XnU na C^ar¡& Am I m| H$s nVbr Cg AmH${V na H$pÝÐV hm JB¡& dh AmH${V Wr gmÜdr gOmUmOr H$s¡& `Ú{n _a OrdZ {Z_mU _| AZH$ n{dÌmË_mAm| H$m AdXmZ ahm h, CZ g~H$ ñ_aU _mÌ g _Z lÕm àUV hm OmVm h¡& gmÜdr gOmUmOr H$m Zm_ ^r Cgr ûm I bm H$s EH$ H$S>r h, {OZH$ dmËgë`, gh`mJ Ama CnH$mam| H$m H$^r ^bm`m Zht Om gH$Vm¡&

{d_b à[aH$m

{d. g. 2030 _| gmÜdr AmZÝXH$_marOr H$m MmV_mg hmgr (h[a`mUm) _| Wm¡& Cg g_` _ar C_ H$ar~ Zm gmb H$s Wr¡& nhbr ~ma _Z EH$ ~mb dam{JZ H$ ê$n _| AmnH$ XeZ {H$E¡& Cg dº$ AnZr ggmanj r`m _m ( I r_Vr {d_bmXdr SmJm) H$ gmW h_ Nh ^mB ~{hZ W¡& h_ g^r EH$ {XZ AmnH$s gdm H$a ah W¡& Amn àm`… {e j mË_H$ nÚm|, H$hm{Z`m| Ûmam g^r को प्रेरणा देती रहती थी। उस समय आपने मुझे लक्षित कर कहा—'सम्पत!' (JhñW OrdZ H$m Zm_) Våhmar C_ ~hV NmQ>r h¡& Xr j m bZm ZmZr H$m Ka नहीं है, पक्का सोच लेना।' मैंने दृढ़ता से विनम्र स्वरों में प्रत्युत्तर दिया—'मैंने ~hH$md `m àbm^Z g Zht, nU {MÝVZ H$a ÑT> {ZU` H$a {b`m h¡' _ar

AmdmO H$ gmW _am AmË_ {dídmg ~mb ahm Wm& gmÜdr Ir H$m {dídmg hm J`m {H$ BgH$m dam½` Vm n¸$m h¡& AmnZ à{VH$_U H$s Xm VrZ nm{Q>`m gZH$a कुछ अनमोल शिक्षाएं देते हुए कहा—तुम्हारा लक्ष्य ऊंचा है। उम्र छोटी है। ~MnZ H$m g_` OrdZ H$m ñd{U_ H$mb hmVm h¡& ~MnZ H$ g_` H$m gXn`mJ H$amJr Vm H$^r nN>VmZm Zht nS>Jm& {Og Vah OdmZr _| H$_m`m hAm YZ ~T>mn VH$ H$m_ AmVm h Cgr àH$ma ~MnZ _| grIm hAm kmZ {OÝXJr ^a ñWmB ahVm h¡& CZH$ eãXm| Z _a _Z _| ZE CËgmh H$m A{^gMma H$a {X`m&

A{dñ_aUr` K{S>`m

6 OZ 1976 a{ddma, {dH$_ gdV 2033 Á`îR> eŠbm Zd_r H$m AmMm`Ir Vbgr H$ gm{ÞÜ` _| amObXga _| Xrjm g_mamh H$m ^ì` Am`mOZ h¡& Cg Xrjm g_mamh _| _ar ^r Xrjm hmZ dmbr Wr& gmÜdr AmZÝXH$_marOr Cg g_` Nmna _| {damO ahr Wr& AñdñWVmde Amn ñd`| नहीं पधार सकी। आपने साध्वी सुजाणांजी से कहा—'हम तीन चार दिन तीन gmÜd`m| g H$m_ Mbm bJ& `{X Amn Bg _mH$ na nhM OmE Vm JéXd H$ XeZ ^r hm OmEJ Ama km{VOZm| H$s ^mdZm ^r ah OmEJr&' gmÜdr सुजाणांजी ने तुरन्त स्वीकृति सूचक शब्दों में कहा—'केसरबाई (साध्वी gOmUmOr H$s ggmanjr`m ZZX) H$s nSmVr H$s Xrjm hm ahr h¡& Cg Adga na Vm OmZm hr Mm{hE&' Xga {XZ Amn Ama gmÜdr ^rImOr (nmbr) {dhma H$a Xrjm _hmËgd na amObXga nYma JB& AmnH$ AmJ_Z g nam SmJm n[adma h{fV hm CR>m& Xrjm H$ ~mX ^r VrZ Mma {XZ {damOZm hAm& Cg g_` AmnZ _P nmÌr dñÌm{X Amdí`H$ dñVAm| H$ gmW साध्वाचार विषयक कुछ अमूल्य शिक्षाएं प्रदान करते हुए कहा—'संयम जीवन को nmZm {OVZm H${R>Z h Cgg ^r A{YH$ H${R>Z h g`_ ê$nraËZ H$s gajm H$aZm& nb nb gOJ ah H$a g`_ H$s AmamYZm H$am Ama kmZ Ü`mZ ñdmÜ`m` H$ Ûmam g_` H$m g\$b H$am& ~mVm| _| g_` JdmZ dmbm C_ ^a nN>VmVm h¡& NmQ> bmJm| H$s gJV _V H$am& AnZr CR>-~R> ~Sm| H$ nmg aIm Š`m{H$ ~Sm| H$ nmg ~RZ dmbm ~Sr ~mV grIVm h VWm ì`W ànM g ñdV… ~M OmVm h¡&' _ AmnH$ Bg AZJh g A{^^V hm CR>r&

gh`mJ Ama àaUm

{d. g. 2035 amObXga _| AmMm`Ir Z _`mXm _hmËgd _ZmZ H$s

KmfUm H$sŸ& Cg g_` _| {ejm H$ŸÐ, bmS>Z _| AÜ``ZaV WrŸ& nÁ` JéXd Z {ejm H$ŸÐ H$s gmpÜd`m| H$m ^r AmZ H$m {ZXe {X`mŸ& AH$pënV AmXe nmH$a _Z I{e`m| g ZmM CR>mŸ& _`mXm _hmËgd H$m X I Z H$m ñd{U_ Adga nmH$a h_ g~ gmpÜd`m H$VmW hm CR>rŸ& Bg _mH$ na gmÜdr AmZÝXH$_marOr भी वहीं थीं। एक दिन साध्वी सुजाणांजी ने मुझे कहा—'नानकी! तुम्हारे वस्त्र मैं धोऊंगी।' मैंने सकुचाते हुए कहा—'नहीं, नहीं, आप वृद्ध हैं, मैं स्वयं कपड़े धो लूंगी।' आपने वत्सलता उंडेलते हुए कहा—'तुम्हें तो सदा करना ही है और AnZm H$m_ AnZ Amn H$aZm hr Mm{hEŸ& A^r V_ N>mQ>r hm, WH$ OmAmJr अतः रहने दो।' मैंने पुनः निवेदन किया—'नहीं, मैं नहीं थकूंगी। आप मुझे धोने दें।' तब आपने गम्भीर स्वरों में कहा—'नानकी! मेरे कहने का हार्द यह है कि Våh| BZ H$nS>m| H$m YmZ _| {OVZm g_` bJ CVZ g_` _| H$N> gr I H$a gZmAmŸ&' AmnH$s àaUm_`r dmUr gZ _| MnMmn `mX H$aZ ~R> JBŸ& CZ {XZm| _| Zm__mbm (A{^YmZ {MÝVm_{U) H$R>ñW H$a ahr WrŸ& YZ MT>r Vm Egr MT>r {H$ Cg {XZ Zm__mbm H$ nVrg íbmH$ EH$ gmW H$R>ñW H$a gZm {X`Ÿ& साध्वी सुजाणांजी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा—'देखो, कपड़े धोने में समय bJm XVr Vm AmO H$m {XZ ~H$ma hm OmVmŸ&' _ gmÜdrIr H$ dmËgë`nU ì`dhma H$ à{V àUV WrŸ&

gñH$ma ^aZ H$s H$bm

gmÜdr gOmUmOr _| ~ƒm| _| gñH$ma ^aZ H$s AÀN>r H$bm WrŸ& ~ƒm| H$s Q>mbr AmnH$ BX-{JX ~R>r hr ahVr WrŸ& d Ohm ~mV-~mV _| VÎdkmZ H$s Jhar ~mV| gabVm g Jb CVma XVr Wr dhm Zr{VnaH$ Ed {ejmË_H$ Xmhm| d H$hm{Z`m| Ûmam ~ƒm| _| grIZ H$ à{V AmH$fU ~ZmE aIVr WrŸ& {dH$_ gdV 2028 H$s KQ>Zm hŸ& gmÜdr gOmUmOr bmS>Z _| MmH$ar hV {damO ahr WrŸ& Cg g_` _ar C_ H$ar~ Nh gmV df H$s WrŸ& _ AnZ _mVm-{nVm H$ gmW AmnH$s gdm _| bmS>Z AmBŸ& H$ar~ Xg-nÝÐh {XZ dhm éH$Zm hAmŸ& Cg XmamZ _ O~ ^r AmnH$ nmg ~R>Vr, Amn H$N> Z H$N> {gIm Vr ahVrŸ& Cg H$mbmd{Y _| AmnZ H$B àaH$ Xmh {gIm E, CXmhaUV… कुछेक दोहे यहां प्रस्तुत है—

gmY åhmar AmË_m, _ gmY am XmgŸ&
am_ am_ _| ~g aøm, Á` \$bm _| ~mgŸ&&1Ÿ&&

~Sm hAm Vm Š`m hAm, Og {nÊS I Oa&
MT Vm Mm I à_ ag, nS Vm MH$ZmMa&&2&&
dMZ aVZ _I H$mQ h, hmR H$nmQ ~Um`&
g_P g_P h\$ H$m{TE, _V nade nS Á`m`&&3&&
H$mMr erer H$mM H$s, \$QH$ Á`mgr \$Q&
Y_ H$aÝVm Trb Z H$sÁ`m, AmC I m Á`mdbm I Q&&4&&

{d. g. 2038 gaXmaeha _`mXm _hmËgd na O~ gmÜdr am`H$_marOr H$ gmW _P ^Om J`m Vm CÝh ~Sr àgÞVm hB& Cg g_` उन्होंने मेरे माथे पर हाथ फेरते हुए कहा—अच्छा हुआ पोती दादी के घर आ गई। आपने आशीर्वाद देते हुए कहा—विनीत बनकर रहना। ठिकाने की रीत भांत H$m g_PH$a MbZm.....& V~ `h H$ënZm ^r Zht Wr {H$ `h {_bZ..... `h dmVmbmn A{V_ hmJm& {H$ÝV {Z`{V H$m `hr _mÝ` Wm&

8. Aé{U_ à^mV ... Aé{U_ gÜ`m

àH${V H$ àmJU _| g`mX` H$ gmW à^mV H$m AmJ_Z hmVm h Vm g`mñV H$ gmW gÜ`m H$mV& à^mV COmb H$m àVrH$ h Vm gÜ`m AYa H$sV& COmb Ama AYa H$s gMZm nmH$a ^r Š`m H$^r gaO H$ Mha na CXmgr PbH$Vr h? Zht, dh AYa Ama COmb H$s nadmh {H$E {~Zm CX` Ama AñV XmZm hr H$mb _| AnZr Aé{U_ ap í_`m H$ gmW AmH$me _| bm{b_m {~ I aVm hAm _Zî` H$m gXd VOñdr OrdZ OrZ H$s àaUm XVm h& RrH$ Bgr Vah OÝ_ OrdZ H$m à^mV h Vm _Ë` CgH$s gÜ`m& OÝ_ H$s VOñdVm _Zî` H$ ndH$V nÊ`m H$m àgmX h Vm _Ë` H$s VOñdVm CgH$s gmYZm H$m n[aUm_ &

JéXeZ H$m g`mJ

AñdñWVm Ed dÕmdñWm H$ H$maU OrdZ gÜ`m H$ Mm~rg _mg गंगापुर में बीते। 'मेरा शरीर अब लम्बे काल तक टिकने वाला नहीं है'—यह AmnH$m kmV hm MH$m Wm AV... AmZ bå~r Vnñ`mE àma^ H$a Xr& Vnñ`m H$ H$maU Amn H$m\$s H$eH$m` hm MH$s Wr& CZ {XZm AmnH$ _Z _| Ah{Ze EH$ hr H$m_Zm ahVr {H$ A~ _ {dhma HaH nÁ` JéXd H$ XeZ H$a gH$ Egr _ar e mar[aH$ pñW{V Zht h& dh {XZ YÝ` hmJm O~ nÁ` JéXd ñd` पधार कर दर्शन देने की कृपा करेंगे। नीतिकारों ने कहा है—'यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी'—जिसकी जैसी भावना होती है उसे वैसी ही सिद्धि मिलती h& ^º$ H$s Aì`º$ ^mdZm H$m gåàfU ^JdmZ H$ öX` VH$ hAm& {d. g. 2042 AmMm`lr Vbgr Z JJmna _| Aj` VVr`m Ed A_V _hmËgd H$ àW_ MaU H$m _ZmZ H$s KmfUm H$s& `h g I X gdmX gZV hr gmÜdr gOmUmOr H$m am_ am_ nbH$ CRm& AnZ AmamÜ` H$ gm j mV XeZ nmH$a AmnH$s {Ma A{^b{fV H$m_Zm \$bV hm CRr&

JJmna àdmg H$ g_` EH$ {XZ nÁ` JéXd ñd` gmÜdr gOmUmOr H$m

XeZ XZ gmpÜd`m H$ {R>H$mZ nYmaoo& nYmaV hr AmMm`àda Z _ñH$amV hE फरमाया–'लो, सुजाणांजी! हम स्वयं तुम्हें दर्शन देने के लिए आ गए हैं।' gmpÜd`m Z CÝh ghmam XH$a {~Rm`m& AmMm`lr Z nZ… H$nm ÑpîQ> ~agmV हुए फरमाया–'सुजाणांजी! वहां सेवा करने नहीं आ सकती तो कोई बात नहीं। bm, h_ `hm gdm H$adm XV h¢&'

gmÜdr gOmUmOr JéXd H$ Bg Agr_ dmËgë` H$m nmH$a H$V H$Ë` हो उठी। उन्होंने हर्षोद्रेक में करबद्ध उच्च स्वरों में निवेदन किया–'खमाघणी! YZ KS>r, YZ ^mJ Om AmO åhma AmJU B_aV ar {~a I m hB& gmZ am gaO D$½`m& JéXd! Amn _P ~Tr Z XagU XH$a Ý`mb H$a Xr& ~S>r H$nm H$amB, ^mar _ha~mZr H$amB& åhma OmJ ñ` Amn Z ~S>r IMb (_hZV) hB& _ Amnam CnH$ma OZ_ OZ_ Zht ^b gH$¡&' Xm Mma dmŠ` ~mbZ _| ^r {OÝh WH$mZ H$s AZ^{V hmVr Wr AmO CZ_| _mZm ZB e{º$ H$m gMma hm J`m& Jé XímZ nmH$a CZH$m H$U H$U Ier g P_ CR>m& आचार्यश्री ने प्रसंग को मोड़ते हुए प्रसन्न मुद्रा में पूछा–'क्यों सेवा कैसी हो ahr h¡? _Z _| nar {MÎm g_m{Y Vm h¡?' gmÜdr gOmUmOr Z Am‡m{XV स्वरों में कहा–'गुरुदेव! चारों साध्वियां तन की पछेवड़ी की तरह मेरी खूब gdm H$a ahr h¢& _Z BZ g{V`m g ~hV gdm br h¡& AmnH$ àVmn g I~ चित्त समाधि है।' आचार्यश्री ने फरमाया–यह तो उनका फर्ज है। इन्हें पूरी OmJêHVm g AnZm \$O {Z^mZm hr h¡& VamnW Y_gK _| Xr{jV gmY- gmpÜd`m H$s Agbr H$gmQ>r AÜ``Z Zht, gdm h¡& gmpÜd`m na _Zm`mJ g gdm H$a ahr h, BgH$s _P àgÞVm h¡&'

आचार्यश्री ने साध्वी सुजाणांजी को संबोधित करते हुए पूछा–'सुजाणांजी! A~ WmZ gWmam nM I mdm H$?'

साध्वीश्री ने निवेदन किया–'गुरुदेव! भावना तो है पण अबार नहीं।' गुरुदेव ने चुटकी लेते हुए कहा–'तो, अबारै के चावो हो?' आचार्यवर के इस àíZ H$ gmW hr na n[aga _| _X hmñ` {~I a J`m& gmÜdr gOmUmOr Xm क्षण रुक कर बोले–'अन्नदाता! अंतिम समै में संथारै री भावना तो है पण \$igr H$?'

गुरुदेव ने फरमाया–'भावना है तो जरूर फळसी।'

gmÜdrIr Z BZ dMZm H$s JmR> ~mY br& AmMm`lr Z bJ^J EH$ KÊQ>o VH$ AmnH$m gdm H$adm`r& Bg XmamZ gmÜdr AmZXH$_marOr Ed CZH$s

gh`mJr gmpÜd`m| H$ à{V ^r AmMm`da Z H$B AZJh ^a eãX \$a_m`&
AZeZ JhU

H$N {XZ JJmna {damOH$a JéXd ^rbdmSm nYma JE& gmÜdr gOmUmOr H$ Vn H$m H$_ A{dpÀN>ÝZ Mb ahm Wm& Yra-Yra AÞ H$ à{V Aé{M hm J`r& eara H$s e{º$ EH$X_ jrU hmZ bJr& EH$ {XZ CZH$ _Z _| gWmam H$aZ H$s Vrd CËH$Rm OJr& Á`îR eŠbm nM_r H$ {XZ AmnZ gbl Zm eê$ H$a Xr& VrZ {XZ H$s Vnñ`m H$ ~mX gmÜdr gOmUmOr Z AZeZ H$s CËH$îQ BÀNm àJQ H$s& gmÜdr AmZÝXH$_marOr Z à~b _Zm~b Ed CËH$Q ^mdZm H$m X l Xd, Jé, Y_ H$s gm jr g Jmd H$ à_l lmdH$m| H$s CnpñW{V _| AmnH$m g~h N>h ~OH$a nmM {_ZQ na {d{YdV {V{dhma AZeZ nMl m {X`m& AZeZ nMl V hr gmÜdr gOmUmOr H$s _l_Ðm Bg Vah {lb CRr Og CÝh| AnZr {Ma b{jV _{Ob {_b JB hm&

Amgnmg H$ jÌm| _| gmÜdr gOmUmOr H$ AZeZ H$s l~a {~Obr H$s Vah \$b JB& XeZm[W`m| H$m VmVm gm bJ J`m& {d{^Þ Om[V`m| H$ bmJ gmÜdrlr H$ XeZ H$aZ {RH$mZ AmE& gmÜdr gOmUmOr H$s Mha na PbH$Z dmbr VOpñdVm XeH$ H$m ~mYZ dmbr Wr& OZ Y_ _| ì`m»`m{`V _Ë` H$s Bg AX^V H$bm H$m gm jmV {ZXeZ nmH$a gH$Sm| bmJ à^m{dV hE& VamnW emgZ H$s ^mar à^mdZm hB&

Á`îR eŠbm Zd_r H$ {XZ JJmna {Zdmgr ^dabmbOr {haU Z gWma H$m e^ gdmX bH$a ^rbdmSm _| AmMm`lr H$ XeZ {H$E& JéXd Z फरमाया—'अमृत वर्ष की शुरूआत में यह काम भी शुभ है।' यह सुन श्रावक ~mJ-~mJ hm CR& {H$gr nÊ`mË_m H$ à{V hr Jé H$ _l g Eg eãX {ZH$bV h&

gmÜdr gOmUmOr Z AZeZH$m b _| nU _mZ gmYZm H$s& {hbZm-S>bZm àm`… ~X hm J`m& AmnH$m AZeZ AmJ_ d{UV nmXmnJ_Z gWma H$m Am{eH$ à{V{~å~ Wm& KQm|-KQm| VH$ H$m`mËgJ-_Ðm _| pñWV ahZm Xgam| H$ {bE gM_M EH$ àaH$ KQZm Wr& gmÜdr AmZXH$_marOr Z AmnH$m XgdH$m{bH$ gì H$ MmW AÜ``Z H$ AmYma na _hmdVm| H$m Cƒ maU H$a {dñVma ndH$ AmbmMZm H$admB& ghdVu gmpÜd`m ^r AmnH$m Ah{Ze Mm~rgr, AmamYZm, AmË_{MÝVZ H$s Tmb|, ñVdZ, On Am{X gZmVr ahVr& AmnH$s {MÝVZ Ymam dam½` ag g AmV…àmV hmVr Om ahr Wr& AZeZ H$m b

_ AmnH$m AmMm`Ir, `dmMm`Ir, _hmI_UrOr H$ _Jb gXe Ed AZH$ gmY gmpÜd`m H$s e^H$m_ZmE àmá hB¿&

g_m{Y_aU H$m daU

AZeZ ñdrH$ma H$aZ g nd AmnZ EH$-EH$ gmÜdr H$m {ZH$Q> ~bmH$a nar OmJê$H$Vm H$ gmW kmV AkmV _ hB g_J ^bm H$ {bE eÕ AV…H$aU g H$a~Õ I_VI m_Um {H$`m¿& CgH$ ~mX g^r ImdH$m g AÀNyr Vah I_V-I m_Um {H$`m¿& d nUV… {Z…eë` Ama {Z^ma ~Z JB¿& CZH$s g`_ `mÌm A~ gnÞVm H$s Ama Wr¿& XIV-XIV AZeZ H$ gmV {XZ ~rV JE¿& AmRyd {XZ emar[aH$ pñW{V EH$X_ {~JS> JB¿& eara H$ nXJb {e{Wb nS> JE¿& àmV… à{VH$_U IdU H$aV g_` AMmZH$ gmÜdr gOmUmOr Z AmI CRmH$a XIm Ama gmÜdr AmZXH$_marOr H$s Ama Mma AJ{b`m D$na H$aH$ H$N> gH$V {H$`m¿&

साध्वी आनंदकुमारीजी ने पूछा—'मांजी! क्या आपका बेटी में (मुझमें) H$N> _mh ah J`m h¡? Om Amn _ar Va\$ PmH$ ah h¡&'

gmÜdr gOmUmOr Z JX¥n हिलाकर कहा—नहीं।

साध्वी आनंदकुमारीजी ने कान के निकट जाकर कहा—'आप मेरी तथा ghJm_r g{V`m H$s {~bH$b {MÝVm _V H$aZm¿& {H$gr H$ à{V _mh _V aIZm¿& ^jd emgZ _ JéXd H$ àVmn g h_ g~H$ AmZX _Jb h¡&'

gmÜdr gOmUmOr Z nZ… AJ{b`m D$na H$s¿& gmÜdr AmZXH$_marOr Z पूछा—'आपको चौविहार संथारा पचखाएं क्या?' साध्वीश्री ने स्वीकृति सूचक JXZ {hbmB¿& gmÜdr AmZXH$_marOr Z VËH$mb Mm{dhma AZeZ nMIm {X`m¿& AZeZ H$m àË`m»`mZ H$admV hr gmÜdr gOmUmOr Z XmZm AmI _X br¿& XmZm hmW O_rZ H$m ñne H$aZ bJ¡& eara à{V_m H$s ^m{V ASmb Ed {ZñnÝX hmZ bJm¿& H$m`mËgJ-_Ðm _ d nUV`m AmË_{MÝVZ _ brZ hm JE¿& eaU gÌ H$ Cƒ maU H$ gmW gmam dmVmdaU Üd{Z_` hm J`m¿& AÜ`mË_ H$s I{U`m H$m AmamhU H$aV hE {deÕ n[aUm_m H$ gmW emÝV_Ðm _ nU g_m{YñW hmH$a gmÜdr gOmUmOr Z àmUmËgJ {H$`m¿& ~mdZ df VH$ g`_ H$s {Za{VMma gmYZm H$a AmfmT> H$îUm VrO VXZgma nmM OZ gZ 1985 àmV… gmT> gmV ~O g`mX` H$s nZrV ~bm _ AmnZ g_m{Y_aU H$m daU {H$`m¿& AmR> {XZ VH$ {V{dhma AZeZ VWm Zmd {XZ Xm KQ> H$

Mm{dhma AZeZ _| XrKH$mbrZ g`_ `mÌm gånÞ H$s|& H$N> jU H$ {bE g~ H$N> emÝV-àemÝV Ama {ZñVãY hm J`m|& gmar hbMb l_mer _| ~Xb JB©& àH${V H$m H$U-H$U _mZm| Cg g_m{YñW AmË_m H$m AnZr _mZ lÕmO{b A{nV H$a ahm Wm|& H$N> jU nhb hr {Og VZ H$s gma-g^mb VWm gdm-elfm H$s Om ahr Wr, _aUmnamÝV bJ^J AmYm KÊQm ~mX Cgr eara H$m dm{ga-dm{ga H$hH$a gmÜdr AmZXH$_marOr Z ldH$m| H$m g^bm {X`m|& Cg g_` _m_mga {Zdmgr H$dbMXOr ZmhQm (ggmanjr` ORV) VWm amObXga {Zdmgr lrMXOr SmJm (ggmanjr` ZmUX gmhZbmbOr H$ {ÛVr` nÌ) ^r gn[adma dht CnpñWV W|&

A{V_ `mÌm Ama ñ_{V g^m

`h EH$ g`mJ hr _mZZm Mm{hE {H$ VamnW H$ AîQ>_mMm` _hm_Zm H$mbJUr H$ H$a H$_bm| g AmnZ Xrjm JhU H$s Ama CÝht H$s ñdJmamhU ñWbr JJmna _| AmnH$m ñdJdmg hAm|& Zd_m{YemñVm AmMm`lr Vbgr H$s {VbH$ ^{_ na CZH$s J[a_m_`r emgZm H$ nMmg dfm H$s n[agånÞVm H$ Cnbj _| Am`m{OV A_V _hmËgd df _| d`mdÕm gmÜdr gOmUmOr Z Am_aU AZeZndH$ OrdZ H$s A{V_ gmg br|&

gmÜdr gOmUmOr H$s A{V_ em^m`mÌm _JZ ^dZ g àma^ hB©& em^m`mÌm _| ñWmZr` VamnW g_mO g{hV AÝ` g^r Om{V Ed dJ H$ hOmam| bmJm| Z ^mJ {b`m|& Bg Adga na Amgnmg H$ H$ar~ nMmgm| jÌm| H$ gH$Sm| ^mB ~hZ ^r nhM JE©& amdU _Jar na CZH$m A{V_ gñH$ma {H$`m J`m|&

Xga {XZ gmÜdr gOmUmOr H$ ñdJdmg H$ Cnbj _| Am`m{OV ñ_{V g^m _| gH$Sm| bmJm| Z CÝh| ^mdnU lÕmO{b g_{nV H$s|& gh`mJr gmÜdrdX Z Jr{VH$m, ^mfU Am{X {dYmAm| _| AnZr ^mdZmE àñVV H$s|& gmÜdr ^rlmOr (Zmha) ^r AnZr ghJm_r H$ gmW dht àdm{gV Wr|& CÝhmZ ^r AnZ {dMma ì`º$ {H$E|& AV _| gmÜdr AmZXH$_marOr Z AnZ CXJma व्यक्त करते हुए कहा—'साध्वी सुजाणांजी मेरी संसारपक्षीया मातुश्री थी। इससे ^r A{YH$ d _ar gƒr _mJX{eH$m, OrdZ {Z_mÌr Ed àaUmòmV Wr|& ~mgR> df VH$ _P CZH$m nmdZ gm{ÞÜ` {_bm|& OrdZ H$ ha _mS> na _P CZH$m gh`mJ {_bm|& CÝht H$s àaUm H$ \$bñdê$n AmR> df H$s A~mY d` _| dam½` H$ ~rO AH$[aV hE|& Xg df H$s ~më`mdñWm _| _Z CZH$ gmW g`_

H$ nW na MaUÝ`mg {H$`m& nÁ` H$mbJUr Ed lÕ` AmMm`lr Vbgr H$s H$nm g Xr{jV hmZ H$ ~mX A~ VH$ h_ gmW-gmW ahZ H$m Adga {_bm& AmO EH$ nb _ ^m{VH$ ñVa na _m-~Qr H$m gmW NQ J`m& ñWb ÑpîQ g ^b hr d _Pg {dbJ hm JB h {H$ÝV CZH$ {XE hE gñH$ma gXd _a gmW ahJ& CZH$s CnpñW{V _ _ AnZ AmnH$m Qm~a _mZVr Wr na AmO _mOr H$s AZnpñW{V _ bJVm h _am ~MnZ ^r lm J`m h& Nh XeH$ g ^r A{YH$ bå~ OrdZ _ _Z H$^r CZH$ Mha na CÎmOZm, AmH$bVm Ama ì`JVm H$s रेखा नहीं देखी। न अनुकूलता में हर्ष, न प्रतिकूलता में शोक—यह थी उनकी ghO gmYZm& CÝhmZ {Og OmJêHVm H$ gmW OrdZ Or`m Cgr OmJê$H$Vm H$ gmW _Ë` H$m daU {H$`m& nmn^réVm, {Z_bVm, {ZíNbVm Ama AmË_m{WVm CZH$ _m{bH$ JU W& h_ g~ CZH$ JUm H$m AnZmE, `hr CZH$s gƒm ñ_aU hmJm&' gmÜdr AmZXH$_marOr Z gmÜdr gOmUmOr H$ जीवन की विविध प्रेरक घटनाओं का वर्णन करते हुए यह पद्य भी फरमाया—

~mdZ dfm VH$ gVr eÕ g`_ n`m`&
{VbH$ ^{_ JJmna ({X`m) A{V_ H$be MTm`&&

g_m{Y _aUmnamÝV AmMm`lr Vbgr H$ CXJma

gmÜdr gOmUmOr (_m_mga) H$m AmR {XZm H$ AZeZ _ JJmna _ ñdJdmg hm J`m& AZeZ ñdrH$ma H$aZ g nd CZH$ Vb H$s Vnñ`m Wr& आचार्यप्रवर ने उनके संबंध में फरमाया—'साध्वी सुजाणांजी मोमासर की थी। वे AnZr ggmanjr` nÌr gmÜdr AmZXH$_marOr H$ gmW Xr{jV hB Wr& dfm g CZH$ EH$mÝVa Vn Mb ahm Wm& ~rM ~rM _ Vb, nMmb, ARmB, Xg, ~mah, Ogr bå~r Vnñ`mE ^r H$a bVr Wr& O~ _ JJmna J`m, CÝh XeZ दिए तो उन्होंने कहा—अंतिम अवस्था में मुझे आपके दर्शन हो गए। मैं निहाल hm JB& A~ _a _Z H$s gmar H$m_ZmE nU hm JB h& EH$ hr H$m_Zm A~ ef ahr h gWmam H$aZ H$s& CZH$s `h A{V_ BÀNm ^r nar hB Ama d AZeZndH$ ñdJdmgr hm JB& CZH$ ^mdr AmÜ`mpË_H$ OrdZ H$ à{V e^H$m_Zm& H$bH$Îmm H$ à_I H$m`H$Vm H$dbMXOr ZmhQm Om {H$ gmÜdr gOmUmOr H$ Ý`mVrb W& AZeZ H$ g_` gn[adma JJmna nhM J` W&

9. _Jb gXe

dh {eî` gm^m½`em|br hmVm h {OgH$ à{V Jé H$ _Z g H$nm nU eãX {ZH$bV h¢& gmÜdr gOmUmOr H$m g_` g_` na lÕ` AmMm`àda, `dmMm`àda Ed _hml_Ur gmÜdrà_Iml r HZHà^m H$ AZH$ _Jb gXe àmá hE, AnZ OrdZ _ AZH$ ~ma Jé dMZm_V H$ agmñdmXZ H$m gAdga मिला। कुछ संदेश यहां प्रस्तुत हैं—

AZeZ g nd Vnñ`m H$ jUm _ àXÎm AmMm`àda H$m _Jb gXe

Ah_

gmÜdr gOmUmOr!

Våhmar emar[aH$ pñW{V CÎmamÎma jrU hm ahr h¢& V_ Vnñ`m ^r ~hV H$a ahr hmo& na, A~ VH$ AÞ g Aé{M Zht hB Bgr{bE AZeZ H$s ~mV Zht gPVr& RrH$ h AZeZ gWmam ~S ^m½` g AmVm h¢& CgH$s ^mdZm alZr Mm{hE& g^d h ^mdZm H$aV-H$aV H$^r Am ^r gH$Vm h¢& _mZ{gH$ g_m{Y ah ahr h¢& gmpÜd`m H$s Va\$ g gdm AÀNr hm ahr h, `h {H$VZr AÀNr ~mV h¢& `h h_ma emgZ H$s J[a_m h¢& gm^m½` g hr Egm emgZ h_ {_bm h¢& h_ YÝ` hm JE h¢& A~ AÜ`dgm`m H$s {OVZr CÁÁdbVm A{YH$ ah gH$ dhr CÎm_ h¢& Idm nma h¢& e^ H$ë`mU_ ¢&

5 _B, 1985 AmMm` Vbgr

JJmna (amO.)

AZeZ H$mb _ àmá àaH$ gXe

Ah_

gmÜdr gOmUmOr!

AZeZ H$s gmYZm Mb ahr h¢& Z {hbZm, Z S bZm, Z MbZm, Z ~mbZm& ghO g_m{Y H$m OrdZ Mb ahm h¢& gmÜdr AmZXH$_marOr, gmÜdr {~Xm_mOr, ^rlmOr, dg_VrOr, CÁÁdbalmOr Am{X g^r gmpÜd`m

OmJêHVmndH$ gVV gdmaV ahH$a CZH$s g_m{Y _ `mJXmZ X ahr h¡ dh ^r EH$ _hmZ {ZOam H$m hV h¡ A~ gOmUmOr H$s gmYZm _ H$db g_m{Y_aU H$s àVrjm h¡ gmÜdr ^r ImOr (Zmha) Am{X H$m ^r ghO gh`mJ {_b aham h¡ ImdH$-Im{dH$mE ^r AÀNr gdm HaH bm^mpÝdV hm ah h¡ H$b {_bmH$a JJmna Jmad_` ~Z aham h¡ g~H$ à{V _JbH$m_Zm¡&

2 OZ, 1985 AmMm` Vbgr

_mSb (amO.)

`dmMm` Ir _hmàk H$ nmdZ gXe

Ah_

g^r gmpÜd`m g g I nÀNm¡!

{def à`mJ

Vnpñd Zr gmÜdr gOmUmOr {de{Õ H$ÝÐ (H$ÊR> H$ _Ü` ^mJ) na A.{g.Am.C.gm. H$m On H$a¡& {\$a Zrb aJ H$ gmW On H$a¡& {XZ amV _ Xm KQm `m {OVZm H$a gH$¡&

{d. g. 2039, \$mëJZ H$îUm VVr`m `dmMm` _hmàk CX`na (amO.)

Ah_

gmÜdr gOmUmOr¡!

g_m{YnU OrdZ OrZ H$ {bE An[aJh H$s ^mdZm H$m {dH$mg Oê$ar है। यह भेद विज्ञान के द्वारा हो सकता है। आत्मा और शरीर भिन्न है—इसका {OVZm ñnîQ> ~mY hmVm h CVZm hr _mh QQVm h¡& Bg{bE ~mhar Vn H$ gmW Bg AmV[aH$ Vn H$m ~TmAm Ama g_m{Y H$m {dH${gV H$am¡&

5 Aàb 1985 `dmMm` _hmàk

aJ ^dZ (JJmna)

_hm I _Ur gmÜdrà_ ImOr H$ gXe

Ah_

gmÜdr gOmUmOr _m_mga¡!

"AßnUm gƒ_gÁOm' gmYH$ ñd` ar AmË_m ñ` gË` ar ImO H$a, B AmJ_ dmUr am Amba~Z am I H$a gË` àm{á am CnH$_ H$aVm ahrÁ`m¡&

'आत्मान्यः पुद्गलाश्चान्यः' आत्मा भिन्न है और शरीर भिन्न है—ओ भेद

{dkmZ am gÌ hïg B gÌ Z {XZ amV `mX amIVm h`m emar[aH$ dXZm Z g_^mdm ñ`| ghZ H$a AmË_ñW ~UrÁ`mïg Ü`mZ, ñdmÜ`m`, On Am{X _| hr A{YH$ g_` bJmUm hïg

{d. g. 2039, \$mëJZ H$îUm EH$_ HZHà^m

CX`na (amOñWmZ)

Ah_

gmÜdr gOmUmOr _m_mgaï!

AmnH$m Vnñ`m AnZ ñdmñÏ` H$m XIH$a H$aZr hïg ~OJ gmpÜd`m emgZ H$ à{V IÕmerb hïg CZH$s IÕm d g_nU g g^r H$m ~hV-~hV àaUm {_bVr hïg gmÜdr CÁÁdbaImOr H$m ^r CZg {def àaUm bZr hïg h_mam `hr H$Vì` h {H$ ImdH$ g_mO H$s Y_ OmJaUm _| {Z{_Îm ~ZV ahïg JJmna _{hbm _Sb H$m ZB {Xem XZr AmdÍ`H$ hïg

29 AŠQ~a, 1983, àmV… 9 ~O HZHà^m

~mbmVam (amOñWmZ)

Ah_

gmÜdr gOmUmOr _m_mgaï!

emar[aH$ ÑpîQ g H$m\$s H$_Oma h {\$a ^r CZH$m _Zm~b ~TVm Om ahm hïg Bg df Vm CÝhmZ Vnñ`m H$m hr AnZm OrdZ ~Zm {b`m hïg JJmna g AmZ dmb ImdH$-Im{dH$mAm| g kmV hAm {H$ Vnñ`m _| CZH$ eara H$s pñW{V R rH$ ahVr hïg Bgr ÑpîQ g Amn {ZaÝVa Vnñ`m H$a ahr hïg Vnñ`m H$ gmW Ü`mZ On H$m à`mJ H$aïg g^r gmpÜd`m BZH$s gdm _| OmJêH$ h hrïg A{YH$ OmJêH$Vm aIïg g_m{Y _| gh`mJr ~Zïg ef e^.......ïg

7 AJñV 1984 HZHà^m

OmYna (amOñWmZ)

Ah_

gmÜdr gOmUmOr _m_mgaï!

gmÜdr gOmUmOr Z ~hV hr gmh{gH$ H$m` {H$`m hïg CÝhmZ AnZ OrdZ H$ A{V_ jUm| H$m g\$b ~Zm`m hïg A~ d AnZ ^mdm| H$m CÎmamÎma dY_mZ aIV hE AmË_ g_m{Y H$m AZ^d H$aïg Ama gmW dmbr gmÜdr

AmZÝXH$_narOr Ed AÝ` gmÜdr {~Xm_mOr, gmÜdr ^r lmOr, gmÜdr dg_VrOr, gmÜdr CÁÁdba lmOr Am{X g^r OmJê$H$Vm g CZH$s gdm H$a Ama Y_mamYZm _ gh`mJ H$aï&

30 _B 1985 HZHà^m

^rbdmSm (amOñWmZ)

Ah_

gmÜdr gOmUmOr _m_mgaï!

EH$ _mg nd hr JJmna _ gmÜdr gOmUmOr g {_bH$a Am` hï& Cg g_` ^r CZH$ _Z _ Vnñ`m H$s à~b ^mdZm Wrï& Egm àVrV hmVm h {H$ na_mamÜ` JéXd H$ XeZ H$aZ Ama A_V _hmËgd H$ àW_ MaU H$ e^ gdmX gZZ H$ {bE hr d àVrjm H$a ahr Wrï& CZH$s ^mdZm nar hB Ama CÝhmZ _hmà`mU H$s V`mar H$a brï& A~ Vm d nar Vah g AmË_H$pÝÐV hm MH$s hï& gmÜdr AmZXH$_narOr Ama ^r lmOr Am{X g^r gmpÜd`m Bg _hmZ H$m` _ gh`mJr ~Z ahr hï& jU jU OmJê$H$Vm ~aVr OmE Ed CZH$s AmË_ñWVm Ama g_m{Y H$m ÑpîQ>JV {H$`m OmE, `hr _Jb H$m_Zm hï&

2 OZ 1985 HZHà^m

_mSb (amOñWmZ)

10. {def kmVì` {~ÝX

1. Vn Vm{bH$m

gmÜdr gOmUmOr H$s JhñW OrdZ g hr Vnñ`m H$ à{V {def A{^é{M Wr& g`_ OrdZ H$ ñdrH$aU H$ níMmV dh Ama A{YH$ ~bdVr hm JB& CÝhmZ Vn H$m Om A{^`mZ àma^ {H$`m dh H$_e… g[aVm àdmh H$s तरह बढ़ता चला गया। उनके जीवन की तपस्या के आंकड़े इस प्रकार हैं—

Cndmg	~bm	Vbm	Mmbm	nMmbm	N>	gmV
5866	205	89	31	27	3	3
AmR>	Zm	Xg	½`mah	Vah	MmXh	nÝÐh
3	2	1	2	1	2	1

Vn H$ H$b {XZ 6972, {OZH$ 19 df 4 _{hZ Ama 11 {XZ hmV h&

gmÜdr gOmUmOr {d. g. 2040 AmfmT> H$îUm MVWu g {d. g. २०४२ आषाढ़ तृतीया तक अपने निम्नोक्त तप किया—

Cndmg	~bm	Vbm	Mmbm	nMmbm	N>	gmV	AmR>
181	37	24	17	13	1	2	2
Zm	Xg	½`mah	Vah	MmXh	nÝÐh	AZeZ {XZ	
1	1	1	1	2	1	8	

JJmna _| H$b 24 _{hZm| H$m àdmg {H$`m& {Og_| 558 {XZ Vnñ`m H$ hE& H$_Ma Vn _| Cndmg 125, ~b 42, Vb 23, Mmb 17, nMmb 13 Ama ARmB Xm H$s OmVr h& gmÜdrlr Z Cº$ Vn H$ AVJV àm`… nam AZîRmZ H$a {b`m Wm, H$db nmM ~b Adef ah&

2. g`_ OrdZ H$s {def gmYZm

1. {d. g. 1999 g AmOrdZ ZdH$magr&

2. {d. g. 2007 g AmOrdZ Xm {dJ` dOZï&

3. {d. g. 2017 g {def n[apñW{V`m H$ A{V[aº$ EH$mÝVa Vn&

4. {d. g. 2017 g à{V{XZ Xm àha (EH$ {V{dhma, EH$ Mm{dhma)ï&

5. {d. g. 2017 g à{V{XZ VrZ gm JmWmAm H$m ñdmÜ`m` VWm {d. g. 2031 g à{V{XZ nmM gm JmWmAm H$m ñdmÜ`m`ï&

6. {d. g. 2017 g à[V{XZ Xm KQm _mZï&

7. {d. g. 2031 g à{V{XZ nmM KQm _mZï&

8. {d. g. 2031 g à{V{XZ AmYm KQm Ü`mZï&

9. {d. g. 2031 g 2040 VH$ à{Vdf EH$ bmI Añgr hOma JmWmAm H$m ñdmÜ`m`ï&

10. {d. g. 2031 g 2040 VH$ à{Vdf nfrg bmI ~rg hOma nÚm H$m Onï&

11. {d. g. 2034 g à{V{XZ 17 ZdH$ma _Ì H$s _mbm, 2 AZndu Ama bmJñg H$s EH$ _mbm H$m dOmgZ _ ñ_aUï&

3. JhñW OrdZ _ àË`m»`mZ

1. gmV df H$s d` _ … nmM {V{W H$m amÌr ^mOZ Ama har gãOr (brbmVr) ImZ H$m Ë`mJï&

2. Xg df H$s d` _ … nmM {V{W H$m àW_ àha H$aZm, gd O_rH$X Ama nmZ ~rSm H$m `mdÁOrdZ Ë`mJï&

3. gmbh df H$s d` _ … à{V_h ARmah {XZ CnamÝV A~÷M` gdZ H$m `mdÁOrdZ Ë`mJï&

4. gmbh df H$s d` _ … à{V df `mdÁOrdZ H$ {bE dñÌ H$s मर्यादा इस प्रकार की–

\$VB-5, KmKam-10, AmTZm-25, ãbmCO-15, HMHs-100ï&

5. nfrg df H$s d` _ … gd g{MÎm Ama amÌr^mOZ H$m `mdÁOrdZ àË`m»`mZï&

6. Nã~rg df H$s d` _ … Mmam IX H$m Ë`mJï&

4. H$RñW kmZ

सूत्र–

1. XgdH$m{bH$

WmH$S>—

2. nƒrg ~mb 3. {hV {ejm H$m nƒrg ~mb 4. OmUnUm H$m nƒrg ~mb 5. JUñWmZ D$na H$m gm ~mb 6. nƒrg ~mb H$s MMm 7. gO`m 8. {Z`Rm 9. bK XÊS>H$ 10. ~mdZ ~mb 11. ~mg{R>`m (B¸$sg Ûma) 12. gm ~mb 13. JVmJV (~S>r) 14. JVmJV (N>mQ>r) 15. BH$Vrgm 16. ga`m 17. {^Šl nÀNm 18. AJUmB 19. JUñWmZ Ûma 20. ^mdm am ~mg{R>`m 21. {dah Ûma 22. N> H$m`m H$m WmH$Sm 23. nmZm H$s MMm 24. ha l MXOr ñdm_r H$s MMm 25. Á`m{Vf MH$ 26. Vah Ûma&

^OZ, ñVdZ Ed N>ÝX—

27. Mm~rgr (lr_ÁO`mMm` H$V) 28. AmamYZm (lr_ÁO`mMm` H$V) 29. lmdH$ AmamYZm (lr Jbm~MX b{U`m H$V) 30. gmY dÝXZm (Vah Jr{VH$m) 31. gmY dÝXZm (XrK) 32. gmY dÝXZm (bK) 33. em{VZmW N>ÝX 34. nmagZmW N>ÝX 35. JéJU Jr{VH$m (gH$Sm) 36. Zm nXmaW H$s MmnmB 37. lÕmMma H$s H$B Jr{VH$mE&

ì`m»`mZ—

38. am_ M[aÌ 39. YZOr M[aÌ 40. AmfmT> _{Z M[aÌ 41. AmfmT>^{V M[aÌ 42. ~H$Mb M[aÌ 43. H$sMH$ M[aÌ 44. AJS>XÎm M[aÌ 45. H$B N>Q>H$a ì`m»`mZ&

OmS>—

46. nÞdUm H$s OmS> (àW_ Jr{VH$m) 47. PrUr MaMm H$s Jr{VH$m 48. CÎmamÜ``Z OmS> H$s Xg Jr{VH$m&

11. MmV_mg-XnU$

{d. g. 1990 _ gOmZJT› MmV_mg _ Xrjm AmMm` H$mbJUr H$s gdm _

1. {d. g. 1991 OmYna gmÜdr gOZmOr H$ gmW
2. {d. g. 1992 XmbVJT›
3. {d. g. 1993 H$mb
4. {d. g. 1994 MmUmX
5. {d. g. 1995 bUH$aUga
6. {d. g. 1996 ~Sr nmX
7. {d. g. 1997 QmhmZm
8. {d. g. 1998 AmfmTm
9. {d. g. 1999 XeZmH$
10. {d. g. 2000 JmJXm
11. {d. g. 2001 MmUmX
12. {d. g. 2002 XeZmH$
13. {d. g. 2003 AmgtX
14. {d. g. 2004 ^rbdmSm
15. {d. g. 2005 Zm Im_ÊSr
16. {d. g. 2006 OmOmda
17. {d. g. 2007 ~ama
18. {d. g. 2008 ~rH$mZa
19. {d. g. 2009 AmgrÝX
20. {d. g. 2010 Om~Za
21. {d. g. 2011 JJmna

22. {d. g. 2012 ZmWÛmam
23. {d. g. 2013 ^rbdmSm
24. {d. g. 2014 XeZmH$
25. {d. g. 2015 VmamZJa
26. {d. g. 2016 ~Sr nmX

AmMm`Ir Vbgr H$s g{Þ{Y _ VamnW {ÛeVmãXr H$ Adga na

27. {d. g. 2017 amOZJa

gmÜdr AmZXH$_marOr H$ gmW

28. {d. g. 2018 Am_Q>
29. {d. g. 2019 CÁOZ
30. {d. g. 2020 nQ>bmdX
31. {d. g. 2021 aVZJT>
32. {dîUJT>
33. {d. g. 2023 Ogmb
34. {d. g. 2024 ~mS>_a
35. {d. g. 2025 ~mbmVam
36. {d. g. 2026 ã`mda
37. {d. g. 2027 QmS>JT>
38. {d. g. 2028 bmSZ

(Jé g{Þ{Y _ MmV_mg, gdm H$ýÐ _ MmH$ar)

39. {d. g. 2029 QmhmZm
40. {d. g. 2030 QmhmZm
41. {d. g. 2031 hmgr
42. {d. g. 2032 emXbna
43. {d. g. 2033 MmSdmg
44. {d. g. 2034 ~rXmga
45. {d. g. 2035 ~rXmga
46. {d. g. 2036 gaXmaJT>
47. {d. g. 2037 XdJT>
48. {d. g. 2038 nmbr

49. {d. g. 2039 H$bdm
50. {d. g. 2040 JJmna
51. {d. g. 2041 JJmna

_Ü`àXe, nOm~, h[a`mUm, amOñWmZ Am{X àmÝVm _ bJ^J 26 hOma 468 {H$. _r. H$s `mÌm hB¡& Bg Ad{Y _ AmnZ Xm-Xm MmV_ng AmMm` H$mbJUr Ed AmMm` Ir Vbgr H$s gdm _ VWm 26 MmV_ng gmÜdr gOZmOr (~rH$mZa) H$ gmW Ed 24 MmV_ng gmÜdr gmÜdr AmZXH$_marOr H$ gmW {H$E¡&

12. g{j á OrdZ n[aM`

1. जन्म तिथि–वि. सं. १९६०, माघ कृष्णा नवमी
2. जन्म स्थान–राजलदेसर (राजस्थान)
3. जाति–मूंथा बैद
4. पिता–श्रीमान प्रतापमलजी बैद
5. माता–श्रीमती मौलांदेवी बैद
6. ससुराल–मोमासर
7. पति–श्री खूबचंदजी नाहटा
8. श्वसुर–श्रीमान छोगमलजी नाहटा
9. दीक्षा–वि. सं. १९९० कार्तिक कृष्णा अष्टमी
10. दीक्षा स्थान–सुजानगढ़ में सिंघीजी का मंदिर
11. दीक्षा गुरु–अष्टमाचार्य श्री कालूगणी
12. दीक्षा पर्याय–बावन वर्ष
13. गृहस्थ जीवन–तीस वर्ष
14. कुल उम्र–बयांसी वर्ष
15. गुरुकुलवास–दो वर्ष
16. साध्वी सजनांजी के साथ–छब्बीस वर्ष
17. साध्वी आनंदकुमारीजी के साथ–चौबीस वर्ष
18. यात्रा-प्रवास–पचास वर्ष
19. स्थिरवास–गंगापुर में दो वर्ष। वि. सं. २०४० से आषाढ़ कृष्णा MVWu g {d. g. 2042 AmfmT> H$îUm VrO VH$
20. संलेखना व संथारा–२५ मई १९८५ शनिवार पुष्य नक्षत्र से प्रारंभ। VrZ {XZ H$s gbIZm Ama AmR> {XZ H$m AZeZ, ~mahd {XZ Xm KQ> H$m Mm{dhma AZeZ¡&
21. स्वर्गवास–वि. सं. २०४२ को आषाढ़ कृष्णा तीज, बुधवार प्रातः gdm gmV ~O JJmna _¡&

gKr` E{Vhm{gH$ Am`mOZm _ CnpñW{V H$ Adga

1. वि. सं. २०१८–तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह राजनगर में आचार्यश्री Vbgr H$ gmW MmV_mg H$m gm^m`&
2. वि. सं. २०४२–गंगापुर में अमृत महोत्सव के प्रथम चरण में CnpñW{V&
3. वि. सं. २०३३–छापर में कालू जन्म शताब्दी समारोह में उपस्थिति।
4. वि. सं. २०३५–राजलदेसर में युवाचार्य महाप्रज्ञ मनोनयन समारोह में CnpñW{V&

{OZH$m emgZ H$mb X I m

1. AmMm`Ir SmbMXOr (JhñW OrdZ _)
2. AmMm`Ir H$mbam_Or (_{Z OrdZ _)
3. AmMm`Ir Vbgr (_{Z OrdZ _)
4. `dmMm`Ir _hmàkOr (_{Z OrdZ _)
1. gmÜdrà_I m ORmOr (JhñW OrdZ _)
2. gmÜdrà_I m HmZHdaOr (_{Z OrdZ _)
3. gmÜdrà_I m P_H$Or (_{Z OrdZ _)
4. gmÜdrà_I m bmSmOr (_{Z OrdZ _)
5. gmÜdrà_I m HZHà^mOr (_{Z OrdZ _)